जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

स्थापना वर्षः 32 **वर्ष अंक 3 जुलाई-सितंबर 2018**

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

कानूनी सलाहकार
श्री के.बी. उपाध्याय

सलाहकार मण्डल
श्री डी.पी. दुबे (से.नि.आय.ए.एस.), श्री मनोज अग्निहोत्री
सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित
विनोद जोशी (उज्जैन), डॉ. अरविंद राय, पी.एच.डी. (यू.के.)

प्रकाशन कार्यालयः 15-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा.: 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	–	30 रुपये
वार्षिक	–	100 रुपये
त्रैवार्षिक	–	300 रुपये
आजीवन	–	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन -श्रेष्ठ मानव के दस मुख्य लक्षण	5
4.	मानव जीवन में प्रकृति	6
5.	वृद्धावस्था में भी व्यस्त रहना जरूरी	8
6.	तुलसी के पौधे का जीवन में महत्व	9
7.	जीवन विकास की नई राह	10
8.	बारह भावों के कारक का फलित में महत्त्व	11
9.	द्वादश राशियों के लग्न का फल	12
10.	ताराबल का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व	13
11.	ग्रह नक्षत्र और वर्षा का ज्ञान	14
12.	रसाहार से रोगोपचार	15
13.	जन्म कुण्डली में ग्रह युति का फल	16
14.	रोगों से बचाव के लिए आहार से रोग नियंत्रण	17
15.	विशोंत्तरी महादशा	18
16.	फैशन डिजाइनिंग/ब्यूटीशियन/डेकोरेटर के व्यवसाय हेतु ग्रहयोग एवं कुंडली विवेचन	20
17.	सद्मार्ग पर चलने वालों की शनि रक्षा करते हैं	22
18.	गुरु ग्रह का द्वादश भाव में फलित	23
19.	शुक्र ग्रह का द्वादश भाव में फलित	24
20.	शनि ग्रह का द्वादश भाव में फलित	25
21.	राहु ग्रह का द्वादश भाव में फलित	26
22.	केतु ग्रह का द्वादश भाव में फलित	27
23.	नवग्रह शान्ति	28
24.	वास्तु-सूत्र	30
25.	हस्तरेखा वैभव	31
26.	मूल विवेचन	33
27.	साढ़ेसाती और अढ़ैया- शनि विचार	34
28.	मूल नक्षत्रों के वेदोक्त जपादि मन्त्र	34
29.	त्रैमासिक राशि भविष्यफल	35
30.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
31.	आपके पत्र (प्रतिक्रियाएं)	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादकः डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादकः स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वंदना

श्री पशुपति अष्टकम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्जवलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैव्यघ्रिकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

स्तोत्रम्

पशुपतिं द्युपतिं धरणीपतिं भुजंगलोकपतिं च सतीपतिम्।
प्रणतभक्तजनार्तिहरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।1।।

न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरिबलं कुलम।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं
भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।2।।

मुरजडिण्डिमवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम्।
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।3।।

शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम्।
अभयदं करुणावरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।4।।

नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभध्वजम्।
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।5।।

मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजि फलप्रदम।
प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।6।।

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम्।
जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं
भजत रे मनुराज गिरिजापतिम्।।7।।

हरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम्।
त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।8।।

पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा।
पठति संश्रृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम्।।

चाँदी के पर्वतसमान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषणरूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलङ्कारों से जिनका शरीर उज्जवल है, जिनके हाथों में परशु, मृग, वर और अभय है, जो प्रसन्न है, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों और खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व आदि, जगत् की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयों को हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

अरे मनुष्यों! जो समस्त प्राणियों, स्वर्ग, पृथ्वी और नागलोकके पति है, दक्ष-कन्या सती के स्वामी हैं, शरणागत प्राणियों और भक्तजनोंकी पीड़ा दूर करनेवाले हैं, उन परमपुरुष पार्वती-वल्लभ शंकरजीको भजो।।1।। ऐ मनष्यों! कालके वश में पड़े हुए जीवको पिता, माता, भाई, बेटा, अत्यन्तबल और कुल- इनमेंसे कोई भी नहीं बचा सकता, इसलिए तुम गिरिजापतिको भजो।।2।। रे मनुष्यों! जो मृदङ्ग और डमरू बजाने में निपुण हैं, मधुर पचंम स्वरके गायन में कुशल हैं, प्रमथ और भूतगण जिनकी सेवा में रहते हैं, उन गिरिजापति को भजो।।3।। हे मनुष्यों! शिव! शिव! शिव! कहकर मनुष्य जिनको प्रणाम करते हैं, जो शरणागतोंकी शरण, सुख और अभय देनेवाले हैं, उन दयासागर गिरिजापति का भजन करो।।4।। अरे मनुष्यों! जो नरमुण्डरूपी मणियोंका कुण्डल और साँपोंका हार पहनते हैं, जिनका शरीर चिता की धूलिसे धूसर है, उन वृषभध्वज गिरिजापति को भजो।।5।। अरे मनुष्यों! जिन्होंने दक्ष-यज्ञ का विध्वंस किया था, जिनके मस्तकपर चन्द्रमा सुशोभित है, जो यज्ञ करनेवालों को सदा ही फल देनेवाले हैं और जो प्रलयकी अग्नि में देवता, दानव और मानवों को दग्ध करनेवाले हैं, उन गिरिजापति को भजो।।6।। अरे मनुष्यों! जगत् को जन्म, जरा और मरण के भयसे पीड़ित, सामने उपस्थिति भय से व्याकुल देखकर बहुत दिनों से हृदयमें सञ्चित मदका त्यागकर उन गिरिजापतिको भजो।।7।। अरे मनुष्यों! विष्णु, ब्रह्मा और इन्द्र जिनकी पूजा करते हैं, यम और कुबेर जिनको प्रणाम करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं तथा जो त्रिभुवन के स्वामी हैं, उन गिरिजापति को भजो।।8।। जो मनुष्य पृथ्वीपति सूरि के बनाये हुए इस अद्भुत पशुपति-अष्टक का सदा पाठ और श्रवण करता है, वह शिवपुरी में निवास करता और आनन्दित होता है।

सम्पादक की कलम से...

सम्माननीय पाठक बन्धु,

जीवन वैभव का वर्षा ऋतु अंक 2018, पाठकों को प्रेषित करते हुए हर्ष हो रहा है, जिसमें नियमित स्थाई स्तंभ में भी पहले से अधिक ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रदाय की गई है।

यह अंक ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान वालों के लिए तथा फलित ज्योतिष विशेषज्ञों को अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा क्योंकि इस अंक में ग्रहों के बारह भावों में उपस्थित होने की स्थिति में फल तथा बारह राशियों में से प्रत्येक राशि का जन्म लग्न होने पर व्यक्ति को क्या प्रभाव होता हे, इसकी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है।

जीवन वैभव कि विद्वान लेखकों के सारगर्भित लेखों को इस अंक में सम्मिलित किया गया है, जिसमें जातक की पत्रिका के ग्रहों द्वारा फैशन डिजाईनिंग, ब्यूटीशियन, डेकोरेटर्स का व्यवसाय करने के योग तथा द्वादश भावों के कारक का फलित में महत्त्व संबंधित आलेख विशेष रूप से दिये गए हैं जिससे पाठकों का ज्ञानवर्द्धन हो सकेगा।

स्वास्थ्य संबंधित जानकारी, वृद्धावस्था में ध्यान रखने योग्य बातें तथा मानव जीवन में प्रकृति के वृक्षों, लताओं आदि का संबंध जैसे स्वास्थ्यवर्द्धक आलेख भी इस अंक का मुख्य आकर्षण है।

जीवन वैभव के पाठकों की प्रतिक्रियाएं बहुत अधिक प्राप्त हुई है जिनमें से चुनिंदा प्रतिक्रियाएं दी गई हैं तथा जिन प्रतिक्रियाओं में जीवन वैभव में और अधिक सुधार की आवश्यकता बताई गई है उनके सुझाव संपादक मण्डल को प्रस्तुत किए गए हैं ताकि पाठकों के चाहे अनुसार वांछित सुधार और किया जा सके।

आशा है पाठकों का इसी प्रकार से जीवन वैभव के प्रति-प्रेमभाव बना रहेगा।

!!धन्यवाद!!

सद्भावना सहित, भवदीय
हेमचन्द्र पाण्डेय
(संपादक)
आपका शुभेच्छु

अमृत-घट

1. बुद्धिमान लोग गुरु का ऋण बहुत बड़ा मानते हैं, क्योंकि और ऋण तो आसानी से लौटाये जा सकते हैं लेकिन ज्ञान दान का ऋण सबके लिए लौटाना संभव नहीं है।
- मुनि विद्यानन्द

2. बुद्धि की कुछ न कुछ मात्रा प्राणी मात्र में होती है, पर जब तक उसका विकास न किया जाए तब तक मानवता नहीं प्राप्त होती।
- महात्मा गांधी

3. बात को बढ़ा-चढ़ाकर कभी नहीं करनी चाहिए। जो अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर झूठ-सच मिलाकर कहते हैं, वह अपने आपको दूसरों की निगाह में गिराते हैं और अपने आपको छोटा बनाते हैं।
- पुरुषोत्तमदास टंडन

4. ज्यादा बोलने की आदत अच्छी नहीं होती, इससे आदमी हल्का समझा जाता है, इसलिए बहुत बोलने की बजाय बहुत सुनना कहीं अच्छा है।
- तुलसीदास

5. संसार में वही मनुष्य बड़े बन सके जिन्होंने लोक प्रतिष्ठा की इच्छा न कर जनहित के बड़े से बड़े कार्यों को अपना कर्त्तव्य समझकर किया।
- मदनमोहन मालवीय

6. मैंने आजतक कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जो प्रतिदिन जल्दी उठता हो, मेहनत करता हो और ईमानदारी से रहता हो, फिर भी दुर्भाग्य की शिकायत करता हो।
- एडीसन

7. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई दूसरा पाप नहीं है।
- लोकमान्य तिलक

8. उत्साह अत्यन्त बलवान है। उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।
- महर्षि वाल्मीकि

9. जिस परिश्रम में हमें आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।
- शेक्सपीयर

वैभव दर्शन

श्रेष्ठ मानव के दस मुख्य लक्षण

जीवन वैभव के संस्थापक संपादक स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय द्वारा दिए गए मौखिक व्याख्यान से उद्धृत यह लेख मनुष्य द्वारा धारण करने योग्य श्रेष्ठ 10 गुणों को वर्णित करता है एवं श्रेष्ठ मानव के लक्षणों को दर्शाता है। इस व्याख्यान में सभी धर्मों के सारतत्त्व का ही प्रमुखता से वर्णन है जो हमें बताता है कि ऊपरी तौर पर भले सभी धर्म अलग-अलग दिखाई पड़ते हों पर भीतर से सबका एक ही मन्तव्य है। जीवन में अनेक आडंबरों और विधि-विधानों में उलझने से अच्छा है कि हम कुछ मूल नियमों का कड़ाई से पालन करके अनुशासनपूर्वक जीवन जीते हुए सफलता व श्रेष्ठता को प्राप्त करें। – संपादक

स्व. श्री रामचन्द्रजी पाण्डेय
पूर्व संपादक

एक श्रेष्ठ मानव के रूप में अपने आपको साबित करने के लिए दस लक्षण मुख्य रूप से माने गए हैं जो कि निम्नानुसार हैं–

क्षमा दमोस्तेयं, शौचइन्द्रिय निग्रहः।

विद्या सत्यऽक्रोधो, दशक धर्मं लक्षणम्।।

इन दस मुख्य बातों पर ध्यान देने एवं भक्ति करने वाला धर्मात्मा सुख और कीर्तिमन्त होता है।

(1) **सत्यवचन—** सत्य का पालन निर्भिकता संस्कारवान एवं कीर्तिवान बनाता है। इच्छाशक्ति बलवान होकर, कार्य से संतुष्टि देता है। सत्य ही सभी धर्मों का सार है और सत्य जीवन का भी आधार है। जिसने भी सत्य को धारण किया है वह सदैव जय-विजय को प्राप्त करता ही है यह निश्चित है। इसलिए कहा गया है सत्यमेव जयते।

(2) **क्रोध रहित होना—** जीवन में नम्रता और प्रसन्नता से जो कार्य होते हैं वे क्रोध से नहीं हो सकते अतएव क्रोध रहित होना चाहिए। क्रोध शरीर को अंदर ही अंदर जलाकर कमजोर कर देता है। क्रोध में भले-बुरे का विचार नहीं रहता। क्रोध रहित होने के लिए सभी प्रकार की आसक्तियों को विचारपूर्वक त्यागना चाहिए।

(3) **संयम से जीवन यापन—** अपनी दसों इन्द्रियों को वश में रखते हुए संयमपूर्वक जीवनयापन जैसे कर्णेन्द्रिय से पराये दुःख की बात सुनना। नेत्रैन्द्रिय से संसार की समस्त अच्छाईयों को देखना और ग्रहण करना बुराईयों को देखकर उन्हें दूर करने के लिए यथासंभव प्रयास करना। अपनी इंद्रियों को वश में रखने के लिए बुद्धिबल से मन को सदा नियंत्रित रखते हुए पवित्र ज्ञान एवं भक्ति में लगाना चाहिए जिससे मन पवित्र होकर इन्द्रियों को संयमित रख सकेगा।

(4) **अपने शरीर को शुद्ध रखना और आत्मज्ञान—** अपने शरीर को शुद्ध रखना और शरीर में स्थित आत्मा को ईश्वर का स्वरूप समझते हुए शुद्ध और सात्विक कार्यों की ओर ही प्रवृत्त रहना।

(5) **विद्या अर्जन करना—** विद्वता ही मनुष्य के चरित्र को उत्कृष्ट करती है। कहा गया है ''विद्या ददाति विनयं'' विद्या विनम्रता देती है जो कि चरित्र उत्कर्ष का सबसे सुन्दर आभूषण है। सदैव अध्ययनशील रहना चाहिए। जो मनुष्य जीवनपर्यंत अपने को विद्यार्थी मानकर चलता है वह कभी भी पतन को प्राप्त नहीं होता।

(6) बुद्धि– बुद्धिमान होना चाहिए। क्योंकि बुद्धि द्वारा अपने अच्छे-बुरे कर्मों के बारे में निर्णय लेना अशुभ कर्मों का त्याग करना, सद्कर्म करने की बुद्धि होना चाहिए।

(7) अस्तेय– नीतिपूर्वक कमाए गए द्रव्य से जीवन निर्वाह करना और लोभ से रहित होना। जो भी धन ईश्वरकृपा से प्राप्त हो उसमें ही जीवननिर्वाह करना चाहिए कबीरदास जी ने कहा है-

रूखी सूखी खाय के ठण्डा पानी पीव

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जीव

(8) दम– सांसारिक विषय वासनाओं से हटकर ईश्वर की ओर ध्यान लगाना और सत्कर्मों में लीन रहना।

(9) क्षमा– प्रतिशोध की भावना नहीं रखते हुए क्षमाशील होकर सही मार्ग की तरफ चलने हेतु प्रयत्नशील रहना।

(10) धैर्य– सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि मन में संतोष है तो वह व्यक्ति सदैव वही कार्य करेगा जो कि स्थायी शाति प्रदाय कर सके।

धैर्यधारण करने वाला व्यक्ति व्यर्थ की लालसा और लालची नहीं होता वह संतोषी होता है और सुखी होता है।

इन दस बातों को अपने जीवन में ध्यान रखकर पालन करता है, यह संसार उस व्यक्ति को एक आदर्श रूप में मानने लगता है एवं वह व्यक्ति धन्य होता है।

मानव जीवन में प्रकृति

– डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

इस ब्रह्माण्ड में प्रकृति का विशेष महत्त्व है पेड़-पौधे जंगल के वृक्ष आदि हमें शुद्ध हवा देते हैं तथा शुद्ध हवा के अतिरिक्त उनके उत्पादित फूल हमारे जीवन में रस और सुगन्ध से ऊर्जा और वातावरण की शुद्धता देते हैं इसी कारण हमारे प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों ने वृक्षों को पूजनीय माना है एवं व्रत-पर्वों पर आम, पीपल, आँवला, अशोक, नीम, वट, जामुन, कदम्ब आदि की पूजन की जाती है।

27 नक्षत्र एवं 12 राशियों के पृथक-पृथक वृक्ष और पौधे हैं जिनको जल अर्पित करने पूजन करने से ग्रहों नक्षत्रों के कुप्रभाव को कम करते हुए शुभ प्रभाव में बढ़ोत्तरी करने के उपाय सर्वमान्य हैं। जन्मकुण्डली में ग्रहों के शुभ प्रभाव के बढ़ाने के लिए उन पेड़-पौधों को संबंधित ग्रहों, नक्षत्रों के निर्धारित मंत्रों से जल सिंचित करने से वातावरण की शुद्धि के साथ-साथ धनात्मक ऊर्जा की वृद्धि भी की जाती है। पेड़-पौधो की शाखाएँ फूल एवं फल तथा जड़ों का भी प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है। इसे फलित ज्योतिष में उपाय के रूप में भी किया जाता है।

(1) निर्गुण्डी

प्राकृतिक वनस्पतियों में एक पौधा ऐसा भी है जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक वर्ग अपने खेत की मेड़ पर जानवरों से फसल की सुरक्षा के लिए बोते हैं एवं इसको खेत की चहारदीवारी पर लगाने से फसल की सुरक्षा चौपाये जानवरों से की जाती है। यह वृक्ष निर्गुण्डी कहलाता है जिसे साधारण बोलचाल की भाषा में कृषक वर्ग 'नेगड़' नाम से भी मालवा क्षेत्र में संबोधित करते हैं।

निर्गुण्डी का यह पौधा एक साधारण पौधा है जो कि सर्वत्र उपलब्ध होता है लेकिन इसके असाधारण प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में प्राप्त होते हैं।

व्यापारी वर्ग को लक्ष्मी प्राप्ति में लाभप्रद

सुख-सौभाग्य तथा भौतिक लाभ के लिए इस निर्गुण्डी के पौधे का रवि पुष्य अथवा गुरु पुष्य के दिन पौधे को गमले में बोकर अपने व्यावसायिक संस्थान के परिसर में स्थापित करने तथा पीले रंग के वस्त्र में पीली सरसों को पौधे से स्पर्श करते हुए अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित स्थान पर रखने से व्यापार वृद्धि और व्यापार में स्थाईत्व के साथ लक्ष्मी वृद्धि होती है।

आरोग्य वृद्धि के लिए लाभप्रद

आरोग्य वृद्धि से संबंधित उपायों को अपने चिकित्सक/वैद्य की सहमति से उपयोग करना चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि यह स्वास्थ्य के लिए अहितकर नहीं होकर बलवर्द्धक माना गया है एवं आयुर्वेद में इसका उत्तम महत्त्व है।

(1) निर्गुण्डी का चूर्ण दूध के साथ पीने से शरीर निरोग और बलिष्ठ होता है।

(2) निर्गुण्डी के चूर्ण का नियमित सेवन शरीर को स्फूर्ति शक्ति और ओज तेज देकर आयु वृद्धि करता है।

(3) इसके पौधे की छाल और जीरा का सेवन सभी प्रकार के ज्वर का शमन करता है।

(4) निर्गुण्डी के चूर्ण का सेवन नैत्र-ज्योति की वृद्धि के लिए भी महत्त्वपूर्ण माना गया है।

(2) बहेड़ा

उदर रोगों एवं अन्य रोगों से मुक्ति के लिए बहेड़े के पेड़ की जड़ को शुभ मुहूर्त में लाकर ''ॐ नमः सर्व भूताधिपतवे ग्रस ग्रस शोषय भरवी चाज्ञायति स्वाहा।'' मंत्र का 108 जप कर धूप दीप देकर 21 बार आहुति देकर हवन करने एवं भोजन करते समय अपनी दाहिनी जंघा के नीचे अभिमंत्रित जड़ रखने से आरोग्य लाभ होता है।

(3) गुंजा

गुंजा एक वनलता की फली का बीज है। गुंजा के दाने सफेद एवं लाल तथा इसकी जड़ दोनों ही तांत्रिक साधना में प्रयुक्त होते हैं। रवि पुष्य नक्षत्र के दिन बकरी के दूध में गुंजा की जड़ को पीसकर कुछ समय तक हथेलियों पर रगड़ने से बच्चे की बुद्धि तीव्र होती है तथा उसकी चिंतन शक्ति, याददाश्त प्रखर होती है। गुंजा मूल को गंगाजल में घिसकर तिलक लगाने से सभा, समारोह आदि में विशेष सम्मान प्राप्त होता है।

(4) बांदा

जब एक वृक्ष के ऊपर किसी दूसरी जाति का पेड़ उग जात है, तो उसे बांदा कहते हैं। जैसे आम के पेड़ पर अनार का पौधा उग आना। ऐसी स्थिति में अनार का पौधा बांदा कहलाएगा। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में अनार के बांदे को निमंत्रण देकर विधिवत ले आएं। पूजनोपरांत पूजा स्थल में या भुजा में धारण करें, धन संपत्ति एवं वैभव में बढ़ोत्तरी होगी। इसी अनार के बांदे को ज्येष्ठा नक्षत्रके दिन विधिवत् पूजा करके घर के मुख्य द्वार पर टांगने पर नकारात्मक विचारजन्य प्रयोग तथा बुरी नज़र से घर की सुरक्षा होती है।

(5) नाग केसर

रवि पुष्य या गुरु पुष्य को नागकेसर, चमेली के फूल, कूट, तगर, कुमकुम को पीसकर घी मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से वशीकरण का प्रभाव उत्पन्न होता है। पीले वस्त्र में नागकेसर, पीली हल्दी, एक सिक्का, सुपारी, तांबे का टुकड़ा, चावल शिवजी के सन्मुख रखकर पूजनोपरांत अलमारी में रख दें। धन एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

(6) सहदेई

सहदेई या सहदेवी का पौधा रवि पुष्य नक्षत्र को एक दिन पूर्व विधिवत् निमंत्रण देकर ले आएं। उसे पंचामृत से स्नान कराकर विधिवत् निम्न मंत्र से पूजन करें ''ॐ महालक्ष्म्यै नमः'' मंत्र का 108 पाठ करें तथा श्रीसूक्त स्तोत्र का पाठ करें। ऐसा मंत्राभिषिक्त पौधा धन संपत्तिदायक होता है। पौधे की जड़ को लाल वस्त्र में लपेटकर व्यवसाय स्थल, फैक्ट्री या घर के दरवाजे पर लटकाने से धन का आगमन बढ़ने लगता है। जड़ को गंगाजल में घिस कर मस्तक पर लगाने से मान-सम्मान में वृद्धि होती है तथा बच्चों के गले में इसकी जड़ की ताबीज में पहनाने से नजर दोष दूर होता है।

(7) गूलर

गूलर के पेड़ की जड़ को शुभ मुहूर्त में आमंत्रित कर ले आएं। विधिवत् पूजन पश्चात् ''ॐ ह्री क्लीं चामुण्डाये विच्चे'' की 11 माला जप कर इसी मंत्र की 21 आहुतियां देकर हवन करें तथा जड़ को सिंदूर, कपूर, लौंग, इलायची, एक सिक्का सहित लाल कपड़े में बाँधकर अलमारी में रखें। रुके हुए धन की प्राप्ति सहित एवं व्यापार में वृद्धि होगी।

(8) नागदमन

नागपुष्पी, सर्पदमन नाम से प्रसिद्ध इस वनस्पति की जड़ को रवि पुष्य नक्षत्र को लाकर धूप दीप से पूजा पश्चात् ''ऐं ह्री नमः'' की 11 माला जपकर ताबीज में डालकर धारण करने से ग्रहदोष दूर होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

वृद्धावस्था में भी व्यस्त रहना जरूरी

– डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

प्रायः देखने में आया है कि वृद्धावस्था में, नौकरी-धंधे आदि से सेवानिवृत्ति के बाद अथवा किसान के कृषिकार्य से निवृत्ति के बाद, या अन्य किसी भी कार्य को करने वाला व्यक्ति जब अपने आपको कार्य से मुक्त पाता है तब उसे दिन-रात बस यही कचोटता है कि समय नहीं कट रहा है, क्या करें? और व्यक्ति इसी विचार में डूबा रहता है और अपने को ठाली बैठे रहने से मन को कुंठित बना लेते है तथा अपने शरीर को भी निठल्ला बना लेता है साथ ही खाली समय में बैठकर उसका मन भी कुकल्पनाओं से ग्रस्त होता रहता है। वास्तव में ऐसा व्यक्ति ''खाली दिमाग़ शैतान का घर'' की कहावत को चरितार्थ करता है। वह कभी ताश, चौपड़, शतरंज, इमली के बीज से चंगे-अष्टा आदि तरह-तरह के खेल-खेलता रहता है और कभी वह नशीली वृत्ति वाले मित्रों की खोज करके उनके साथ अपने खाली समय को बिताने या कहें उसे समय को नष्ट करने में लग जाता है। उसे यह ज्ञात नहीं रहता है कि जीवन के अमूल्य क्षणों को काम में कैसे लाया जाय और बजाय इसके कि वह समय का सदुपयोग कैसे करे बस ''समय नहीं कट रहा है'' ऐसी ही विचारधारा से अपने आपको क्रियात्मक सोच से दूर हटा लेता है और अपने ही स्वास्थ्य को बिगाड़ता रहता है।

जब तक व्यक्ति कार्य में व्यस्त रहता है तब तक वह मस्त रहता है और उसके दैनिक कार्य समय पर पूर्ण करते हुए समय पर अपने कार्यस्थल पर पहुँच जाता है। लेकिन नौकरी, व्यवसाय, उद्योग के कार्य से निवृत्ति के बाद वह अपनी नियमितता नहीं रख पाता है ऐसी स्थिति में उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। अपने जीवन में अधिक कार्य के बोझ को कम करने के लिए व्यक्ति वृद्धावस्था में कार्य से विमुख होकर आलस्य में अपने आपको लगा लेता है और जैसे वह कार्य से विहीन होता है वैसे ही उसका स्वास्थ्य कमजोर होने लगता है और उसे बीमारियाँ घेरने लगती हैं, जिस प्रकार बेकार पड़ी मशीनरी में जंग लगने लगती है ठीक उसी प्रकार कामकाज से दूर रहकर व्यक्ति भी अपनी शारीरिक क्षमताओं, हाथ-पाँव, मन-मस्तिष्क से कमजोर होने लगता है, व्यक्ति का अपने जीवन में ''कार्य ही पूजा है'' को ध्यान में रखते हुए अपनी शारीरिक क्षमता के अनुरूप कार्य में संलग्न रहना चाहिए जिससे कि उसे कार्य करते रहने से आनन्द आता रहे और मन में संतुष्टि बनी रहे कि वह कुछ कार्य कर रहा है व्यर्थ नहीं बैठा है। कार्य के करने में व्यस्तता की भावना उसे स्वस्थ बनाती है।

जिस प्रकार हमारे जीवन में भोजन करना, नियमित शयन करना, दैनिक शौचादि से निवृत्त होना आदि आवश्यक है, इनकी कभी छुट्टी नहीं कर सकते। ठीक उसी प्रकार हमें अपने कार्य करने से भी कभी विमुख नहीं होना चाहिए, एक कार्य से थकान आ जाये तो बदलकर दूसरा कार्य आरंभ कर व्यस्त होना चाहिए। जिससे कि समय की व्यस्तता रहती है और मन में प्रसन्नता बनी रहती है, अच्छे साहित्य का पठन-पाठन कार्य भी एक ज्ञानयज्ञ है इसमें भी अपने आप को व्यस्त रखना चाहिए।

कार्य की प्रकृति बदल जाने पर अनावश्यक थकान और कार्य करने की ऊब भी दूर हो जाती है। हमें अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या ही इस प्रकार बनाना चाहिए जिससे कि व्यस्तता बनी रहे, सवेरे उठने के बाद से रात्रि में शयन करने के समय तक कार्य की व्यस्तता रहनी चाहिए, कार्य का चयन करने पर हल्का कार्य और भारी कार्य को इस प्रकार संयोजित करना चाहिए कि कार्य के बदलाव होते रहने से मन में प्रसन्नता और आनन्द भी आता रहे। अपने जीवन में आजीविका चलाने के लिए किए जा रहे कार्य के अतिरिक्त कुछ रचनात्मक कार्य, घर की देखरेख, साफ-सफाई, घर की सजावट, खाद्य पदार्थों का रखरखाव का कार्य इत्यादि भी अपनी गृहिणी के साथ सहयोग के रूप में करना चाहिए। परिवार के सदस्यों के साथ भावी योजनाओं के बारे में चर्चा तथा पारिवारिक सदस्यों को अपने दैनिक जीवन में आ रही कठिनाईयों के निराकरण की भी व्यवस्था करना अपने कार्यदायित्व अन्तर्गत रखना भी पारिवारिक सुख में वृद्धि के साथ-साथ संतुष्टि प्रदायक है।

दैनिक जीवन में निरंतर व्यस्त रहने से अनावश्यक एवं व्यर्थ के विचारों से मुक्ति तो मिलती ही है उसके साथ ही समय को व्यर्थ ही व्यतीत करने वाले फालतु लोगों की कुसंगति से भी छुटकारा मिल जाता है और जीवन में सुविचारों व अच्छे संस्कारों आगमन सतत् ही बना रहता है जिससे वृद्धवस्था में भी व्यक्ति शरीर, मन एवं बुद्धि से स्वस्थ, मनीषी, ओजस्वी एवं सतोगुणी वृत्ति से युक्त होकर सुखी संपन्न रहता है। इसमें संशय नहीं है।

तुलसी के पौधे का जीवन में महत्त्व

संतोष श्रीवास्तव

भारतीय संस्कृति और समाज में तुलसी के पौधे का आध्यात्मिक महत्त्व प्राचीनकाल से चला आ रहा है। तुलसी जहां पूज्यनीय और पवित्र मानी गई है वहीं अपने औषधीय गुणों के कारण भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

तुलसी का पौधा भारतीय सनातन संस्कृति की परंपरा के अनुसार पूजनीय है। हर घर के आँगन में इसे रखे जाने की परंपरा है जिसे प्रतिदिन शुद्ध घी का दीपक लगाने का विधान है।

पावन मनभावन गुणों के कारण तुलसी हमारे देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी सम्माननीय एवं महत्त्वपूर्ण है अंग्रेजी में तुलसी को बेसि कहा जाता है।

भारत में हर भारतीय परिवार के घर तुलसी जी का पौधा लगाया जाता है और उसकी प्रतिदिन पूजन तथा दीपक लगाया जाता है जो तुलसी जी के सम्मान का स्वरूप है। तुलसी पूजन श्री, बुद्धि, समृद्धि तथा यशवर्द्धन का प्रतीक माना जाता है। इसकी घर में पूजन करने से नकारात्मक शक्तियां दूर होती हैं। गृहक्लेश, दरिद्रता भी दूर होती है। भारतीय प्राचीन परंपरा के अनुसार देवोत्थान एकादशी के दिन भगवान शालिग्राम जी से तुलसी विवाह भी किया जाकर पुण्य लाभ प्राप्त किया जाता है।

स्वास्थ्य और आरोग्य की दृष्टि से तुलसी के पत्ते और तुलसी की मंजरी का सेवन लाभप्रद है।

तुलसी अनिद्रा, ज्वर, शूल, वायु, अपच, सिरदर्द, नेत्र विकार आदि को दूर करती है और नेत्र ज्योति को बढ़ाती है। इसके साथ ही साथ दाँतों के दर्द तथा चर्म रोगों में लाभप्रद है।

तुलसी का उपयोग पत्तों को चबाकर अथवा काढा बनाकर किया जा सकता है। चाय में भी इसके पत्तों को डालकर उपयोग में लाना लाभप्रद होता है।

तुलसी एक परिवार के सदस्य के रूप में हर घर के आँगन, खुले मैदान के किचन गार्डन में अथवा मकान छोटा हो या फ्लेट हो तो ऐसी स्थिति में गमले में रखकर पूजनीय मानी जाती है।

तुलसी की पत्तियों में रोग निरोधक क्षमता है। तुलसी दिव्य औषधि के रूप में पौधा है धार्मिक आस्था के साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत उपयोगी है। यह पौधा वायु प्रदूषण को रोकता है एवं शुद्ध प्राणवायु की वृद्धि करता है जिस तरह से पीपल का पेड़ सबसे अधिक ऑक्सीजन छोड़ने के लिए जाना जाता है एवं गौ माता जिस तरह से पर्यावरण की रक्षा में सहायक होती है ठीक वैसे ही तुलसी का पौधा एक छोटे से गमले भी वही कार्य करता है।

प्राणायाम में श्वांस क्रिया का नियमन किया जाता है इसका शुद्ध रूप से अर्थ है कि प्राणों का व्यायाम करना। हमारे धार्मिक परंपरा अन्तर्गत प्राचीन ऋषि-महात्माओं ने आसन शुद्धि के साथ ही प्राणायाम करना बताया है। तुलसी के पौधों के बीच अथवा पास बैठकर प्राणायाम करना अत्यन्त लाभकारी होता है।

नियमित रूप से तुलसी के पौधों के समीप बैठकर मन को नियंत्रित करते हुए प्राणवायु को पकड़ना और छोड़ना वह क्रिया है जिससे हमारे शरीर की प्राणशक्ति बढ़ सके और हम स्वस्थ रह सकें।

हमारी वैदिक सनातन संस्कृति में इसलिए तुलसी, पीपल, गौ, गंगा, एवं गायत्री मंत्र को अत्यंत पावन एवं उपयोगी माना गया है क्योंकि यह हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने वाले हैं इनमें तुलसी जी का स्थान सर्वमान्य सत्य है।

जीवन विकास की नई राह

सबसे दिल से जुड़े..

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

समाज में आज विकृतियाँ अधिक हो रही हैं, भावनाओं का विकास नहीं हो रहा है। अपनत्व कहीं दूर चला गया है, केवल स्वार्थ और धन कमाने की होड़ में व्यक्ति व्यस्त है तथा कई इस प्रकार के कार्यों में संलग्न हो जाता है जो कि समाज के स्वास्थ्य और मानसिकता को ठेस पहुँचाने वाले होते हैं।

हर व्यक्ति बुद्धिमानी अच्छी रखता है लेकिन बुद्धि के विकास के साथ-साथ हृदय को उपेक्षित रख रहा है। व्यक्ति के हर कार्य के सोच में दिमाग ही हावी हो रहा है। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति जो ऐसा कर रहा है वह तनावपूर्ण जीवन जी रहा है और परेशान भी रह रहा है। गहरी नींद भी नहीं हो पाती, रात्रि में भी दिमाग सक्रिय रहता है। इसलिए नींद के लिए भी दवाओं का सहारा लेता है।

भावनाओं में सदबुद्धि लाने के लिए अच्छे साहित्य को पढ़ना और उसे हृदयंगम करना चाहिए यदि हृदय से संपर्क रखना है तो अच्छे विचार, अच्छी भावनाएं रखनी चाहिए और ये सब यदि प्राप्त होगी तो हृदय स्वतः ही शनैः-शनै निर्मल होने लगेगा। हृदय ही भावनाओं के संप्रेषण का स्त्रोत है इसको ईश्वर के निवास का स्थान मान लेंगे तो निश्चय ही हमारे हर कार्य में स्फूर्ति और सफलता का संचार होने लगेगा और हम प्रत्येक के हृदय से जुड़ते जाएंगे। समाज में यदि किसी व्यक्ति की सदाचरण के व्यवहार से आपने पहचान की है, तो यह सच है कि उसका हृदय पवित्र और शुद्ध संकल्प वाला है, और आप उससे दिल से जुड़ते जाएंगे। यदि दोनों व्यक्तियों के बारे में कोंई राय माँगी जाएगी तो अन्य सभी की स्पष्ट राय होगी कि वे दोनों व्यक्ति दिल के साफ हैं। मन से प्रसन्नता उन्हीं व्यक्तियों की छलकेगी।

ईश्वर आराधना करना भी पवित्र हृदय के लिए एक अच्छा उपाय है हम जिस भी धर्म को मानते हों उसके इष्टदेव का मन में ध्यान करें जो कि आपके अन्तःकरण तक पहुँच जाए। किसी प्रकार का कोई राग-द्वेष नहीं हो ऐसे शांतिपूर्ण वातावरण में थोड़ी देर प्रतिदिन प्रार्थना करने से मन में शांति स्फुरित होगी और यही शांति आपकी आँखों में भी दृष्टिगोचर होगी। आपके साथ ईश्वर का मिलाप का इतना अंतर आपको नहीं आपसे मिलने-जुलने वालों को आभासित होगा। लोग आपसे प्रेमपूर्ण बर्ताव करेंगे और विनम्रता से जुड़ेंगे।

सद्व्यवहार और मन की शांति आपके शरीर में एक ऐसा आकर्षण पैदा कर देगी कि आपसे व्यक्ति जुड़ने लगेगा और आपके संपर्क में आने का प्रयास करने लगेगा। जो व्यक्ति अशांत रहता है मन में व्यथा होती है ऐसे में हृदय में पवित्रता नहीं होती तब ऐसे में धीरे-धीरे अन्य व्यक्ति जुड़ने की बजाय पीछे हटने लगते हैं।

शुद्ध विचार उसी के होंगे जो पवित्र हृदय वाला व्यक्ति होगा जीवन पथ की भयंकर घाटियों एवं उतार-चढ़ाव की पगडंडियों में जिस प्रकार व्यक्ति किसी के सहयोग की आकांक्षा करता है तो उसे केवल शुद्ध विचार और पवित्र हृदय वाला व्यक्ति ही जीवन पथ की कठिनाईयों के निराकरण में मददगार हो सकता है ऐसी परिस्थिति में हृदय से जुड़े हुए व्यक्ति को ही खोजता है। हमारे समाज में स्वच्छता और निर्मलमन वालों की अधिकता होने पर परस्पर व्यक्ति दिल से जुड़ने लगता है। उसकी कठिन परिस्थितियों में व्यक्ति अकेलापन महसूस नहीं करता है तथा जीवन की राह सरल महसूस होने लगती है।

शुद्ध विचार, स्वार्थरहित होना तथा किसी भी बात का अहम् नहीं होना ही एक व्यक्ति को पवित्र हृदयवाला व्यक्तित्व बनाता है एवं समाज में अपनी एक अलग पहचान रखता है। ऐसे व्यक्तियों का समुदाय ही एक अच्छे समाज का निर्माण करता है।

शेष पृष्ठ क्रमांक 32 पर देखें...

बारह भावों के कारकों का फलित में महत्त्व

श्रीमती पुष्पा चौहान

ग्रहों के संबंधों को समझने के बाद हमें कुण्डली के भावों को भी समझना होगा तथा भावों व ग्रहों के कारक तत्त्व को भी समझना होगा। हम भावों के कारकत्वों को जानते हैं तथा भाव के स्थिर कारकों को भी जानते हैं। जैसे प्रथम भाव-तनुभाव, द्वितीय-धन व कुटुंब भाव, तृतीय-सहज व पराक्रम भावादि। प्रथम भाव का कारक ग्रह-सूर्य, द्वितीय भाव का-गुरु, तृतीय का-मंगल, चतुर्थ का-चंद्र व शुक्र, पंचम का-गुरु, षष्ठ का-मंगल, सप्तम का-शुक्र, अष्टम का-शनि, नवम का-गुरु, दशम का-बुध व शनि, एकादश का-गुरु, द्वादश का-शनि होते हैं। जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश होते हैं वह आत्मकारक, उससे कम अमात्यकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह मातृकारक, उससे कम अंशों वाला पुत्रकारक, उससे कम अंशों वाला जातिकारक व सबसे कम अंश वाला ग्रह स्त्रीकारक होता है। इस प्रकार सात ग्रहों को सात कारकत्व दिये गये हैं। पाराशर पद्धति में ग्रहों का अधिक महत्त्व है तो जैमिनि पद्धति में राशियों का। परन्तु उत्तर भारत में पाराशर पद्धति व विंशोत्तरी दशा का प्रचलन है तो दक्षिण भारत में जैमिनि पद्धति का भी उतना ही प्रचलन मिलता है।

कुंडली के भावों का फलित में महत्त्व

अब हमें कुण्डली के भावों को समझना होगा। जैसे लग्न भाव केन्द्र व त्रिकोण होने के कारण परम शुभ है। 5वाँ व 9वाँ भाव त्रिकोण होने के कारण शुभ है। 5,9 तथा 2 भाव से धन का विचार करना चाहिये एवं 11वाँ भाव लाभ का होने के कारण धन की ओर से लाभ देता है। भाव 3,6 व 11वाँ अशुभ होते हुए भी धन देते हैं एवं मानसिक व शारीरिक कष्ट देते हैं, क्योंकि ये उपचय भाव भी हैं। व्ययेश व द्वितीयेश जिस ग्रह के साथ स्थित होते हैं, वैसे ही फल देते हैं, या फिर, जिस भाव में इनकी दूसरी राशि पड़ेगी, वैसा ही फल देते हैं। ये स्वतंत्र रूप में अपना फल नहीं देते। इस कारण साहचर्य से फल देते हैं। केन्द्र के स्वामी भी अपना फल स्थगित कर देते हैं। शुभ ग्रह शुभफल नहीं देते, अशुभ ग्रह अशुभ फल नहीं देते। इनकी दूसरी राशि जिस भाव में पड़ती है, वैसा ही फल देते हैं। अष्टमेश भी शुभफल नहीं देता, परन्तु कुछ ज्योतिषियों का मत है कि अष्टमेश हमेशा अशुभ फल देता है। परन्तु महर्षि पाराशर का मत है कि यदि अष्टमेश की दूसरी राशि शुभ भाव में पड़ जाये तो उसके प्रभाव से शुभ फल ही होंगे। सूर्य व चंद्रमा की राशि भाव 8 में पड़ जाये तो इनको अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता। इसी तरह लग्नेश की दूसरी राशि भाव 8 में पड़ जाये तो उसे अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यह केवल मंगल और शुक्र की राशियों में ही होता है। इसलिए अष्टमेश होने का भी दोष नहीं लगता। शुक्र की तुला मूल त्रिकोण राशि है तथा शुक्र को केन्द्राधिपत्य का भी दोष सबसे ज्यादा लगता है। मेष लग्न में मंगल अष्टमेश होने से अधिक अशुभ हो जाता है तथा वृश्चिक लग्न में षष्ठेश होने से उसकी मूल त्रिकोण राशि भाव 6 में ही पड़ती है। इससे मंगल धनकारक तो हो जाता है परन्तु शारीरिक व मानसिक सुख नहीं दे पाता। चोर, अग्नि से भय, शत्रु से संघर्ष बना रहता है। यह जैसा होता है वैसा ही साहचर्य फल देता है। यदि एक ही ग्रह केन्द्र व त्रिकोण का स्वामी होकर केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो, तो योगकारक ग्रह हो जाता है। जैसे कर्क या सिंह लग्न में मंगल केन्द्र व त्रिकोण का स्वामी होता है या शुक्र के लग्नों में शनि व शनि के लग्नों में शुक्र केन्द्र व त्रिकोण का स्वामी होता है। मैं यहाँ पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि यदि केन्द्र का स्वामी अशुभ ग्रह हो तो उसका अशुभ फल स्थगन हो जाता है, वह शुभफलदायक नहीं हो पाता है। यदि वहीं शुभ ग्रहों का केन्द्रेश होने से होता है। शुभफल स्थगन होकर अशुभ नहीं हो जाते हैं। इसी प्रकार राहु-केतु का फल भी समझना चाहिए। राहु-केतु जिन भावेश के साथ स्थित होते हैं, वैसे ही फल देते हैं अर्थात् यदि राहु केन्द्र में हो व त्रिकोणेश के साथ हो या त्रिकोण में हो व केन्द्रेश के साथ हो तो योगकारक हो जाते हैं। केवल शर्त यही है कि अशुभ का प्रभाव नहीं होना चाहिए। राहु-केतु यदि किसी योगकारक ग्रह के साथ केन्द्र या त्रिकोण में हो या अकेले ही केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा अनिष्टकारक ग्रह से युक्त या दृष्टि न हो तो भी योगकारक हो जाते हैं।

द्वादश राशियों के लग्न का फल

संकलन– अरविंद पाण्डेय एवं रविशंकर मिश्रा

जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव को लग्न कहते हैं। यह जन्म लेने वाले जातक के जन्म समय में पूर्वी क्षितिज पर उदय होने वाली राशि ही उस समय का लग्न कही जाती है, वही जातक की जन्म-लग्न होती है। जन्म-लग्न का फल निम्नानुसार होता है-

(1) मेष – 'मेष' लग्न में उत्पन्न जातक प्रतापी, देव-द्विज भक्त, विनम्र, प्रसिद्ध, गुणवान, सन्तोषी, विद्याविनयी, भाग्यवान, बड़े कुटुंब वाला व सुखी होता है। स्वेच्छाचारी, निर्दयी, अधिक शत्रुओं वाला, बन्धु-विनाशक, दुष्टों के बहकावें आ जाने वाला, साथ ही उदार, ऐसा जातक के अपने परिवार में ही कलह होती रहती है। जातक की पत्नी धर्मपरायणा, कामातुरा, भाग्यशालिनी, सुशीला एवं सुन्दर होती है, परन्तु ऐसे जातक के पुत्र आचारहीन, क्रोधी, दुःख देने वाले व क्रूर स्वभावी होते हैं।

(2) वृष – 'वृष' लग्न में पैदा होने वाला जातक स्वधर्म वश, प्रतापी, पाखण्डपूर्वक स्वार्थ-सिद्धि करने वाला, सद्गुणों का ग्राहक, स्नेही, धनी, दयालु, सुखी, सम्मानित, स्त्री-सेवक, गृह तथा कुटुंब का पक्षपाती होता है। विशिष्ठ-वाणी के प्रभाव से अथवा राज्य द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है। जातक की पत्नी कृपण व कला-कुशल तथा जातक की पुत्री पुण्यशीला होती है।

(3) मिथुन – 'मिथुन' लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक देव-गुरु के प्रति श्रद्धालु, मृदुभाषी, किन्तु स्वार्थी, कूटनीतिज्ञ, धन-संचयी तथा सफल मनोरथ वाला होता है। धर्मानुरागी, शास्त्रों का ज्ञाता, विनम्र, प्रसन्न-चित्त, धनी, जातक की पत्नी निष्ठुर-स्वभाव की तथा मन्द-बुद्धि एवं जातक के पुत्र सुशील होते हैं। इसे पशु, राज्यकार्य तथा परदेस से धन-लाभ होता है।

(4) कर्क – 'कर्क' लग्न में उत्पन्न जातक परोपकारी, स्वभाव का, क्षमावान, धर्मात्मा, बुद्धिमान, धनी, देव-अतिथि-गुरु-का सम्मान करने वाला, राजाज्ञा-पालक, शास्त्रज्ञ, विद्वान, प्रसन्नचित्त, तीर्थयात्री एवं अल्पक्रोधी होता है। जातक की पत्नी गुणवती तथा संस्कारों का पालन करने वाली धार्मिक तथा पतिव्रता एवं सन्तान स्वेच्छाचारी होती है। ऐसे जातक को पशु, स्वजन तथा बड़े भाई से धन का लाभ होता है। इसका धन धार्मिक-कृत्यों में व्यय होता है।

(5) सिंह – 'सिंह' लग्न में उत्पन्न जातक की पत्नी गुणवती, स्थिर स्वभाव की तथा आज्ञापालक होती है। शूरवीर, तीक्ष्ण-स्वभाव, देव-अतिथि पूजक, धनी, सुखी, प्रसिद्ध, त्यागी, ज्ञानी, धर्मबुद्धि, स्नेहशील किन्तु अल्प विद्यावान, स्त्रीप्रेमी होता है। ऐसे सन्तानें कुरूप, दुष्ट, मन्दबुद्धि, परन्तु सत्यवादी एवं सुप्रसिद्ध होती हैं। ऐसे जातक को बुद्धि-चातुर्य, राजद्वार, विवाह तथा राजकार्य से धन-लाभ होता है।

(6) कन्या – 'कन्या' लग्न में उत्पन्न जातक, सुन्दर, कान्ति-युक्त, यशस्वी, धनवान, प्रभावशाली, सुखी जीवन बिताने वाले परन्तु पापात्मा, भीरु-हृदय, स्त्री-वियोगी। ऐसे जातक की पत्नी अधार्मिक तथा कलहकारिणी जबकि स्वयं ईश्वर आराधक होता होता है। सन्तानें धन प्राप्ति के लिए प्रयासरत, राजपूज्य तथा सेवावृत्ति वाली होती हैं। ऐसे जातक को कृषि, जल, स्त्री, विद्या तथा साधुजनों के उपकार करने से धन का लाभ होता है परन्तु वह धन व्यर्थ के कार्यों में व्यय होता है।

(7) तुला – 'तुला' लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक राज-पूजित, अच्छे मित्रों वाला, देव-गुरु-भक्त, अतिथि-सेवक, पुण्यात्मा, धनी, प्रसन्न मनवाला, प्रसिद्ध, सुखी, दीनों पर दया करने वाले परन्तु भोगी, कामी, व मित्रों से सहायता पाने वाले होते हैं। ऐसे जातक की पत्नी क्रूर तथा चपल स्वभाव की, शीघ्र आवेश में आने वाली तथा स्वार्थिन होती है। सन्तानें गुणी तथा धनी होती हैं। ऐसे जातक लोक निन्दित कर्म तथा पैतृक निवास से बाहर जाने से धन-लाभ होता है।

(8) वृश्चिक – 'वृश्चिक' लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक सुखी, धनी परन्तु क्रोधी, असत्यवादी, वाक्पटु, कष्ट सहते हुए भाग्योदय करने वाला, पापयुक्त, अनेकों कर्म करने वाला तथा स्त्री से सुख पाने वाला होता है। ऐसे जातक की पत्नी नम्र, रूपवती, पतिव्रता, धार्मिक प्रवृत्ति वाली तथा शान्त स्वभाव की एवं सन्तानें श्रेष्ठ, सुन्दर तथा स्वस्थ होती हैं। इन्हें अधिक मेहनत से तथा प्रबन्धकी व्यवस्था से भी धन-लाभ होता है।

(9) धनु – 'धनु' लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक क्षमाशील, देव-द्विज,भक्त, यशस्वी, सत्यवादी, संगीत-काव्य-प्रेमी, धनी, सुखी

परन्तु विनम्रता एवं दीनता से रहित होते हैं। इनकी पत्नी रूपवान, चरित्रवान तथा विनम्र स्वभाव की गुणवती महिला होती है। ऐसे जातक संतान की ओर दुःखी रहते हैं उन्हें कार्यों में संलग्न करने के लिए अधिक प्रयास करने होते हैं। ऐसे जातक धार्मिक कार्यों में व्यस्त रहकर अपने लक्ष्यभेदी कार्य को करने में सफल होते हैं। यात्राओं के शौकीन तथा अधिक व्यय करने वाले होते हैं।

(10) मकर - 'मकर' लग्न में उत्पन्न जातक ऐश्वर्यवान, धनवान तथा तीव्र-स्वभाव वाला होता है, अपने अनेक प्रकार के व्यवसाय करने वाला होता है। पत्नी गुणवती, सौम्य तथा सौभाग्यशाली होती है। मकर लग्न की महिलाओं को संतान की चिंता अधिक होती है। ऐसे जातक धार्मिक ग्रन्थ का पठन एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहकर धन का लाभ प्राप्त करते हैं पर उसका व्यय व्यर्थ के कार्यों में होता है।

(11) कुम्भ - 'कुम्भ' लग्न में उत्पन्न जातक प्रतिष्ठित, प्रतापी, यशस्वी, परिवार में सबको प्रिय, ब्राह्मण एवं धर्म का पालन करने वाला राजपूज्य होता है, ऐसा जातक चतुर, स्थिर-वृत्ति वाला संगीत-प्रेमी एवं गुणवान होता है। ऐसे जातक को सन्तान होने पर भी सन्तान-सुख कम मिलता है। ऐसे जातक की पत्नी तेज स्वभाव वाली, सुख तथा अपने संचालित व्यवसायिक कार्यों से धन प्राप्त करता है। लेकिन अतिथि सत्कार में अधिक व्यय करता है।

(12) मीन - 'मीन' लग्न में उत्पन्न जातक यशस्वी, सुखी, गुणवान, शूरवीर, विद्वान तथा सुख भोगने वाला होता है। राजकार्य में निपुण होने से राजप्रिय, संयुक्त पविार वाला, अपने कार्य को अधिक विस्तार से करने वाला सजगतापूर्ण स्वभाव का होता है। जातक की पत्नी सुंदर तथा सुशील होती है। संतान भावुक स्वभाव की तथा कला में निपुण होते हैं। जातक जलीय क्षेत्र में निवास का शौकीन, विदेश-भ्रमण तथा शुभकार्यों में धन व्यय करने वाला होता है। अपनी बात बढ़ा-चढ़ाकर बताने वाला होता है। ऐसे जातक को विदेश-वास, जलीय-पदार्थ, राजकीय सेवा आदि से धन-लाभ होता है तथा शुभ-कार्यों एवं देवता-साधु-अतिथियों की सेवादि में व्यय होता है।

तारा बल का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व

– अनिल गोस्वामी

तारा बल याने नक्षत्र बल जातक की कुण्डली में अपना विशेष महत्त्व रखता है। विशोंत्तरीदशा में महर्षि पारासर जी ने महत्त्व दिया है। तारा बल की जानकारी निम्नानुसार है-

ग्रह नौ होते हैं इस कारण 27 नक्षत्रों के नौ भाग करने से प्रत्येक ग्रह के लिए तीन नक्षत्र आते हैं। इस प्रकार नौ ग्रहों के नौ तारा होते हैं जो प्रत्येक की विशोंत्तरीदशा के क्रम से निम्नानुसार दर्शाये जाते हैं-

(1) जन्म (2) संपत (3) विपत (4) क्षेम (5) प्रत्यरी (6) साधक (7) वध (8) मैत्र (9) अति मैत्र।

ताराओं को इसी क्रम से विभाजित किया गया है। जन्म नक्षत्र से ताराओं का क्रम प्रारंभ होता है। जिस नक्षत्र की दशा का जन्म होता है। उस जातक की वह दशा जन्म की तारा होगी।

उदाहरणार्थ— किसी जातक का पुष्य-नक्षत्र का जन्म है तो उसकी शनि महादशा का जन्म होगा। यह जातक की जन्म तारा दशा होगी तत्पश्चात बुध दशा संपत, केतु दशा विपत, शुक्र दशा क्षेम, सूर्य दशा प्रत्यरी तथा चंद्र दशा साधक तारा की दशा होगी। इस प्रकार दशाओं की तारा के अनुसार उनका क्रम और फल निम्नानुसार है।

ताराओं का क्रम एवं उनका फल

नाम के अनुसार ही ताराओं का फल होता है, जो निम्नानुसार है-

(1) जन्म सामान्य फलदायक
(2) संपत संपत्तिदायक, शुभ फल देने वाला।
(3) विपत अर्थात् विपत्ति देने वाला।
(4) क्षेम अर्थात् कल्याणकारी, अच्छा फल देने वाला।
(5) प्रत्यरी अर्थात् विरोधी, कार्यों में व्यवधान डालने वाला।
(6) साधक अर्थात् कार्यों में सिद्धि देने वाला शुभ होता है।
(7) वध विशेष हानिकारक, अशुभ फल देने वाला।
(8) मैत्र अर्थात् मित्र, ठीक-ठाक फल देने वाला।
(9) अतिमैत्र यह भी अच्छा फल देने वाला होता है।

मुख्य रूप से विपत, प्रत्यरी एवं वध यह तीनों ही दशाएं जातक की उन्नति में बाधक होती हैं। ये तीनों दशाओं से संबंधित ग्रह जिस भाव में रहते हैं एवं जिस भाव के स्वामी होते हैं तथा जिस-जिस व्यक्ति या वस्तु के कारक होते हैं उन-उन के लिए कष्टप्रद और हानिकारक होते हैं। चाहे वे ग्रह त्रिकोण के स्वामी भी क्यों न हों। वे अपनी दशा में व्यवधान ही डालते हैं।

ग्रह नक्षत्र और वर्षा का ज्ञान

आशुतोष पाण्डेय

हमारे प्राचीनतम ज्योतिष विज्ञान में ग्रहों नक्षत्रों का प्रकृति के साथ सम्बन्धों को भी ज्ञात करते हुए– सर्दी, गर्मी, बरसात आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। वर्ष के आरंभ के दिवस से वर्ष प्रवेश ज्ञात करते हुए पूरे वर्ष की प्राकृतिक जानकारी का चित्रण कर लिया जाता है।

(1) सूर्य एवं चन्द्र का नक्षत्र भ्रमण योग

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होने से ही बरसात का आकलन किया जाता है। आर्द्रा नक्षत्र से अगले दस नक्षत्र स्त्रीकारक माने गये हैं। विशाखा से 3 नक्षत्रों को नपुंसक माना गया है। मूल नक्षत्र से 14 नक्षत्र पुरुष संज्ञक नक्षत्र हैं।

इस प्रकार उपरोक्त नक्षत्रों में से स्त्री नक्षत्र पर चंद्रमा हो और सूर्य पुरुष नक्षत्र में आता है तो वर्षा के योग बनते हैं। स्त्री नक्षत्र, नपुंसक नक्षत्र में वर्षा थोड़ी ही होती है।

यदि सूर्य और चंद्रमा दोनों स्त्री नक्षत्र में हों तो ऐसी स्थिति में बादल पृथ्वी पर छाये रहते हैं लेकिन बरसात नहीं होती। यदि सूर्य नक्षत्र पुरुष नक्षत्र हो और चन्द्रमा भी पुरुष नक्षत्र हो तब भी वर्षा कम होती है। अर्थात् नहीं के बराबर बरसात होती है।

(2) बरसात के अन्य योग

(1) शुक्र और बुध के उदय या अस्त होने पर भी वर्षा के योग बनते हैं। चन्द्रमा यदि जल राशि में हो तो पक्ष के अन्त तक या संक्रान्ति बदलने तक वर्षा होती है।

(2) यदि बुध और शुक्र एक राशि पर हो तो वर्षा एक सार होती है। दोनों ग्रहों के बीच यदि सूर्य आ जाता है तो समुद्र का जल भी कम होता प्रतीत होने लगता है लेकिन वर्षा नहीं होती।

(3) बुध शुक्र के बीच मंगल हो तो वर्षा होती है।

(4) शनैः श्चर होने पर यहाँ-वहाँ वर्षा होती है अर्थात् फुटकर बरसात होती है।

(5) बुध शुक्र के पीछे गुरु हो तो बरसात अच्छी होती है।

सूर्य के आगे यदि मंगलग्रह हो तो प्रजा में जल की कमी व्याप्त होती है और वर्षा कम होती है। जबकि सूर्यग्रह के पीछे मंगलग्रह हो तो वर्षा की अधिकता होती है।

सूर्य के नक्षत्र और चन्द्रमा के उपरोक्त निर्धारित नक्षत्रों के अनुसार गणना करते हुए वर्षा ऋतु में होने वाली बरसात के दिन की गणना की जा सकती है। लेकिन पर्यावरण की रक्षा करना अधिक वृक्ष लगाना वर्षा के होने में सहायक है। यदि आप जिस क्षेत्र में निवास करते हैं। वहाँ घने वृक्ष ही नहीं है तो उपरोक्त बताये गये योग कमजोर होकर वहाँ वर्षा की कमी रहकर छुटपुट वर्षा हो जाती है। पूर्व समय से ही आम, पीपल, बरगद, पलाश, कदंब, जामुन आदि बड़े वृक्षों को लगाना एवं पूजन करना प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करने के लिए ही सिद्धान्त बनाए गए हैं जिनके प्रयोग से सार्थक लाभ भी प्रतीत होता आया है। इन वृक्षों का ग्रहों नक्षत्रों से भी संबंध होता है जो कि प्रकृति में बरसात, सर्दी और गर्मी का संतुलन ऋतु अनुसार बनाया जाकर मानव-जीवन को सहयोग करते हैं। पानी के नहीं बरसने के समय अक्सर ग्रामीण किसान घरों से बाहर-आकर जंगल में भोजन बनाकर इंद्रदेव की पूजन करने के बाद भोजन ग्रहण करते हैं जिससे बरसात नियमित हो सके। ऐसी प्राचीन परंपरा है।

मन को शांत रखने के 10 सूत्र

- किसी के काम में तब तक दखल न दें, जब तक कि आपसे पूछा न जाए।
- माफ करना और कुछ बातों को भूलना सीखें।
- पहचान पाने की लालसा न रखें।
- जलन की भावना से बचें।
- उतना ही खाएं जितना पचा सकें, अर्थात् उतना ही काम हाथ में लें, जितना पूरा करने की क्षमता हो।
- खुद को माहौल में ढालने की चेष्टा करें।
- जो कभी बदल नहीं सकता, उसे सहना सीखें।
- किसी भी काम को टालें नहीं और ऐसा कोई काम न करें जिससे बाद में आपको पछताना पड़े।
- रोज़ाना ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण, मनन-चिंतन करें।
- रोज़ाना मन को एकाग्र करने का प्रयास करें।

– संकलन (साधना जोशी)

सौ वर्ष जियो अंक से साभार...

रसाहार से रोगोपचार

संकलन– आरती जोशी

आज आहार का विज्ञान काफी आगे बढ़ चुका है। बहुआयामी वैज्ञानिक खोजों से यह सत्य उद्घाटित हो गया है किस रस के आहार से न केवल आवश्यक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं वरन् शरीर की रोगों की प्रतिरोध की क्षमता भी बढ़ जाती है यह सुलभ एवं स्वास्थ्यवर्धक भी है।

रसाहार के लिए उपयुक्त खाद्य सामग्री— रसाहार के लिये फल, सब्जी या अंकुरित अनाज आदि खाद्यों को पूर्णतया ही काम में लें। सड़े, गले, बासी, काफी देर से कटे हुए खाद्य पदार्थ का नहीं, अपितु रोगाणुओं से मुक्त आहार सामग्री का ही रस निकालें, अन्यथा तीव्र संक्रमण हो सकता है।

लेने की विधि— ताज़ा रस ही काम मे लें। निकालकर काफी देर तक रखा हुआ रस न लें। रखे रस में एन्जाइनम सक्रियता, थायमिन, रिबोफ्लेविन, एस्कार्बिक एसिड आदि उपयोगी तत्व नष्ट होने लगते हैं तथा वातावरण के कुछ हानिकारक कीटाणु रस में प्रवेश कर रस को प्रदूषित कर देते हैं। ऐसा रस पीने से तीव्र प्रतिक्रिया होती है। रसाहार बैठकर धीरे-धीरे पियें। रस प्याला या ग्लास में ही लेना चाहिए। ग्लास को मुँह की ओर ऐसे झुकायें कि ऊपरी होंठ रस में डूबा रहे। ऐसा करने से वायु पेट में नहीं जाती।

रस को कैसे तैयार करें— ठोस फल या सब्जियां– ककड़ी, लौकी, गाजर, टमाटर, अनानास, नाशपती, आलू, सेव आदि का रस निकालने के लिए विभिन्न प्रकार की मशीनें आती हैं। संतरा, मौसंबी, चकोतरादि नींबू के फलों का अलग तरह की मशीनें आती हैं। बिजली से चलने वाली मशीनों की अपेक्षा हाथ से चलने वाली मशीनों से निकला रस श्रेष्ठ माना जाता है।

सब्जी को कद्दूकश से कसने के बाद कूटकर भी रस निकाला जाता है। रस निकालने के बाद बचे हुये खुज्झे को फेंके नहीं– इसे बेसन/आटे में मिलाकर रोटी बनाकर काम में लिया जा सकता है। यह खुज्झा पेट की सफाई कर कब्ज को दूर करता है।

रोगोपचार

कब्ज— कब्ज सारे रोगों की जननी है। इसमें सब्जी तथा फलों को मूलरूप में खायें। गाजर, पालक, टमाटर, आंवला, लौकी, ककड़ी 6 घंटे पूर्व भीगा हुआ किशमिश, मुनक्का, अंजीर, गेहूँपौध, करेला, पपीता, संतरा, आलू, नाशपाती, सेव तथा बिंब का रस लें।

अजीर्ण अपचन— भोजन के आधे घंटे पहले आधी चम्मच अदरक का रस, अनानस, ककड़ी, संतरा, गाजर, चुकन्दर का रस सेवन करें।

उल्टी व मिचली— नींबू, अनार, अनानास, टमाटर, संतरा, गाजर, चुकन्दर का रस लाभदायक है।

एसीडिटी— पत्तागोभी + गाजर का रस, ककड़ी, लौकी, सेव, मौसंबी, तरबूज, पेठे का रस, चित्तीदार केला, आलू, पपीते का रस लाभदायक है।

एक्युट एसीडिटी व गैस्ट्राइटिस— ठंडा दूध, गाजर रस से लाभ उठा सकते हैं।

बार-बार दस्त आना— बिंबफल का रस, लौकी, ककड़ी, गाजर का रस– डेढ़ चम्मच ईसबगोल की भूसी, छाछ-ईसबगोल की भूसी, लेकर रोका जा सकता है।

पीलिया— करेला, संतरा, मौसंबी, गन्ना, अनानास, चकोतरा का रस, पपीता, कच्ची हल्दी, शहद, मूली के पत्ते, पालक तथा मूली का रस लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

मधुमेह (शुगर)— जामुन, टमाटर, करेला, बिल्वपत्र, नीम के पत्ते, गाजर-पालक-टमाटर, पत्ता गोभी का रस लाभदायक सिद्ध हुआ है।

पथरी— सेव, मूली व पालक, गाजर, इमली, टमाटर का रस लें। फल एवं सब्जियों के नन्हें बीज न लें।

गुर्दे का रोग— तरबूज, फलसा, करेला, ककड़ी, लौकी, चुकन्दर, टमाटर, ईमली, गाजर, अनानास, अंगुरादि खट्टे फलों का रस फायदेमंद है।

गले का रोग— गर्म पानी, गर्मपानी-एक निंबू-शहद, अनानास, गाजर-चुकन्दर-पालक, अमरूद-प्याज-लहसुन का रस लाभदायक है।

खांसी— गर्म पानी, एक निंबू का रस-शहद, गाजर का रस, लहसुन, अदरक, प्याज, तुलसी का रस मात्र 50 सी.सी. लें।

अनिद्रा— सेव, अमरूद, लौकी, आलू, गाजर-पालक, सलाद के पत्ते, प्याज का रस लेना अच्छा है।

जन्म कुण्डली में ग्रह-युति का फल

– प्रदीप पटैरिया

जन्म-कुण्डली के एक ही भाव में दो अथवा दो से अधिक ग्रहों के एक साथ बैठने को 'युति' कहा जाता है। इस प्रकार से दो अथवा दो से अधिक 'ग्रहों की युति' से जातक के जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका वर्णन 'ग्रह-युति का फल' के अन्तर्गत किया जाता है।

किसी भी जातक के लिये विभिन्न ग्रहों की युति का क्या प्रभाव जातक पर होता है, इसका विभिन्न ग्रन्थों से संकलित करके संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है-

दो ग्रहों की युति का फल

सूर्य-चन्द्र – सूर्य एवं चन्द्रमा की युति जातक के पराक्रम, अहंकार, कार्यकुशलता बढ़ाने वाली युति है पर साथ ही यह युति जातक को विषयाक्ती बनाती है एवं यह युति चतुरता एवं दुष्टता को बढ़ाने वाली युति भी है।

सूर्य-मंगल – सूर्य के साथ मंगल की युति होने पर जातक पाप-बुद्धि, क्रोधी, कलही, मिथ्याभाषी हो जाता है, यह युति जातक बलवाला बनाती एवं बल की मुर्खता को बढ़ाने वाली युति है।

सूर्य-बुध – सूर्य के साथ बुध की युति श्रेष्ठ युति है इससे जातक में विद्वता, यश की वृद्धि होकर जातक स्थिर-धनी, प्रियवादी एवं कलाप्रेमी होता है सूर्य-बुध की युति जातक प्रसिद्ध बनाने वाली युति है।

सूर्य-गुरु – धनवान तथा परंपरावादी ज्ञान का आधुनिकता के साथ उपयोग करते हुए समाज में दिशादर्शक, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, राजमान्य, चतुर, परोपकारी।

सूर्य-शुक्र – बलवान्, बुद्धिमान, स्त्री-प्रिय, स्त्री द्वारा धन पाने वाला तथा अपने वर्तमान से असंतुष्ट रहने वाला।

सूर्य-शनि – विद्वान्, कार्यकुशल, धार्मिक, गुणी, बुद्धिमान तथा अपने पैत्रक स्थान से दूर रहकर आजीविका करने वाला तथा पिता के से वैचारिक मतभेद।

चन्द्र-मंगल – समृद्धशाली, धनी, प्रतापी, शिल्पज्ञ, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जक।

चन्द्र-बुध – सुन्दर, धनी, गुणी, स्त्री-आसक्त, वाक्पटु, दयालु। लेकिन व्यर्थ के लाँछन अथवा मिथ्या आरोप वाला।

चन्द्र-गुरु – परोपकारी, धर्मात्मा, बन्धु-प्रिय, विनम्र, देव-भक्त तथा गजकेशरी राजयोग वाला व्यक्ति होता है।

चन्द्र-शुक्र – व्यसनी, कलही, सुगन्ध-प्रिय, अनेक कार्यों का ज्ञाता तथा आकस्मिक रूप से धनप्राप्त करने का इच्छुक।

चन्द्र-शनि – आचार-विहीन आचरणवाला, अनावश्यक चिंताग्रस्त, पर-स्त्री-प्रेमी, अल्पसंतति। विषयोग वाला अर्थात् कठिनाई से कार्यसिद्धि।

मंगल-बुध – कुरूप, निर्धन, कृपण, विधवा-स्त्रियों का प्रेमी, शरीर से हृष्ट-पुष्ट।

मंगल-गुरु – वाक्पटु, मेधावी, शिल्पज्ञ, शास्त्रज्ञ, उच्चाधिकारी होता है। समाज में सम्मानित कार्य करने वाला होता है।

मंगल-शुक्र – जुआरी, प्रपंची, मिथ्यावादी, शठ, पर-स्त्रीगामी आचरण वाला।

मंगल-शनि – कलही, अल्पधनी, शस्त्र व शास्त्रज्ञ, अपयशी, चोरी की आदत अथवा अनावश्यक आरोप से आरोपित।

बुध-गुरु – सुखी, विनम्र, पण्डित, नीतिज्ञ, धैर्यवान्, गुणी, उदार।

बुध-शुक्र – नीतिज्ञ, प्रियवादी, प्रतापी, चतुर, सुन्दर, संगीतज्ञ।

बुध-शनि – भ्रमणशील, कलह-प्रिय, चंचल, उद्योगहीन, कला-कुशल अथवा वाणी तथा लेखन से संबंधित कार्य करने वाला।

गुरु-शुक्र – धन-पुत्र-मित्र-स्त्री आदि से सुखी, गुणी, विद्वान्, यशस्वी जीवन वाला।

गुरु-शनि – यशस्वी, शूरवीर, धनी, कला-कौशल, स्त्री से लाभान्वित। धार्मिक शास्त्रों, मशीनरी कार्यों से धनलाभ प्राप्त करने वाला।

शुक्र-शनि – उन्मत्त-प्रकृति, दारुण संग्राम करने वाला, शिल्प-कुशल।

इसी प्रकार तीन ग्रह, चार ग्रह और पंचग्रही योग का जन्मकुण्डली में स्थित फल का विवेचन आगामी अंक में निरंतर किया जाएगा।

रोगों से बचाव के लिए आहार से रोग नियंत्रण
(रक्तचाप एवं मधुमेह)

– आरती जोशी
– कीर्ति जोशी

रक्तचाप एवं मधुमेह रोग का आहार से किस प्रकार नियंत्रण किया जा सकता है; उसके लिए कुछ खाद्य पदार्थों का सेवन चमत्कारिक रूप से लाभप्रद माने गए हैं। यदि इन खाद्य पदार्थों के सेवन में ध्यान रखा जाता है तो चमत्कारिक प्रभाव परिलक्षित हो सकते हैं। खाद्य पदार्थ में मुख्य रूप से मेथी, जामुन, बेल के पत्ते, नीम की पत्तियाँ, तुलसी की पत्तियाँ, खीरा, ककड़ी, लौकी, मुंगा की पत्तियाँ आदि का उपयोग काफी लाभप्रद सिद्ध हुई है। इनके उपयोग निम्नानुसार है–

लहसुन का सेवन–

लहसुन का सेवन रक्तचाप एवं मधुमेह रोग में लाभप्रद हैं, इसको प्रतिदिन खाली पेट अथवा भोजन के पहले कम से कम 2 कलियाँ निगलकर पानी पी लें, उसके आधा घण्टे के बाद नाश्ता अथवा भोजन करें इससे मधुमेह आदि रोग होने से बचाव किया जा सकता है।

नीम के पत्ते खाना–

नीम के कोमल पत्तों को कूट अथवा पीसकर अथवा चबाने से मधुमेह रोग का आक्रमण नहीं होता है। स्वस्थ व्यक्ति भी यदि सेवन करे तो रक्त विकार, चर्म विकार नहीं होता तथा मधुमेह नियंत्रित रहता है।

जामुन का सेवन–

जामुन का सेवन मधुमेह का जन्म नहीं होने देता, प्रकृति में इस प्रकार की वृक्षों की उत्पत्ति की है जिन के फलों का सेवन शरीर को निरोग रख सकता है। जामुन का फल वर्षा ऋतु के आगमन एवं ग्रीष्म ऋतु के समापन के समय वृक्ष पर पकता है। फल का सेवन बीमारी को दूर रखता है। बीमारी होने पर जामुन की छाल तथा पत्ते का काढ़ा ब्लडशूगर अर्थात मधुमेह को नियंत्रित करता है।

जामुन की गुठली का पावडर भी नियमित रूप से लेते रहने से मधुमेह को शरीर में प्रवेश नहीं होने देता।

बेल की पत्तियाँ–

बेलफल वृक्ष की पत्तियाँ अच्छी तरह साफ करके 8-10 पत्तियाँ यदि चबाकर खाई जाए तो निःसंदेह यह रक्त शर्करा को शरीर में प्रवेश होने से बचाती है।

करेले का सेवन–

करेला सब्जी के रूप में खाया जाता है। यदि करेला नियमित रूप से अपने आहार में सब्जी के रूप में सेवन किया जाता है तो रक्त शर्करा (मधुमेह) की बीमारी को होने से रोकता है इसका रस निकालकर रस पीना भी रक्त विकार होने से रोकता है।

मेथी का सेवन–

मेथी के बीज जो कि हमारे देश में मैथी दाने के नाम से प्रचलित हैं। इसका चूर्ण करके दो चम्मच पावडर पानी या छाछ के साथ लेने से मधुमेह की बीमारी को उत्पन्न नहीं होने देता। सप्ताह में एक या दो बार मैथी दाने की सब्जी बनाकर खाना भी मधुमेह के अतिरिक्त उदर विकार, वायु विकार आदि रोगों को उत्पन्न नहीं होने देती। इस प्रकार मधुमेह के रोग उत्पन्न होने से पहले इसकी रोकथाम के लिए आहार से रोग का शमन करना चाहिए। रोग उत्पन्न होने के बाद चिकित्सक के परामर्श से आवश्यक औषधियों का सेवन करना तथा समय-समय पर मधुमेह का नियंत्रण आवश्यक है। रोग की बढ़ोत्तरी नहीं हो इसके लिए भी उक्त आहार का उपयोग किया जा सकता है। मधुमेह के नियंत्रण अथवा प्रतिरोधक होने के लिए किन-किन फलों का सेवन करना चाहिए यह निम्नानुसार है–

(1) मधुमेह के रोगियों को खट्टा सेव उपयोगी हैः

विटामिन ए	–	पालक, गाजर, टमाटर का मिश्रित रस लाभप्रद है।
विटामिन सी	–	आंवला, नीबूं, संतरा नियमित खाने से विटामिन सी की कमी दूर होती है।
विटामिन डी	–	विटामिन डी के लिए सूर्य की धूप लेना आवश्यक है।
विटामिन ई	–	अंकुरित गेहूं का दलिया, हाथ से कूटा गया कणीयुक्त चावल एवं गाजर का सेवन।

विशोंत्तरी महादशा

– विनोद जोशी, उज्जैन

महर्षि पाराशर द्वारा विशोंत्तरी दशा को कलियुग में सर्वाधिक प्रामाणिक मानी है। इसे 120 वर्ष की पूर्ण आयु मानते हुए, नौ ग्रहों की दशा को वर्णित किया है। 27 नक्षत्रों के मान से दशाक्रम निम्नानुसार बताया गया है-

नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी ग्रह	दशा के वर्ष
कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	सूर्य	6 वर्ष
रोहिणी, हस्त, श्रवण	चंद्रमा	10 वर्ष
मृगशीर्ष, चित्रा, धनेष्ठा	मंगल	7 वर्ष
आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा	राहु	18 वर्ष
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	गुरु	16 वर्ष
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	शनि	19 वर्ष
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	बुध	17 वर्ष
मघा, मूल, अश्विनी	केतु	7 वर्ष
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	शुक्र	20 वर्ष
योग		120 वर्ष

उल्लेखनीय है कि जिस नक्षत्र में जातक का जन्म हुआ हो उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की जन्म समय में दशा होती है। नक्षत्र की भुक्ति के अनुसार उस ग्रह की दशा गर्भ भुक्त होती है एवं जन्म समय में जो नक्षत्र शेष बचा है उसके मान से उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा भोग्यदशा होती है।

उपरोक्तानुसार प्रत्येक ग्रह की दशा में नौ ग्रहों की अंतर्दशाए होती हैं। विशोंत्तरी महादशा में ग्रहों की अंतर्दशा के संबंध में निम्नानुसार चक्र से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

विंशोत्तरीय महादशा में अन्तर्दशा का कोष्ठक

सूर्य महादशा वर्ष 6 नक्षत्र				चंद्र महादशा वर्ष 10 नक्षत्र				भौम महादशा वर्ष 7 नक्षत्र				राहु महादशा वर्ष 18 नक्षत्र				गुरु महादशा वर्ष 16 नक्षत्र				शनि महादशा वर्ष 19 नक्षत्र				बुध महादशा वर्ष 17 नक्षत्र				केतु महादशा वर्ष 7 नक्षत्र				शुक्र महादशा वर्ष 20 नक्षत्र			
कृतिका, उ.फा., उ.षा.				रोहिणी, हस्त, श्रवण				मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा				आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा				पु. विशाखा, पू.भा.				पु. अनुराधा, उ.भा.				आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती				मघा, मूल, अश्विनी				पू.फा., पू.षा., भरणी			
अन्तर्दशा दिन 18				अन्तर्दशा दिन 30				अन्तर्दशा दिन 21				अन्तर्दशा दिन 54				अन्तर्दशा दिन 48				अन्तर्दशा दिन 57				अन्तर्दशा दिन 51				अन्तर्दशा दिन 21				अन्तर्दशा दिन 60			
ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व	ग्र	दि	मा	व
सू	18	3	0	चं	0	10	0	मं	27	4	0	रा	12	8	2	गु	18	1	2	श	3	0	3	बु	27	4	2	के	27	4	0	शु	0	4	3
चं	0	6	0	मं	0	7	0	रा	18	0	1	गु	24	4	2	श	12	6	2	बु	9	8	2	के	27	11	0	शु	0	2	1	सू	0	0	1
मं	6	4	0	रा	0	6	1	गु	6	11	0	श	6	10	2	बु	6	3	2	के	9	1	1	शु	0	10	2	सू	6	4	0	चं	0	8	1
रा	24	10	0	गु	0	4	1	श	9	1	1	बु	18	6	2	के	6	11	0	शु	0	2	3	सू	6	10	0	चं	0	7	0	मं	0	2	1
गु	18	9	0	श	0	7	1	बु	27	11	0	के	18	0	1	शु	0	8	2	सू	12	11	0	चं	0	5	1	मं	27	4	0	रा	0	0	3
श	12	11	0	बु	0	5	1	के	27	4	0	शु	0	0	3	सू	18	9	0	चं	0	7	1	मं	27	11	0	रा	18	0	1	गु	0	8	2
बु	6	10	0	के	0	7	0	शु	0	2	1	सू	24	10	0	चं	0	4	1	मं	9	1	1	रा	18	6	2	गु	6	11	0	श	0	2	3
के	6	4	0	शु	0	8	1	सू	6	4	0	चं	0	6	1	मं	6	11	0	रा	6	10	2	गु	6	3	2	श	9	1	1	बु	0	10	2
शु	0	0	1	सू	0	6	0	चं	0	7	0	मं	18	0	1	रा	24	4	2	गु	12	6	2	श	9	8	2	बु	27	11	0	के	0	2	1

ग्रहों की महादशा में उनकी अन्तर्दशा का विवरण संबंधित चक्र में दिया गया है। जिसकी गणना करने के लिए जन्म समय के पञ्चांग से उस दिन का नक्षत्र का समाप्ति समय घण्टा मिनिट में देखकर पिछले नक्षत्र की समाप्ति समय से जन्म समय के नक्षत्र की कुल अवधि निकालकर, जन्म समय तक की अवधि के साथ जन्म नक्षत्र की दशा वर्षों से त्रैराशि पद्धति से भुक्त दशा निकाली जाती है।

उदाहरणार्थ– दिनाँक 10 मई 2018 को जातक का जन्म सायंकाल 5 बजे हुआ है तद्नुसार शतभिषा नक्षत्र 10 मई 2018 को 12 बजकर 11 मिनिट तक है, तत्पश्चात् 11 मई 2018 को 13 बजकर 25 मिनिट तक पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र है, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र की कुल अवधि 25 घण्टे 14 मिनिट है तथा 10 मई 2018 को सायं 5 बजे जन्म होने के कारण जन्म समय तक 4 घण्टे 49 मिनिट पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रहा है, अर्थात् गुरु की विशोंत्तरी महादशा के 16 वर्षों में त्रैराशि पद्धति से 4 घण्टे 49 मिनिट ही अवधि गुरु दशा की भुक्त दशा कहलाएगी।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के कुल 25 घण्टा 14 मिनिट है अर्थात् कुल 1514 मिनिट पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र रहा है जिसमें 4 घण्टा 49 मिनिट याने 289 मिनिट जन्म समय के पूर्व पूर्वाभाद्र पद व्यतीत हो चुका था। त्रैराशि पद्धति से गुरुदशा भुक्त निम्नानुसार होगी।

1514 मिनिट कुल पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र

(10.5.2018 को एवं 11.5.2018)

289 भुक्त पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र

$$\frac{289 \times 16}{1514}^{\text{वर्ष गुरुदशा}} = \frac{4624}{1514}$$

1514) 4624 (3 वर्ष
4542
82 × 12

1514) 984 (0 माह
= 984 × 30 दिन
= 29520

1514) 29520 (19 माह
1514
14380
13626
00754

इस प्रकार कुल 3 वर्ष 0 माह 19 दिन भुक्त गुरुदशा रही, शेष गुरु 12 वर्ष 11 माह 11 दिन भोग्य गुरुदशा रहेगी जिसे गुरु की विशोंत्तरीदशा वे चक्र में 3 वर्ष 0 माह 19 दिन को भुक्त दिवस अंतर्दशाओं के लिए की जा सकती है। गुरु में गुरु की अंतर्दशा 2 वर्ष 1 माह 18 दिवस है जो कि भुक्त हो चुकी है शेष 10 माह 7 दिवस की भुक्त गणना गुरुदशा में शनि की अंतर्दशा से अर्थात् 2 वर्ष 6 माह 12 दिवस में से भुक्त दिवस घटाकर 0 वर्ष 11 माह 1 दिन गुरु में शनि भुक्त मानते हुए शेष शनि का अंतर 1 वर्ष 7 माह 11 दिन रही। जिसे जन्म दिनाँक 10.5.2018 में 1 वर्ष 7 माह 11 दिन जोड़ने पर गुरु महादशा में शनि की अंतर्दशा 21.12.2019 तक रहेगी तत्पश्चात् विशोंत्तरी महादशा चक्र में से गुरुदशा की शेष अंतर्दशाओं की गणना की जाना चाहिए।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

अरिष्ठप्रभाव के निराकरण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी–14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755–2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :

फैशन डिजाइनिंग/ब्यूटीशियन/डेकोरेटर के व्यवसाय हेतु ग्रहयोग एवं कुंडली विवेचन

श्री एस.एस. लाल
आय.पी.एस.
(से.नि. डायरेक्टर जनरल पुलिस)

आधुनिक विलासिता एवं वैभवशीलता ही नित-नये फैशन की जननी है। आज का युवा इसमें पूर्णतः सराबोर होकर दिखावा पसंद हो रहा है। फिल्मों की चकाचौंध वाली दुनिया का ग्लैमर जब जनता के बीच में टी.व्ही. जैसे सशक्त माध्यमों के द्वारा प्रचारित होकर आता है, तब उसकी नकल हर नवयुवक, नवयुवतियाँ और यहां तक की प्रौढवर्ग भी करने लगते हैं। फैशन केवल पहनावे तक ही सीमित न रहकर शारीरिक सज्जा व निवास सज्जा में भी परिलक्षित हो रहा है। इसके कारण ही फैशन डिजाइनिंग के विभिन्न कोर्सेस, ब्यूटीपार्लर सेन्टर, इंटीरियर डेकोरेटर जैसे व्यवसाय दिनों-दिन फल-फूलकर समाज में अपना एक विशेष स्थान बना रहे हैं। इन व्यवसाय से जुड़ने के लिए आवश्यक होता है कि उस तरह की कलात्मक अभिरुचि और उसको करने का जुझारुपन हो और साथ ही इस व्यवसाय को करने वाले का भाग्य। इन्हीं सब बातों का ज्योतिषीय योगों द्वारा पता लगाया जाये तो निश्चित ही कुंडली में वे सब ग्रहयोग विद्यमान होते हैं, तभी इस तरफ के व्यवसाय को जातक कर पाता है। अथक ज्योतिषीय शोध उपरांत कुछ ग्रहयोगों को आधुनिक फैशन, ब्यूटी संबंधित, क्राफ्ट, डेकोरेशन आदि के लिए निकाला गया हे, जिन्हें निम्नानुसार देखा जा सकता है–

1. उपरोक्त व्यवसाय को करने व उसमें रुचि रखने वाले के लिए आवश्यक होता है कि उसकी कुंडली में कलात्मक अभिरुचि का कारक ग्रह शुक्र बलवान होकर शुभ स्थिति में हो और उस पर अधिक से अधिक शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तथा पापग्रहों के प्रभावों की न्यूनता हो।
2. यदि जातक की कुंडली में शुक्र का संबंध उसके चेहरे के भाव 2 से हो, तो जातक मुख एवं केश सज्जा में अभिरुचि वाला होता है।
3. शुक्र का संबंध यदि भवन के कारक मंगल अथवा निवास स्थान के भाव 4 के स्वामी से हो, तो व्यक्ति भवन सज्जा में विशेष रुचि लेता है।
4. यदि जातक के शुक्र का संबंध उसके लग्न से व लग्न में बैठे शनि व राहू जैसे ग्रहों से हो तो जातक नित-नूतन वस्त्रों को धारण करन में विशेष अभिरुचि रखता है।
5. यदि जातक के लग्न में शुक्र चतुर्थ में मंगल तथा दशम में शनि हो तो जात इंटीरियर डेकोरेटर जैस व्यवसाय की ओर झुकाव रखता है।
6. यदि जातक के लग्न में भाव 2 का स्वमी शुक्र के साथ स्थित होकर लाभ में बैठे शनि व भाग्य में बैठे राहू जैसे ग्रह से प्रभावित हो तो जातक केश सज्जा में निपुणता हासिल कर इसे अपना व्यवसाय बना सकता है।
7. यदि लग्न में पृथ्वी तत्त्व की राशियों में शनि व मंगल जैसे ग्रह बैठकर शुक्र से प्रभावित हो तथा इनका कर्मेश व लाभेश से बना किसी भी प्रकार का संबंध व्यक्ति को भवन निर्माण एवं भवन सज्जा जैसे कलात्मक अभिरुचि के क्षेत्र में ले जाने को बाध्य करता है।
8. यदि मुख स्थान भाव 2 का स्वामी शुक्र होकर मंगल की राशि में बैठकर भाग्य भाव को प्रभावित करे तथा कर्मेश कर्म भाव को देखे साथ ही लाभेश व लाभ भाव अच्छी स्थिति में हो, तो जातक/जातिका ब्यूटीपार्लर जैसा आधुनिक व्यवसाय अपनाकर अपना जीविकोपार्जन करता है।
9. यदि जातक की लग्न शुक्र प्रधान अर्थात् तुला अथवा वृषभ की हो तथा मन कारक चंद्रमा कर्मेश होकर शुक्र से संबंध बनाये, जो जातक/जातिका फैशन डिजाइनिंग के क्षेत्र में बुटीक चलाकर समाज में यश प्राप्त कर सकते हैं।
10. यदि जातक की लग्न पर शनि और मंगल का प्रभाव हो तथा

कर्मेश कर्म भाव में होकर बलशाली हो व मन कारक चंद्रमा पर मंगल अथवा शनि का प्रभाव होने के साथ-साथ शुक्र जैसा कारक ग्रह लाभ स्थान में होकर जातक को इंटीरियर डेकोरेटर का व्यवसाय कराकर लाभ प्रदान करने में समर्थ होता है।

11. यदि जातक के बुद्धि स्थान पंचम में लग्नेश शुक्र के साथ होकर मुदित अवस्था में हो, साथ ही उस पर गुरु एवं चंद्र जैसे शुभग्रहों का प्रभाव हो तथा कर्मभाव सुदृढ़ अवस्था में हो, तो जातक फैशन डिजाइनिंग जैसे वैभवपूर्ण व्यवसाय को अपनाकर विलास प्रिय होता है।

इसके अतिरिक्त भी जातकों की कुंडलियों में अनगिनत विभिन्न योग पाये जा सकते हैं, जिनका यहां समावेश करना संभव नहीं है। उचित समझा गया है कि कसौटी पर खरे उतरी कुछ कुंडलियों द्वारा विश्लेषित योगों को आगे प्रस्तुत किया जाये, जिससे पाठकगण उन्हें देखकर अपने बच्चों के शिक्षा एवं व्यवसाय हेतु उचित दिशा निर्देशन दे सकें–

जन्म कुण्डली 19 अगस्त 1964 11:00:00

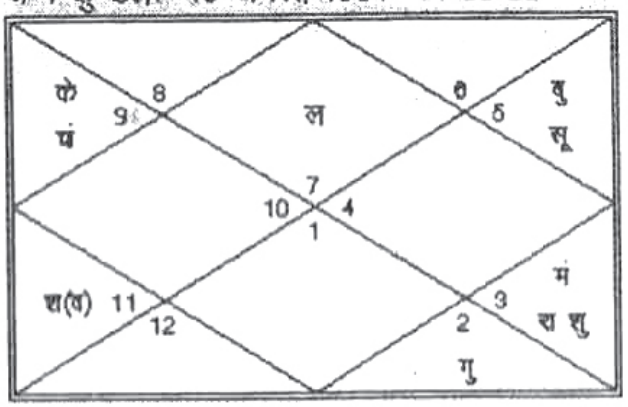

नवांश (जीवनसाथी)

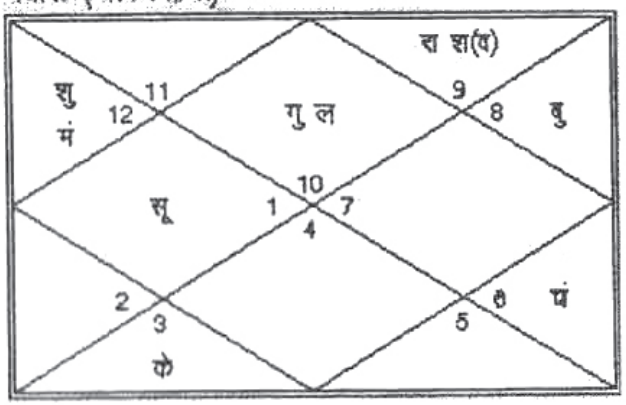

उक्त कुं.1 में सौन्दर्य कारक लग्नेश शुक्र और कर्मेश चंद्र की परस्पर दृष्टि इस व्यवसाय हेतु महत्त्वपूर्ण है। लाभेश सूर्य भाग्येश बुध के साथ लाभ भाव में स्वराशि के स्थित होकर जनता एवं सुख भाव के स्वामी शनि से परस्पर दृष्टि संबंध रखे हुए है। मुख सौन्दर्य भाव का स्वामी धनेश मंगल कारक शुक्र व प्रेरक राहू के साथ भाग्य स्थान में युतिकर मन कारक चंद्रमा पर अपनी दृष्टि द्वारा बहुआयामी प्रभाव छोड़ रहे हैं। अष्टम स्थान में बैठकर गुरु धन भाव पर अपनी मित्र दृष्टि डालकर धन संचय की ओर जातक को प्रवृत्त कर रहे हैं। नवांश चक्र में भी यही उच्च नवांश का सौन्दर्य कारक शुक्र मुखमंडल के स्वामी मंगल के साथ कुंडली के कर्मेश चंद्र को अपनी दृष्टि द्वारा प्रभावित कर ब्यूटीपार्लर व्यवसाय में पारंगत करके धनार्जन करा रहे हैं।

जन्म कुण्डली 17 दिसम्बर 1961 01:07:00

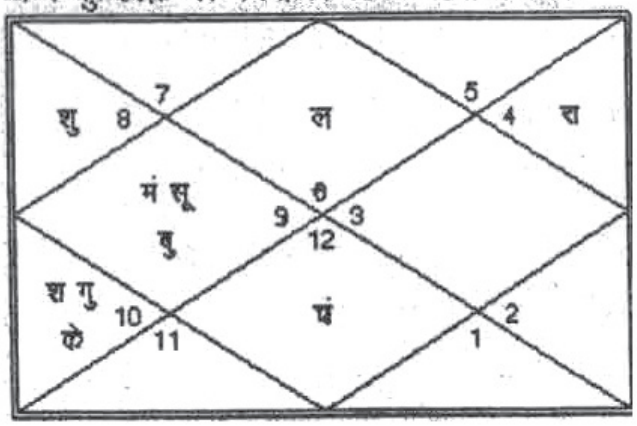

नवांश (जीवनसाथी)

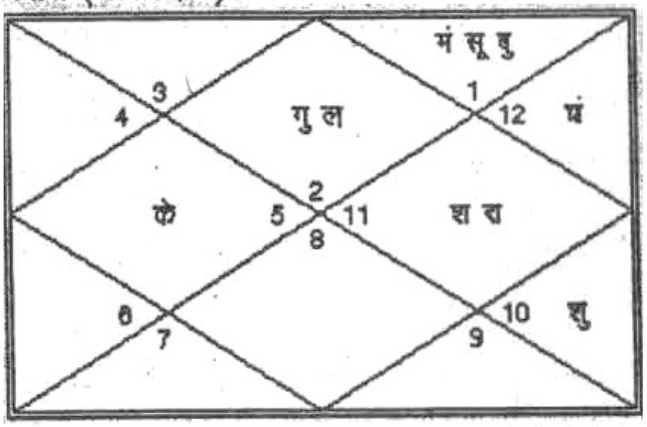

उक्त कुं. 2 एक फैशन एवं सौन्दर्य प्रसाधन के व्यवसाय करने वाली जातिका की है। कुंडली में सौन्दर्य कारक एवं मुखमण्डल भाव का स्वामी धनेश शुक्र पराक्रम में बैठकर प्रेरक राहू की दृष्टि से

प्रभावित है और अपनी ही राशि के भाग्यभाव को दृष्टि द्वारा बल प्रदान कर रहा है। साथ ही लग्नेश व कर्मेश बुध नैसर्गिक व्यवसाय कारक होकर कर्मभाव को अपनी दृष्टि दे रहा है। यहीं मंगल शुक्र अधिष्ठित राशि का स्वामी होकर कर्मक्षेत्र में सौन्दर्य का समावेश करने में पूर्ण सहायक है। पंचमेश शनि सौम्यग्रह गुरु के आभामंडल से तेज प्राप्त कर लाभ भाव पर सहयोगात्मक दृष्टि डाल लाभान्वित कर रहा है। चतुर्थ भाव में गुरु की राशि धनु में बना बुधादित्य योग जातिका के अन्दर सौन्दर्य की विशेष परख दे रहा है। नवांश चक्र में लाभेश एवं मन कारक चंद्रमा वर्गोत्तम होकर लाभ नवांश में है। यश कारक सूर्य उच्च नवांश के व्यवसाय कारक लग्नेश बुध के साथ होने आदि से ही बने सभी तरह के ग्रह योगों के कारण जातिका फैशन एवं ब्यूटी पार्लर जैसे व्यवसाय से धनार्जन कर रही हैं।

जन्म कुण्डली 5 जून 1967 14:06:00

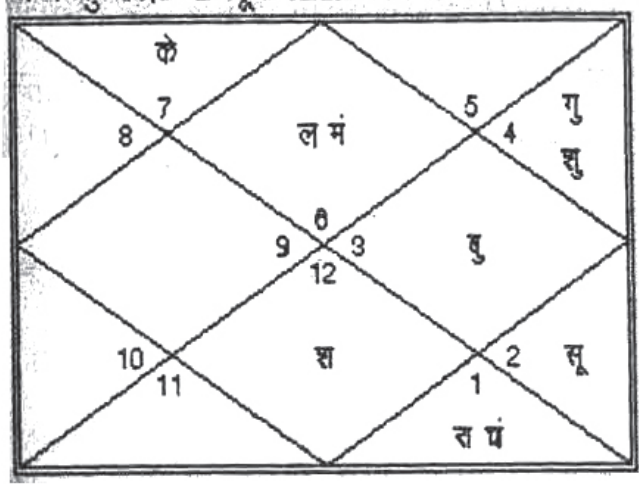

नवांश (जीवनसाथी)

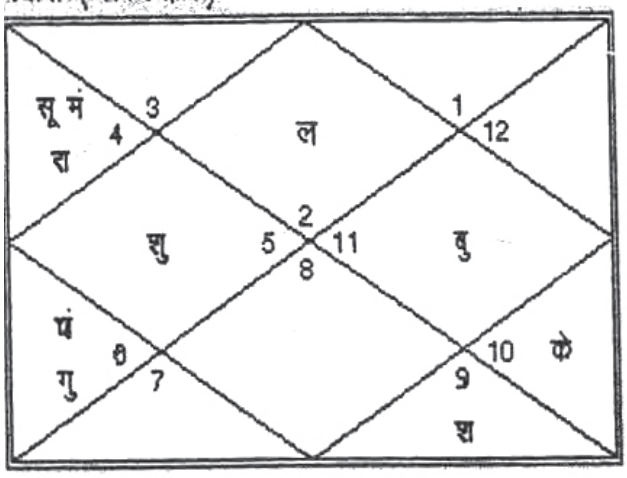

उक्त कुं. 3 एक ऐसी जातिका की है जो क्राफ्ट्स एवं इंटीरियर डेकोरेटर आदि में दक्ष व अन्य क्लॉस चलाकर व्यवसाय कर रही है। कुंडली में देखें कि कर्मेश व लग्नेश बुध स्वयं कर्म भाव में स्वगृही है। कलात्मक अभिरुचि कारक शुक्र भाग्येश व धनेश होकर लाभ भाव में सौम्यग्रह गुरु के साथ युति कर बैठा है और पराक्रमेश उत्साहकारक मंगल लग्न में सृजनकर्ता पंचमेश शनि से दृष्टि संबंध कर दोनों बली हैं। उधन मन कारक लाभेश चंद्र युक्ति कारक राहू के साथ बैठकर धनभाव को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है और स्वयं मंगल की दृष्टि से प्रभावित है नवांश चक्र में शुक्र एवं बुध की परस्पर पूर्ण दृष्टि एवं शनि और मंगल की दृष्टि बुध पर होने से जातिका को क्राफ्ट कला एवं इंटीरियर डेकोरेशन में रुचि पैदा होकर व्यवसाय के रूप में लाभ अर्जन कर रही है।

सद्मार्ग पर चलने वालों की शनि रक्षा करते हैं..

शनिग्रह अन्याय को रोकने तथा न्याय को स्थापित करने के देवता हैं। इसीलिए अन्यायी तथा समाज के लिए अहितकर कार्य करने वालों को दण्डित करते हैं लेकिन सन्मार्ग पर चलकर समाज में जीवनयापन करने वालों को अशुभ शनि होने पर अथवा शनि की साढ़ेसाती या शनि की अढ़ैया में भी कोई परेशानी नहीं होती।

शनि व्यक्ति के कर्मों के अनुसार ही फल देते हैं सत्कर्म करने वाले व्यक्ति को शनि से कदापि भयभीत नहीं होना चाहिए।

शनि का जन्म ज्येष्ठ मास की अमावस्या को हुआ है। सूर्य तथा प्रजापति दक्ष की कन्या संज्ञा के छाया पुत्र के रूप में शनि का जन्म हुआ था। इसी दिन शनि जयन्ती के रूप में मनाई जाती है।

शनि की प्रसन्नता के लिए गरीबों को अन्न, वस्त्र तथा पाँव के पहनने वाले पादुकाएं (जूते इत्यादि) भी दान करना चाहिए।

शनि वायुतत्व एवं पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम दिशा का स्वामी है। शरीर में शनि का निवास हड्डियों और त्वचा में होता है इसी कारण शनि की प्रसन्नता के लिए शनिवार को हड्डियों एवं त्वचा के विकार को दूर करने के लिए तेल लगाने से लाभ होता है।

गुरु का द्वादश भाव में फलित

– अमित यादव

प्रथम भाव

प्रथम भाव में गुरु होने पर जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सुन्दर, दयालु, उदारस्वभाव का, ज्ञानी एवं विद्वान तथा सतोगुणी स्वभाव वाला होता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिभावान तथा उच्चश्रेणी की तर्क शक्तिवाला होता है। शरीर से स्वस्थ लेकिन दाँत की खराबी रहती है।

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव में गुरु उपस्थित होने पर जातक मधुरवाणी बोलने वाला, व्यवहार कुशल, अच्छा वक्ता एवं उपदेशक, परिवार सुख से सुखी, सुन्दर पत्नीवाला, परोपकारी तथा वरिष्ठ लोगों एवं राजपक्ष का कृपापात्र होता है, ऐसा जातक ज्योतिषी तथा काव्यप्रेमी होता है।

तृतीय भाव

तृतीय भाव में बृहस्पति होने से जातक की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा, साहित्य प्रेमी, अच्छा लेखक, स्त्री का प्रिय, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से कार्यों में सफलता और विजय पाने वाला, अधिक भ्रमण वाला लेकिन अल्पधनी होने से कृपण स्वभाव का होता है।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में गुरु होने से जातक अपने परिवार से सुखी तथा माता-पिता का अनन्यभक्त होता है। अनेक प्रकार की भूमि और कृषि कार्य से लाभ पाने वाला पुण्य कार्यों में रत रहने वाला तथा सर्वत्र सम्मान व प्रसिद्धि पाने वाला होता है।

पंचम भाव

पंचम भाव में बृहस्पति होने से जातक नीतिवान, गुणवान, बुद्धिमान तथा न्यायसंगत जीवन व्यतीत करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति पठनपाठन एवं लेखन करने वाला भी होता है। महिला की कुण्डली में पंचम भाव में गुरु होने से उसका बड़ी आयुवाला पति होता है।

षष्ठम भाव

छठवें भाव में बृहस्पति हो तो ऐसा जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। उस पर किसी रोग का प्रभाव नहीं होता। जीवन शांतिपूर्ण और सुखमय रहता है। स्थाई रूप से कार्य करने वाला तथा आर्थिक रूप से संतुष्ट रहता है।

सप्तम भाव

सप्तम भाव में बृहस्पति होने पर जातक अच्छे वरिष्ठ लोगों से संबंध रखते हुए सात्विक, धर्मात्मा तथा अपनी उत्तम आय से जीविकोपार्जन करने वाला समाज में लोकप्रिय व्यक्ति होता है। ऐसे जातक की पत्नी गुणवान, रूपवान तथा सुशील स्वभाव की होती है।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में गुरु की स्थिति होने पर जातक उदर विकार से युक्त लेकिन गुढ़ विद्या का ज्ञाता होता है किसी भी विषय पर गहराई से विचार कर कर्म करने वाला अधिक भ्रमण तथा धार्मिक रुचिवाला व्यक्ति होता है। ऐसे जातक को संतान की चिंताएं अधिक रहती हैं।

नवम भाव

नवम भाव में बृहस्पति होने पर जातक धर्मवान, परंपरावादी, यशस्वी, परोपकारी, भाग्यशाली, दार्शनिक विचारधारा वाला होता है। ऐसे जातक ईश्वरभक्त, ज्योतिषी, लेखक, व्यापारी, अपने क्षेत्र से बाहर अथवा विदेश प्रवास से सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

दशम भाव

दशम भाव में गुरु स्थित होने पर जातक, माता-पिता का भक्त, समाज में प्रतिष्ठित, राज-सम्मान पाने वाला, सदाचारी स्वभाव तथा अच्छे मित्रों वाला तथा सदाचार से धन अर्जित करने वाला होता है।

एकादश भाव

एकादश भाव में गुरु स्थित होने पर जातक प्रतिभावान, प्रभावशाली व्यक्तित्त्व वाला, विद्वान, पराक्रमी, सामाजिक कार्यक्रमों में रुचि रखने वाला, अपने उद्देश्यपूर्ण कार्यों एवं निर्धारित दायित्व को पूरा करने वाला होता है।

द्वादश भाव

द्वादश भाव में बृहस्पति स्थित होने पर जातक शुभ कार्यों में अथवा उद्देश्यपूर्ण व्यय करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के शत्रु उत्पन्न नहीं होते। जीवन में अध्यात्मवादी विचारधारा के होते हैं तथा अपने जीवन में सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत करने का ध्येय वाले होते हैं।

शुक्र ग्रह का द्वादश भाव में फलित

– अनिल गोस्वामी

शुक्र ग्रह जो कि दांपत्य सुख का कारक है, ऐश्वर्य एवं सौन्दर्य की वृद्धि देने वाला है, वैभव संपन्नता एवं ऐशोआराम की वृत्ति वाला है। शुक्र ग्रह का मेष आदि द्वादश भावों में फलित निम्नानुसार है-

प्रथम भाव

शुक्र ग्रह प्रथम भाव अर्थात् लग्न में स्थित हो तो ऐसा जातक सुन्दर, बुद्धिमान, सुखी, कलात्मक कार्यों का शौकीन, आकर्षक, महत्त्वाकांक्षी, नाटक, काव्य, संगीत का शौकीन, कोमल स्वभाव वाला, महिलाओं द्वारा प्रशंसित होने वाला, विलासी एवं कामकला में निपुण व्यक्ति होता है।

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव में शुक्र होने पर सुन्दर नेत्रोंवाला, मधुरभाषी, कलाकार, कवि, लेखक, अच्छावक्ता, विद्वान तथा कलात्मक स्वभाववाला होता है। ऐसा जातक श्रृंगार प्रिय होता है तथा धन संग्रह करने वाला एवं पारिवारिक सुख से सुखी होता है।

तृतीय भाव

तीसरे भाव अर्थात् सहज भाव में शुक्र हो तो ऐसा जातक कंजूस प्रवृत्ति का होता है। पत्नी से असंतुष्ट कलात्मक शौक के अंतर्गत चित्रकला का शौकीन, अधिक बहनों वाला, घूमने-फिरने वाला यात्रा का शौकीन व्यक्ति होता है।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में शुक्र होने पर माता से तथा जमीन-जायदाद व कृषिकार्य से धन प्राप्त करने वाला, भवन, वाहन एवं मित्रों के सुखवाला, अपने निवास को अधिक आकर्षक तथा सजावट करने की रुचिवाला, भोगी, विलासी, साहित्यकार, सुखी एवं शांत स्वभाववाला होता है।

पंचम भाव

पंचम भाव में शुक्र वाला व्यक्ति नीतिज्ञ, विद्वान, लेखक, संगीत और कविता का प्रेमी उदार स्वभाववाला, शीघ्र धन कमाने की भावना रखने वाला, अधिक कन्या वाला, पापग्रहों से युत या दृष्ट होने पर जातक वैवाहिक जीवन अथवा महिला वर्ग से कष्ट पाता है।

षष्ठम भाव

छठवें भाव में शुक्र के स्थित होने पर जातक शरीर से निर्बल एवं शत्रु रहित होता है। सेवाभावी स्वभाव, लेकिन दुराचारी, गुप्तरोगी एवं संकीर्ण विचारवाला होता है। ऐसे जातक को विवाह के पश्चात् स्थायित्व तथा स्वास्थ्य लाभ होता है।

सप्तम भाव

सप्तम भाव में शुक्र होने पर जातक सौन्दर्यप्रेमी विवाह के बाद भाग्योदय वाला, कलात्मक एवं साहित्यप्रेमी होता है। पत्नी अच्छे स्वभाव की होने पर भी सामान्य मतभेद, विचारों में असमानता वाला होता है। उच्चस्तर का रहन-सहन वाला, कामी और विलासी होता है।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में शुक्र होने से जातक शांतिपूर्ण स्वभाववाला, कामी, विवाह के पश्चात् धन लाभ प्राप्त करने वाला, गुप्त कार्यों में व्यस्त रहने वाला एवं किसी भी कार्य को गहराई तक सोचने वाला लेकिन वैवाहिक जीवन में तनाव तथा असंतोष वाला, शुक्र के पापग्रह से दृष्ट या युत होने पर गुप्त रोग से पीड़ित होता है।

नवम भाव

नवम भाव में शुक्र होने पर जातक धर्म भाव वाला, उदार तपस्वी, राज्य द्वारा सम्मानित, लंबी यात्रा करने वाला, कला एवं साहित्य का प्रेमी होता है, ऐसा जातक पत्नी के द्वारा धन एवं मानसिक संतोष प्राप्त करने वाला होता है।

दशम भाव

दशम भाव में शुक्र होने पर जातक सम्मानित और समृद्ध मित्रों वाला तथा विद्वान होता है। ऐसा जातक माता-पिता एवं राजकीय व्यक्तियों से सम्मान एवं सुख प्राप्त करने वाला, साथ ही ऐसा जातक महिला वर्ग में लोकप्रिय होता तथा अपने कार्य-व्यवहार, सामाजिक, आर्थिक स्थिति से संतुष्ट व्यक्ति होता है।

एकादश भाव

एकादश भाव में शुक्र होने पर जातक मित्रों और संबंधियों से सुख एवं लाभ प्राप्त करने वाला, बुद्धिमान, उदार, सुशील और सुन्दर संतान वाला, अपने ज्ञान एवं कला से प्रसिद्धी पाने वाला कलाप्रेमी व कलात्मक स्वभाव वाला व्यक्ति होता है।

द्वादश भाव

द्वादश भाव में शुक्र होने पर जातक का स्वभाव खर्चीला, ऐश्वर्य एवं विलासितापूर्ण कार्यों का अधिक शौकीन, भ्रमण, मनोरंजन तथा कलात्मक कार्यों में अधिक खर्च करने वाला होता है, पापग्रह अथवा क्रूर ग्रह के साथ युति या दृष्टि होने पर जातक अनैतिक कार्यों में रत रहता है तथा महिला वर्ग के साथ भ्रमण में खर्च करने वाला होता है।

शनि ग्रह का द्वादश भाव में फलित

– विद्याभूषण सिंह

प्रथम भाव

प्रथम भाव में शनि होने पर जातक, एकांतप्रेमी, बाल्यकाल में पीड़ित लेकिन उत्तरोत्तर निर्बल होने पर भी शक्तिमान, अभिमानी स्वभाव का, कामी तथा रुग्ण पत्नी वाला होता है। मकर, कुंभ, तुला राशि तथा गुरु की राशि में शनि होने पर जातक परिश्रमी, धनवान, सम्मान प्राप्त व्यक्तित्व वाला, गंभीर स्वभाव का, नेतृत्व क्षमता वाला राजनीतिज्ञ भी होता है।

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव में शनि होने पर जातक, धनवान, कटुभाषी, मितव्ययी, पारिवारिक चिंताओं से ग्रस्त, मित्रों से संशय की स्थिति, समाज में मैत्रीपूर्ण व्यवहार में कमी, कार्यों में अधिक प्रयत्न से सफलता, समय पर लाभ नहीं उठा पाने के कारण व्यापार-व्यवसाय में अस्थिरता पारिवारिक सदस्यों से वैचारिक मतभिन्नता।

तृतीय भाव

तीसरे भाव में शनि उपस्थित होने पर जातक पराक्रमी, विचारवान, साहसी, बुद्धिमानी से कार्य करने से विजय और सफलता प्राप्त करने वाला, परोपकार करने वाला, अपने भाई-बहनों के साथ मनोमालिन्य, अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में संतान की अधिक चिंताएं। पूर्वार्द्ध एवं बाल्यावस्था में कार्यों में सफलता और सुखी। पारिवारिक जीवन सामान्य।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में शनि होने के कारण जातक कठोर हृदयवाला, गृहस्थ जीवन से असंतोषी, भ्रमण करने वाला, संकीर्ण मनोवृत्ति वाला, शीघ्र क्रोध करने वाला, अधिक मित्रों वाला लेकिन विश्वास कम करने वाला, माता-पिता के विचारों से असमानता रखने वाला। हठी स्वभाव का जातक होता है।

पंचम भाव

पंचम भाव में शनि होने पर जातक आत्मविश्वासी, लेकिन अस्थाई विचारों वाला, शनि के शुभ ग्रहों/नक्षत्रों में होने पर संतान पक्ष से सुखी अन्यथा तनावग्रस्त रहने वाला, अधिक धनलाभ हेतु प्रयासरत, पत्नी के विचारों से मतभिन्नता, कार्यमात्र में व्यवधान वाला होता है।

षष्ठम भाव

छठवें भाव में शनि होने पर जातक हठपूर्वक कार्य करने वाला, साहसी, रोग एवं शत्रुपक्ष पर विजय पाने वाला, स्वतंत्र विचारों वाला, उद्यमी तथा जबरदस्ती अपनी बात को मनवाने वाला जिद्दी होता है। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु अधिक होते हैं।

सप्तम भाव

सप्तम भाव में शनि होने पर जातक निर्जनवासी या एकान्तवासी, पत्नी सुख होने पर भी पत्नी से मतभेद, उग्रस्वभावी, मित्रों/साझेदारों से वाद-विवाद तथा नुकसान, विरक्त स्वभाव का, महिलाओं के कारण मन में संताप तथा चिंताग्रस्त।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में शनि होने पर जातक श्वास या वात के विकारवाला पर दीर्घायु, अधिक मेहनती, आर्थिक संकटों से ग्रस्त, कर्ज वाला, विवाह के बाद कठिनाईयाँ, कार्य में व्यवधान, राजकीय कार्यों में विवाद व निर्धनता अधिक रहती है।

नवम भाव

शनि नवम भाव में होने पर जातक तकनीकी ज्ञान अथवा किसी मशीनरी अथवा गुप्त ज्ञान में संलग्न रहने वाला, हठपूर्वक कार्य को करने वाला, अभिमानी और वाचाल होता है, ऐसे व्यक्ति साहसी होकर कठोरता से कार्य के निष्पादन में लगे रहते हैं। धार्मिक आचरण, अधिक भ्रमणशील व बन्धु-बान्धवों से दूरस्थ।

दशम भाव

शनि दशम भाव में होने पर जातक उद्यमी, बलवान, धनवान और राजमान्य होता है, लेखन, प्रकाशन से जुड़ा होता है। अपने कार्य में सफलता तथा साहित्य एवं ज्योतिष की रुचि रखने वाला होता है। जीवन में उत्तरार्द्ध में प्रगति और यश कमाने वाला होता है।

एकादश भाव

शनि एकादश भाव में होने पर जातक धनी और समृद्ध तथा यशकीर्तिवाला, उद्योगवान, संपत्ति और समृद्धि, तेज स्वभाववाला, ख्याति एवं प्रसिद्धि, व्यापार-व्यवसाय सफलता। मानसिक चिंताग्रस्त तथा संतान पक्ष से दुःखी होता है।

द्वादश भाव

शनि द्वादश भाव में होने पर जातक भ्रमणशील, अधिक शत्रुओं से घिरा हुआ, शरीर से दुर्बल, क्रोध करने वाला, गुप्त विद्या का ज्ञाता, संयुक्त परिवार से पृथक अथवा वैचारिक मतभेद वाला, राजकीय कार्यों में व्यवधान वाला होता है।

राहु का द्वादश भाव में फलित

– प्रदीप पटैरिया

प्रथम भाव

राहु प्रथम भाव में होने पर जातक शक्तिमान, साहसी, कम बोलने वाला, सिर अथवा चेहरे पर चिह्न वाला, रहस्यमय स्वभाववाला, धनवान, विरोध होने पर शत्रुहंता, छोटे कार्य दायित्व से बड़े कार्य (पद) तक तरक्की करने वाला होता है।

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव में राहु होने पर जातक को आर्थिक कठिनाईयाँ, वाणी से स्पष्टवक्ता नहीं होना, प्रवास अधिक, क्रोधी स्वभाव, संतान एवं पत्नी सुख में कमी। चोरी अथवा साझेदारी के व्यापार से धन हानि।

तृतीय भाव

तीसरा भाव पराक्रम का है, इसमें राहु स्थित होने पर जातक साहसी और पराक्रमी होता है, मान-सम्मान और प्रतिष्ठा अच्छी रहती है। भाई-बंधुओं से वैचारिक मतभेद, कलात्मक स्वभाव अपने कार्यों के लिए यात्राएं अधिक होती है।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में राहु होने पर जातक दुःखी, माता के लिए अरिष्ठ कारक, मित्रों से मनमुटाव, अधिक परिश्रमी, विद्याध्ययन में रुकावटें तथा बाधाएं, पिता के कार्यों में धनहानिकारक, बार-बार स्थान बदलने वाला होता है।

पंचम भाव

पंचम भाव में राहु होने से जातक संतान की ओर से चिंताग्रस्त, पेट दर्द तथा हृदय अथवा फेफड़े के रोग। विद्या में रुकावट, आत्मबल कमजोर, नीतिवान, चित्रकला में निपुण तथा एकदम धनलाभ का आकांक्षी होने से शेयर, सट्टा, लाटरी आदि के कार्यों से धन लाभ के लिए प्रेरित होता है।

षष्ठम भाव

राहु के छठवें भाव में होने पर जातक हिम्मतवाला तथा शत्रुओं से लोहा लेने वाला, बलवान, कमर और नेत्ररोग से पीड़ित, ननिहाल पक्ष को अनिष्टकारी, स्वयं रोगी तथा अनावश्यक भ्रमण एवं खर्च करने वाला होता है।

सप्तम भाव

सप्तम भाव में राहु होने पर जातक कामवासना से ग्रस्त, पत्नी से वैचारिक मतभेद अथवा रोगी, चतुर, अपने धर्म से परे कार्य करने वाला, विधर्मी, अधिक भ्रमण करने वाला, स्वभाव से जिद्दी एवं समय पर अपने कार्य नहीं करने के कारण असंतोष और असफलता अधिक होती है।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में राहु होने पर जातक मलीनचित्त वाला, रोगी, तथा अनावश्यक आरोप लगाने वाला होता है। कठिन परिश्रम के बावजूद धनलाभ में कमी रहती है। गुप्तरोग से पीड़ित, दुर्जन स्वभाव, अधिक भ्रमण करने वाला, दुर्घटना से सावधानी रखना जरूरी होता है।

नवम भाव

नवम भाव में राहु जातक को भ्रातृहीन तथा क्रूर स्वभाव का बनाता है। तीर्थाटन का शौकीन होता है। वरिष्ठजनों तथा राज्यपक्ष से सम्मानित होता है। जीवन के उत्तरार्ध में संतान का सुख प्राप्त होता है। धार्मिक प्रवृत्ति वाला जातक होता है।

दशम भाव

दशम भाव में राहु होने पर जातक कठोर शासक, राजकीय पद पर आसीन रहता है। महत्वाकांक्षी यशस्वी, लिखने-पढ़ने की रुचि वाला विद्वान होता है, कम खर्च में काम चलाने वाला मितव्ययी होता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में संपन्नतायें और सफलता प्राप्त होती है।

एकादश भाव

राहु एकादश भाव में स्थित होने पर जातक को जीवन में आर्थिक संपन्नता रहती है। अनैतिक कार्यों से भी धन प्राप्त करने की जातक को चेष्टाएं रहती हैं। पिता एवं संतान की ओर से चिंताए रहती है, लेकिन अपने कार्यों की सफलता के कारण चिंताओं को कम करने का प्रयासरत रहता है।

द्वादश भाव

राहु के बारहवें भाव में होने पर जातक अधिक खर्च करने वाला होता है, व्यर्थ के भ्रमण खर्च अधिक होते हैं। नेत्र विकार से ग्रस्त और अनावश्यक उद्देश्यहीन कार्यों में उलझा रहता है। परिवार की ओर ध्यान अधिक नहीं देने से वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण रहता है।

केतु का द्वादश भाव में फलित

– अरविंद पाण्डेय

प्रथम भाव

प्रथम भाव अर्थात् लग्न में केतु के कारण जातक ठिगने कद का, कमजोर शरीर वाला, दबे हुए ललाट वाला, निरुत्साही, जिद्दी तथा चिड़चिड़े स्वभाववाला होता है तथा आर्थिक कठिनाईयों युक्त जीवन वाला होता है।

द्वितीय भाव

केतु के द्वितीय भाव अर्थात् धनभाव में होने से जातक धन का व्यर्थ व्यय करने वाला, कटुवाणी वाला, स्पष्टभाषी, स्वभाव में कपटी या छद्म स्वभाववाला तथा अपने कर्मों में धोखा उठाकर हानि प्राप्त करता है। अपने स्वभाव में कपटीपने एवं अधिक स्पष्टता के कारण जातक स्वयं ही छला जाने वाला होता है।

तृतीय भाव

तीसरे भाव में केतु होने से जातक अपने कार्यों में साहस वाला, स्वभाव से चंचल, कान के रोग वाला, कला और साहित्य का प्रेमी, बुद्धिमान होता है लेकिन भाईयों से विरोध होता है।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में केतु होने से जातक को माता और मित्रों की ओर से सहयोग में कमी रहती है। जातक को अधिक प्रवास करना पड़ता है। भ्रमणशीलता अधिक तथा मन में बेचैनी, अशांतचित्त रहता है। संपत्ति के विवाद भी रहते हैं।

पंचम भाव

पंचम भाव में केतु होने के कारण जातक की बुद्धि अस्थिर, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, संतान की ओर से चिन्तित एवं दुःखी, दृढ़ आत्मबल वाला जातक होता है, केतु के शत्रु नक्षत्र में होने से जातक अनैतिक कार्यों में संलग्न रहता है।

षष्ठम भाव

षष्ठम भाव में केतु होने पर जातक के रोग और शत्रु पराजित रहते हैं। अपने बल पौरुष से शत्रुजयी होता है। ऐसे जातक अपने ज्ञान का उपयोग करते हुए विद्वतापूर्ण होते है लेकिन भोग-विलास के शौकीन होते हैं।

सप्तम भाव

सप्तम भाव में केतु होने से जातक काम-वासना में लिप्त, शत्रुपक्ष की अधिकता तथा वैवाहिक जीवन से असंतोष रहता है। पत्नी के साथ व्यवहार में वैचारिक असंतोष एवं चिड़चिड़ापन रहता है लेकिन मंगल के नक्षत्र में होने पर अशुभत्व नहीं होता।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में केतु जातक को रक्त विकार, अग्निभय, दाँतों के विकार, उद्योग अथवा कामकाज से रहित होता है। ऐसे व्यक्ति को सदैव दुर्घटनाओं से बचाव रखते रहना चाहिए। स्वास्थ्य की दृष्टि से गुप्त रोगों से पीड़ित भी रहते हैं।

नवम भाव

नवम भाव में केतु के स्थित होने से जातक को पिता के सुख में कमी, कर्मपक्ष अथवा राजपक्ष से बाधाएं आती हैं। दुर्जन व्यक्तियों से कार्यों में सावधानी रखनी चाहिए लेकिन स्वयं अपनी आदतों के कारण सज्जन व्यक्तित्व से दूर रहता है। धार्मिक यात्राओं का शौकीन होता है।

दशम भाव

दशम भाव में केतु होने पर जातक अभिमानी तथा छोटे-छोटे कार्यों से धन एकत्र करने वाला होता है। पिता के साथ वैचारिक मतभेद तथा अपने जीवन में बार-बार आजीविका परिवर्तन करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति को आकस्मिक रूप से अवनति एवं उन्नति होती है।

एकादश भाव

एकादश भाव में केतु की उपस्थिति से जातक बुद्धिमान, विवेकपूर्ण कार्य से धन लाभ कमाने वाला होता है साथ ही परोपकार में लगा रहता है। विनोदप्रिय स्वभाव वाला तथा दयालुवृत्ति वाला होता है। लेकिन संतान की आवश्यक प्रगति नहीं होने से चिंताग्रस्त रहता है।

द्वादश भाव

द्वादश भाव में केतु होने से जातक अधिक भ्रमणशील होता है। ईश्वर पर भरोसा अथवा आध्यात्मिकता की ओर झुकाव वाला होता है। मौज-मस्ती, यात्रा आदि में अधिक खर्च का शौकीन होता है। अपने कार्यों के लिए अधिक यात्राएं करनी पड़ती है।

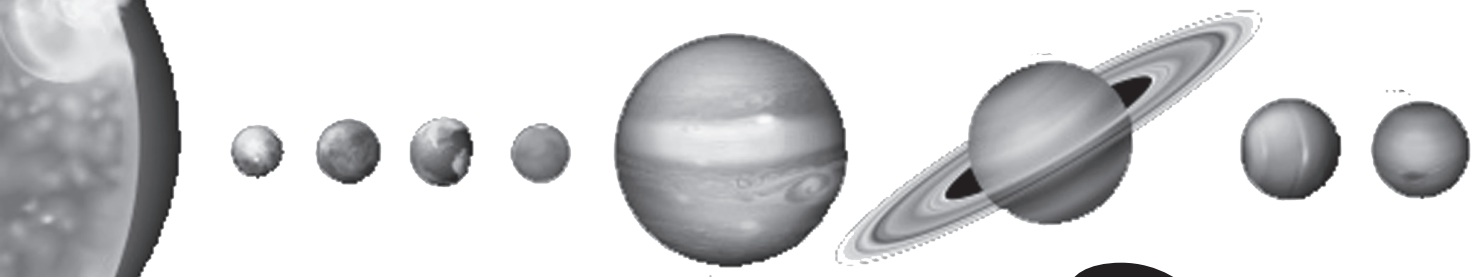

नवग्रह शान्ति

(1) सूर्य वैदिक मंत्रः— ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्य गायत्री— आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोद्यात।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

तान्त्रिकसूर्यमन्त्र— ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्यायनमः।

जप संख्या— 7000 सप्तसहस्राणि

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे रविः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(2) चंद्रवैदिकमंत्रः— ॐ इमन्देवाऽअसपत्नं सुवध्वं- महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।।

सोमगायत्री— ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ सों सोमाय नमः।

तान्त्रिकमन्त्र— ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

जप संख्या— 11000 एकादशसहस्राणि।

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(3) मङ्गलवैदिकमंत्रः— ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपां रेतां सि जिन्वति।।

भौमगायत्री— ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ अं अंगारकाय नमः।

तान्त्रिकमन्त्र— ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

जप संख्या— 10000 दशसहस्राणि।

भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा।
वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(4) बुधवैदिकमंत्रः— ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ठं सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।

बुधगायत्री— ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ बुं बुधाय नमः।

तान्त्रिकबुधमन्त्र— ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जप संख्या— 9000 नवसहस्राणि।

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान पीड़ा दहतु मे बुधः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(5) गुरुवैदिकमंत्रः— ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

गुरुगायत्री— ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नोः जीवः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

तान्त्रिकगुरुमन्त्र— ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

जप संख्या— 19000 एकोनविंशति सहस्राणि।

देवमंत्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।
अनेकशिष्यै सम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(6) शुक्रवैदिकमंत्रः— ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठंशुक्रमंध सऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु।।

शुक्रगायत्री— ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नौ शुक्रः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ शुं शुक्राय नमः।

तान्त्रिकशुक्रमन्त्र— ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जप संख्या— 16000 षोडशसहस्राणि।

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ा दहतु मे भृगुः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(7) शनिवैदिकमंत्रः— ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तुपीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः।।

शनिगायत्री— ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ शं शनैःश्चराय नमः।

तान्त्रिकशनिमन्त्र— ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

जप संख्या— 23000 त्रयोविंशतिः सहस्राणि।

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(8) राहूवैदिकमंत्रः— ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

राहूगायत्री— ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ रां राहवे नमः।

तान्त्रिकराहूमन्त्र— ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

जप संख्या— 18000 अष्टादशसहस्राणि।

महाशीर्षो महावक्त्रो महादंष्टो महायशाः।
अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीड़ां दहतु मे तमः।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

(9) केतुवैदिकमंत्रः— ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।

केतुगायत्री— ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

एकाक्षरीबीजमन्त्र— ॐ के केतवे नमः।

तान्त्रिककेतुमन्त्र— ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

जप संख्या— 17000 सप्तदशसहस्राणि।

अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीड़ा दहतु मे शिखी।।

ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः ॐ श्रीहरिः

दान

दान देते समय दान देने वाले का मुँह पूर्व दिशा की ओर तथा दान ग्रहण करने वाले ब्राह्मण का मुँह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। दानी को निरंकार भाव से ईश्वर के प्रति समर्पण रखते हुए एवं बिना किसी लाभ या आकांक्षा के दान करना चाहिए।

दशमहादान— दस महादान कहे गए हैं जो इस प्रकार हैं- गौदान, भूदान, तिलदान, स्वर्णदान, घृतदान, वस्त्रदान, धान्यदान, गुड़दान, चाँदीदान एवं नमक दान। यह दान पितरों के निमित्त दिया जाता है। अगर किसी कारण से मृत्यु के समय दान न दिया जा सके तो एकादशाह अथवा द्वादशाह कर्म करने के दिन दान करना चाहिए।

वास्तु-सूत्र

– डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

◈◈◈

उत्तर तथा पूर्व की तरफ मुँह करके भोजन करना आयु वृद्धि करता है। दक्षिण की तरफ मुँह करके भोजन करना अपच बढ़ाता है तथा बीमारियों को आमंत्रित करता है।

रात्रि में शयन कक्ष में पीने हेतु पानी कमरे के ईशान्य कोण में रखा जाना चाहिए क्योंकि उस जल के उपयोग से मन अशान्त नहीं रहता। इसे किसी लकड़ी की टेबल या स्टूल पर रखना चाहिए ताकि इस जल में धनात्मक ऊर्जा संग्रहित हो सके यथासंभव ताँबे का पात्र होना चाहिए।

◈◈◈

भवन के ईशान्य कोण में शौचालय होने पर उस घर में गृहकलह तथा घर के सदस्यों में दीर्घ-बीमारियों की शुरुवात होने की आशंका रहती है।

ईशान्य कोण में कुड़ा-कचरा अथवा व्यर्थ की सामग्री का ढेर लगा हो तो उस परिवार में व्यर्थ की शत्रुता होती है। अस्वस्थता के कारण आयु-क्षीणता होना अथवा दुर्व्यसन की आदत परिवार के सदस्यों में हो सकती है अतः ईशान्य कोण साफ-सुथरा रखा जाना चाहिए।

ईशान्य कोण को छोड़कर घर के किसी अन्य दिशा में ट्यूबवेल अथवा गड्ढा नहीं होना चाहिए अन्यथा परिवार के मुखिया को व्यर्थ के कष्ट भोगना होंगे।

◈◈◈

ऊँचे और छायादारवृक्ष भवन के पश्चिम भाग में लगाना चाहिए। वृक्ष को ऐसे ढंग से लगाना चाहिए ताकि उनकी जड़ों से भवन को क्षति नहीं हो इसका कारण भवन से वृक्ष की दूरी इतनी रखें कि प्रातः से लेकर दोपहर पश्चात् तक भवन पर वृक्ष की छाया नहीं पड़े।

उत्तर दिशा में कुबेर का स्थान है इसलिए भवन में तिजोरी, गल्ला अथवा आवश्यक द्रव्य उत्तर दिशा में रखना चाहिए। व्यर्थ खर्च पर इससे नियंत्रण होगा।

◈◈◈

भवन अथवा संस्थान के मुख्य द्वार के सामने वायु और प्रकाश को रोकने वाली कोई चीज होती है उससे द्वार वेध होता है। इस कारण मुख्य द्वार के सामने सेप्टिक टैंक, कुंआ, भूमिगत टैंक होने से आर्थिक हानि की आशंका रहती है। उसी प्रकार मुख्य द्वार के सामने वृक्ष होने पर वृक्ष वेध होता है जो पारिवारिक सुखमय जीवन में व्यवधान पैदा करता है।

मुख्यद्वार के खोलने और बंद करने के समय यदि आवाज पैदा होती है उसे स्वरवेध कहा जाता है यह भी शांतिपूर्वक जीवन के लिए शुभ नहीं है अतः इसे शीघ्र सुधारा जाना चाहिए।

◈◈◈

अपने घर के आँगन में तुलसी का पौधा लगाएं यह ऋणात्मक ऊर्जा जिससे कि मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है, इसे दूर करती है।

अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान अथवा कार्यालय में जहाँ आप अधिक समय बैठते हैं अपने इष्ट देवता का चित्र को नारंगी अथवा लाल रंग की बार्डर में तस्वीर में मढ़वाकर उत्तर अथवा पूर्व की तरफ मुँह करते हुए लगवाएँ, यह व्यापार वृद्धिकारक एवं मन में प्रफुल्लता देगी तथा कार्य करने में रुचि उत्पन्न करेगी।

◈◈◈

घर के कमरों तथा बरामदों या अहातों का दक्षिण भाग नीचली सतह का होने से उस घर में धन हानि, बीमारियाँ तथा विशेषकर घर की महिलाएं अस्वस्थ रहती हैं।

दक्षिण दिशा में घर की चहारदीवारी और मकान का दक्षिणी भाग उत्तर दिशा से नीची होने पर व्यर्थ के तना और अनर्थ होते हैं अतः ये दक्षिण-पश्चिमी भाग ऊँचे होने चाहिए।

सूर्य के उदय काल में दर्शन करने से आत्मबल की वृद्धि होती है। बेलपत्र के पौधे को पूर्व अथवा अग्निकोण में अपने घर में लगाने एवं जल से सिंञ्चित करने से सूर्यग्रह प्रबल होता है एवं सफलता, यशकीर्ति में वृद्धि करता है।

हस्तरेखा वैभव

अशोक लेंघे (एम.ए. अर्थशास्त्र/एल.एल.बी)
हस्तरेखाविद् ज्योतिष शोध विशेषक,
39, टेलीफोन नगर, कनाड़िया, इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9926628342

वर्तमान संघर्ष पूर्ण दौर में हस्तरेखा शास्त्र ज्ञान व हस्तरेखा विद् एक वरदान, हस्तरेखा शास्त्र में दो और शाखा का प्रादुर्भाव हुआ है। (1) मेडिकल पॉमेस्ट्री, (2) एस्ट्रो मेडिकल पॉमेस्ट्री यह एक ऐसी पद्धति है जिससे जीवन प्रवाह को पुनः नियमित किया जा सकता है।

हस्तरेखा की कुछ अक्ष प्रभाव रखने वाली रेखाएँ व उनके असाधारण प्रभावः

सूर्य रेखा — जिसके हाथ में होती है वह व्यक्ति निश्चित रूप से बड़ा भाग्यशाली होता है, प्रतिभाशाली होता है। भाग्य रेखा यदि हाथ में नहीं हो तो सूर्य रेखा धन रेखा का भी काम करती है। यदि सूर्य रेखा जीवन रेखा से निकली होतो वह जातक जीवन में बड़ा कलाकार होता है यदि यही सूर्य रेखा चन्द्र स्थान से निकली हो तो वह व्यक्ति दूसरे की सहायता से उन्नति करने वाला यशस्वी होता है। यदि सूर्य रेखा मंगल के स्थान से निकली है तो अनेक विघ्न, बाधाएं एवं सघर्ष लड़ने के बाद उसे सफलता प्राप्त होती है। यदि सूर्य रेखा हृदय (हार्ट लाईन) रेखा से निकलती है अनेक गुणों की विशेषताओं के साथ व्यक्ति भाग्योदय आयु के 45वें वर्ष के बाद से उच्च शिखर पहुँचकर अपनी जीवन की समस्त सुख समृद्धि प्राप्त करता है।

यदि सूर्य मस्तिष्क रेखा से निकलती है युवावस्था में दिमागी शक्ति द्वारा कोई बड़ी सफलता प्राप्त करते हैं। यदि यह रेखा मणिबंध के पास निकले तो वह आदमी ऐसा भाग्यशाली होता है कि मिट्टी के व्यवसाय से भी सोना अर्जित कर सकता है व भाग्यशाली होता है।

यदि जीवनरेखा के भीतर से सूर्य रेखा निकले तो व्यक्ति प्रेम के द्वारा धन, यश, कीर्ति प्राप्त करता है। यदि यही सूर्य रेखा भाग्य रेखा से निकले तो अपने प्रयत्नों के द्वारा ही उसका उत्थान होता है। सूर्य रेखा जिस ग्रह के स्थान पर समाप्ति होती है उस ग्रह के गुणों को बलवान बनाती है। जैसे बुध के स्थान पर समाप्त हो तो व्यापार, विज्ञान, साहित्य, यश व सार्वजनिक जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

स्वास्थ्य रेखा — स्वास्थ्य रेखा हर किसी के हाथ में हो यह आवश्यक नहीं है। इसका नहीं होना ही स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। स्वास्थ्य रेखा का जीवन रेखा से ना मिलना, शरीर की दृढ़ता, दीर्घायु और बलवान होने का चिह्न है। यदि मिली हुई हो तो जीवन में स्वास्थ्य में आए दिन कुछ-कुछ ना कुछ शारीरिक कष्ट रहता है।

स्वास्थ्य रेखा तंदुरुस्ती का थर्मामीटर — जिन दिनों बीमारी से ग्रस्त होता है या बीमार पड़ने को होता है। उस समय यह रेखा गहरी और भयानक हो जाती है पर जब शरीर स्मरण होता है तो यह रेखा धुँधली पड़ जाती है। स्वास्थ्य रेखा से जितनी शाखाएँ फूटती है उतनी ही किस्म के रोगों का अधिक दबाव होता है। यदि स्वास्थ्य रेखा चन्द्र स्थान तक चली जाये तो मनोविज्ञान की संभावना, वीर्य संबंधी रोग का अस्तित्व प्रकट होता है। जिसके हाथ में स्वास्थ्य रेखा नहीं होती है वे उतने बीमार नहीं होते हैं अर्थात् कम बीमार होते हैं। यही स्वास्थ्य रेखा दोहरी होने से चरित्र की पवित्रता व अच्छे प्रभाव का चिह्न है। यदि इसका रंग पीला हो तो शरीर में कलेजे की बीमारी का होना बलवती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा, मस्तिष्क रेखा के बीच में से होकर निकलती है, तो यह अत्यधिक लाल कलर की प्रतीत होती है तो मुर्च्छा, मृगी, पागलपन, सनकीपन, मानसिक रोगी की निशानी है।

विवाह रेखा — कनिष्ठिका अंगुली और हृदय रेखा के बीच में जो छोटी किन्तु गहरी रेखा बुध के स्थान की तरफ आती है वह विवाह रेखा कहलाती है। यदि यह रेखा सूर्य रेखा से मिलती है, तो धनी घर में विवाह होता है, परन्तु यदि उसे काटकर आगे बढ़ जाये तो विवाह के मन्सूबे धूमिल हो जाते हैं।

विवाह रेखा, हृदय रेखा के बीच के फासले से शादी की उम्र जानी जा सकती है, यह फासला जितना ज्यादा होगा विवाह उतना ही विलंब से होगा।

संतान रेखा — संतान संबंधी रेखा, अंगूठी की जड़ और कलाई के बीच में हथेली पर आरंभिक भाग में जो छोटी-छोटी रेखा हैं, उनसे संतान संबंधित पता चलता है। यह रेखा जितनी हो उतनी ही संख्या में संतान का अनुमान लगाया जा सकता है।

मणिबंध रेखा — हाथ के नीचे की ओर झुकाने से कलाई पर जहाँ नाड़ी देखी जाती है। उस जगह कुछ सलवटें सी पड़ती हैं उसको मणिबंध कहते हैं। अक्सर ये तीन रेखाएं होती हैं। पहली से तंदरुस्ती, दूसरी से धन व तीसरी से सुख, शांति आदि के बारे में जाना जा सकता है। इन रेखाओं से आयु का अनुमान भी लगाया जाता है। हरेक रेखा से 30 वर्ष की आयु का अंदाज है। यदि तीन शुद्ध रेखा हैं तो 90 वर्ष तक आयु अनुमानित मानी जाती है।

हृदय रेखा — हृदय रेखा से प्रेम, प्रसन्नता और आदर का ज्ञान होता है। यह रेखा बीच में टूटी-फूटी हो तो मतलब की प्रेम में क्षणिक स्वभाव यह दुर्गुण देखा जाता है कि उंगलियां में इन रेखाओं में जितना ही फासला होगा उतनी ही स्थिरता व सच्चाई पाई जाती है। तर्जनी और मध्यमा के बीच भाग में यह रेखा मिलती है तो व्यभिचार की और झुकाव अधिक रहता है।

भाग्य रेखा — पूर्व संचित शुभ कार्यों के कारण क्या-क्या उसके जीवन में मिलने वाला है। इसका पता भाग्य रेखा की स्थिति से बताया जा सकता है। यदि यह रेखा बीच में टूटी-फूटी न हो तो यह रेखा उत्तम फल देती है। ऐसे व्यक्तियों को धन, ज्ञान, प्रतिभा और मान-सम्मान की कमी नहीं रहती है। जिसके हाथ में यह भाग्य रेखा नहीं हो ये प्रायः निर्धन व दुःखी रहते है। मणिबंध से चलकर शनि पर्वत तक जाने वाली भाग्य रेखा का होना प्रकट करते हैं।

यदि भाग्य रेखा अनामिका की जड़ की ओर जा रही हो तो व्यक्ति को कई लोगों के सहयोग से सुखी व समृद्धि हो जाती है। यदि यह रेखा कनिष्ठिका की मूल की तरफ जा रही हो तो विदेश में पहुँचकर धन, मान-सम्मान प्राप्त करता है। यदि यह रेखा शुक्र के स्थान से निकलती है तो यह जातक दूसरों पर आश्रित रहता है। उसे पैतृक या अनायास धन की प्राप्ति होती है।

यदि भाग्य रेखा शनि के स्थान पर पहुँचकर बृहस्पति के उभार पर मुड़ जाये तो वृद्धावस्था में अधिक उन्नति होती है। यदि मूल में यह रेखा मस्तिष्क रेखा से मिली हो अर्थात् मूल में मस्तिष्क रेखा व भाग्य रेखा जुड़ी हो तो समझे की जातक को बौद्धिक कार्यों से सुख व समृद्धि प्राप्त करेगी।

अंत में मनुष्य के हाथ में विद्यमान उपरोक्त प्रकार व गुणों वाली रेखाएं पाई जाने पर व्यक्ति के जीवन को लंबे समय तक शुभ-अशुभ प्रभाव रखती है।

हाथ में पाई जाने वाली हस्तरेखाओं की स्थिति अनुसार जीवन का एक चक्र सात वर्ष में पूरा हो जाता है। हाथ में उपस्थित रेखाओं के शुभाशुभ फल में भी सप्तवर्षीय नियम, काम करता है।

जीवन विकास की नई राह... (शेष भाग)

शुद्ध हृदय वाले व्यक्तित्व का ज्योतिषीय विश्लेषण–

(1) लग्न एवं लग्नेश शुभग्रहों तथा शुभ नक्षत्रों का हो।

(2) मूलत्रिकोण लग्न, पंचम, नवम भाव में शुभग्रह हो अथवा शुभग्रहों से दृष्ट हो।

(3) चन्द्रमा बली हो तथा कोई पापग्रह के साथ नहीं हो तथा पापग्रह की दृष्टि में नहीं हो।

(4) चतुर्थ भाव, अष्टम भाव तथा दशम भाव शुभग्रहों की दृष्टि में अथवा युक्त हों।

(5) केन्द्र अथवा त्रिकोण भावों के स्वामी जो कि शुभ ग्रह हों की दशाएं जीवन के मुख्य आयु में हो अर्थात् जन्म से लेकर अपने भविष्य निर्धारण के समय तक उक्त ग्रहों की दशाएं हों।

उपरोक्त प्रकार के जातकों की समाज में प्रतिष्ठा होती है। इसके अतिरिक्त वह व्यक्ति जो अपने इष्टदेव, गुरु एवं महापुरुषों के चरित्र का अनुगमन करता है वह भी समाज में इन गुणों के कारण ही श्रेष्ठता को प्राप्त करता है।

मूल विवेचन

मूल संज्ञक नक्षत्र— अश्विनी आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती इन 6 नक्षत्रों की मूल संज्ञा है। उक्त 6 नक्षत्रों के अन्तर्गत आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल, नक्षत्रों को मूल और अश्विनी, मघा, रेवती को हल्के मूल कहते हैं।

अभुक्त मूल घटादि विचार— ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त्य की 4 घटी एवं मूल के आदि की 4 घटी एवं मूल के आदि की 4 घटी अन्य मतों से मूल की प्रथम की 8 घटी ज्येष्ठा के अन्त्य की 5 घटी अभुक्त मूल है।

मूल संज्ञक नक्षत्र चरण फलम्

अश्विनी चरण फल—

चरण 1. पिता को कष्ट 2. सुख ऐश्वर्य
3. मन्त्री पद 4. राज्य सम्मान

आश्लेषा चरण फल—

चरण 1. माता को कष्ट 2. पिता को कष्ट
3. सुख 4. धनवान विद्वान

ज्येष्ठा चरण फल—

चरण 1. बड़े भ्राता को कष्ट 2. छोटे भ्राता को कष्ट
3. मातृ नाश 4. स्वयं का नाश

रेवती चरण फल—

चरण 1. राज्य सम्मान 2. मन्त्रित्व प्राप्ति
3. धन सुख की प्राप्ति 4. अनेक कष्ट

आश्लेषा चरण फल—

चरण 1. पिता को कष्ट 2. माता को कष्ट
3. धन का नाश 4. शुभ

मूल चरण फल—

चरण 1. शुभ 2. धन का नाश
3. माता को कष्ट 4. पिता को कष्ट

नोट– दिन में मूल नक्षत्र का प्रथम चरण पिता को, रात्रि में द्वितीय चरण माता को। संध्या समय तृतीय चरण स्वयं को विशेष अशुभ होता है।

मूल-निवास— आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, माघ मास एवं 2/5/8/11 जन्म लग्नों में स्वर्ग में। श्रावण, कार्तिक, चैत्र, पौष मास एवं 3/6/9/12 जन्म लग्नों में भूमि पर। फाल्गुन, मार्गशीर्ष, बैशाख, ज्येष्ठ मास एवं1/4/7/10 जन्म लग्नों में पाताल में मूल रहता है। भूमि पर मूल का वास शुभ नहीं होता है।

ज्वालामुखी मूल— प्रतिपदा को मूल, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी, दशमी को आश्लेषा होने से ज्वालामुखी मूल होते हैं। गंडमूल एवं फल रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा नक्षत्र के 2 घटी अंत की दशा अश्विनी, मघा मूल के आदि की दो घटी गंडमूल होते हैं यह यात्रा जन्म एवं विवाह में अनिष्टप्रद होते हैं।

मूल शान्ति– मूल संज्ञक नक्षत्र में पैदा हुए बालक को दोषाशांति के लिए वैदोक्त रीति से हवनादि होना चाहिए। बड़े मूल (आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल) में उत्पन्न बालक का शांति 27वें दिन उसी नक्षत्र में करना चाहिए। छोटे मूलों (अश्विनी, रेवती, मघा) की शांति 12वें दिन शुभ दिन में करना शुभ कहा गया है।

मूलादि जनन शांति समय- जातस्यद्वादशाहेतु जन्मर्क्षे व शुभे दिने।। समाष्टके द्वादशाब्दे कुर्याच्छांतिकमादरात्।। तथा शास्त्रोक्तरीया खलु सूतकांते मासे तृतीयप्यथवत्सरांते अर्थात् यदि मातुः शीतोदकस्नाने सामर्थ्य स्यात्तदा सूतकांते एवशांति, तत्रापि अशक्तौ तृतीयेमासे तन्नक्षत्रे शांति, तदापि दीर्घ रोगादिना अशक्तिश्चेत्तहि वर्षसमाप्ति दिवसे (तन्नक्षत्रे) शांतिः इतिः वशिष्ठोक्तिः।।

जातक चरण विचार— आर्द्रा से 10 नक्षत्ररौप्यपाद, विशाखा से 4 नक्षत्र लौहपाद, पूर्वाषाढ से 7 नक्षत्र ताम्रपाद, रेवती से 5 नक्षत्र स्वर्णपाद। **फलम**- रौप्यपाद-धनवृद्धि, लौहपाद-कष्ट, ताम्रपाद-सौख्य, स्वर्णपाद-चिंताकारक है।

एक नक्षत्र में जन्म फल- पिता-पुत्र, माता-पुत्र व कन्या, दो भ्राता, इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों को मृत्युतुल्य कष्ट होता है। शान्त्यर्थ हवन, पूजन, स्वर्णदान से शुभ होता है।

त्रिखल जन्म– तीन पुत्रों के बाद कन्या व तीन कन्याओं के बाद पुत्र का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट, भय, हानिप्रद है। त्रिखल शांति कराना आवश्यक है।

ग्रहणदोष— चन्द्र व सूर्य ग्रहण में बालक का जन्म होना पहली बार स्त्री का रजोधर्म हो तो शोक एवं मृत्युकारक होता है। **शांति प्रकार**- जिस नक्षत्र में ग्रहण हो उस नक्षत्र के स्वामी की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर पूजन, हवन, दान, ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

साढ़ेसाती और अढ़ैया शनि का विचार

साढ़ेसाती शनि— साढ़ेसाती - जन्मराशि का एवं जन्मराशि से दूसरे बारहवें स्थान में स्थित शनि को साढ़ेसाती कहते हैं। यह एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है। इस तरह तीन राशियों के भ्रमणकाल में साढ़ेसात वर्ष पूरे होते हैं।

फल— साढ़ेसाती शनि किसी को प्रारंभ में, किसी को मध्य में, किसी को अंत में अशुभ फल करता है। जन्म पत्रिका में चन्द्र तथा शनि 2,6,8,12 स्थानों हो व नीच या पापग्रहों के साथ हो या अस्तगत तथा पाप दृष्टि या पापयुक्त होकर 8 व 12वें भाव में स्थित हों तो शनि की साढ़ेसाती अशुभफल करेगी। जन्म पत्रिका में बलवान शनि लग्न व चन्द्र त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10 स्थानों) में हो अथवा राज्येश, भाग्येश, पंचमेश से संबंधित हों और शुभग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो शनि की साढ़ेसाती लाभ, जय सुखकारक होती है।

शुभ शनि— व्यापार तथा जायदाद से लाभ, राजमार्ग से जय, मान, पदोन्नति, शरीर, स्त्री तथा संतानादि सुख, शुभ कार्य सिद्धिकारक होता है।

नक्षत्र से शनि का विशेष विचार— जिस नक्षत्र पर शनि हो वहीं 1 नक्षत्र मुख = धनहानि, उससे 4 नक्षत्र दाहिनी हाथ = विजय, 6 नक्षत्र दोनों पैर = देशान्तर भ्रमण, 5 नक्षत्र हृदय = लक्ष्मी प्राप्ति, 4 नक्षत्र बांया हाथ = राजभय, 3 नक्षत्र सिर = राज हानि, 2 नक्षत्र नेत्र = सुख, 1 नक्षत्र गुदा = मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

शनि का चरण विचार– एक राशि से दूसरी राशि पर शनि के आने के समय जन्म राशि से जितनी संख्या पर चंद्रमा हो, उस संख्या के अनुसार चरण (पाद) होता है। जैसे 1, 6, 11वें चन्द्रमा में स्वर्णपाद 2, 5, 9वें चन्द्रमा में चाँदीपाद, 3, 7, 10वें चन्द्रमा में ताम्रपाद, 4, 8, 12, चन्द्रमा में लोहे का पाद होता है।

स्वर्णपाद- सर्वसौख्य, **चाँदीपाद**- अधिकलाभकारक। **ताम्रपाद**- धनलाभ। **लौहपाद**- द्रव्य विनाशक होता है।

शनि वाहन विचार– एक राशि को छोड़कर जब शनि दूसरी राशि में जावे उस समय की तिथि संख्या अमावस्या से गिने, अश्विनी नक्षत्र संख्या गिने, रविवार से दिन संख्या गिने, सबके जोड़ में 9 का भाग दें, शेष बचने पर निम्नलिखित वाहनादि तथा उनका फल होता है–

शेषवाहन फल— (1) गधा-धननाश (2) घोड़ा-धनलाभ (3) हाथी-धर्मादिलाभ (4) महिष- शत्रुनाश (5) सियार-भय (6) सिंह-शत्रुनाश (7) कौआ- अरिष्ट (8) मृग-सुख (9) मयूर- संपत्ति

मूल नक्षत्रों के वेदोक्त जपादि मन्त्र

अश्विनी नक्षत्र मंत्राः— ॐ अश्विनीर्भैषज्येनतेजसे ब्रह्मवर्यसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यैभैषज्यन वीर्यायान्नाद्य-भिषिञ्चीमीन्द्रिस्येन्द्रियेण बलायश्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।

आश्लेषा नक्षत्र मंत्राः— ॐ सजोषाइन्द्रसगणोमरुभ्दिः सोमावपिववृत्रहाशुरविद्वान् जहि शत्रुं रपमृधोनुदश्चाथा भयं कृणुहिविश्वतोनः अथवा ॐत्रातारमिन्द्रेत्यादि।

मूल नक्षत्र मंत्राः— ॐएषतेनिऋते भागरतांजुष्चस्व स्वाहाऽग्निेभ्योः देवेभ्योः परः सद्भ्यः स्वाहा, यमनेत्रेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा, विश्वदेव नेत्रेभ्योदेवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा, मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वामनेत्रेभ्योवा देवेभ्यऽउत्तरासदभ्यः स्वाहा, सोमनेत्रेभ्योदेवेभ्यो उपरिसद्भ्योदुखद्भ्यः स्वाहा। अथवा ॐ उपाधम किल्विषमयकृत्या मनयोग्यः अपामार्गवमस्मदपयुः स्वप्नर्ठसुव।।

रेवती नक्षत्र मंत्राः— ॐ पूषन्तव्रतेजयन्नरिष्येमकदाचन स्तोतरस्तइहस्मसि स्वाहा।।

पंचक मन्त्राः (धनिष्ठा से रेवती तक)

धनिष्ठा नक्षत्र मंत्राः— ॐ वसो। पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्रधारं देवस्त्वा सवित-पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सप्त्वा कामधुक्षः।।1।।

शतभिषा नक्षत्र मंत्राः— ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसिव्वरुण स्यस्यस्कम्भ हसिर्जनीस्थोष वरुणस्यऽऋत् सदन्नय सिव्वरुणस्यऋत् सदन्न मसिव्वरुणस्यऽऋतु सीद।।2।।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र मंत्राः— ॐ उतनोहिर्ब्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एक पात् पृथिवी समुद्रः व्विश्वेदेवोऽऋता बृधोहुवाना स्तुता मंत्राः कविशस्ताऽअवंतुः।।3।।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मंत्रा— ॐ शिवो नामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिर्ठसीः निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्या यप्प्रजननाय रायम्पोषायसुअजाः त्वायसुवीर्याय।।4।।

रेवती नक्षत्र मंत्रा— ॐ पूर्षन्तवब्रतेब्व्रते व्वयन्नरिस्येन कदाचन स्तोता रस्तइहस्मसि।।5।।

त्रैमासिक राशि भविष्यफल (जुलाई से सितंबर 2018)

● पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
● पं. विनोद जोशी
● पं. अरविंद पाण्डेय

	मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)	वृषभ (ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)	मिथुन (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)
जुलाई–2018	इस मास में अपनी आत्मबल की शक्ति को कमजोर नहीं होने देवें, अन्यथा प्रतिष्ठा पर आघात लग सकता है, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से कार्यों को सफलता की ओर अग्रसर करने का प्रयास करें। आर्थिक पक्ष उत्तम रहेगा। व्यापारी वर्ग को मास के पूर्वार्द्ध की अपेक्षाकृत उत्तरार्द्ध लाभदायक रहेगा। कृषक वर्ग को समुचित लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग को अपने कार्यदायित्व में सतर्कता रखनी चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्यों के अतिरिक्त कार्यों में समय व्यतीत करना नुकसानप्रद साबित होगा। सावधानी रखें। मास की 2, 4, 5, 12, 15, 16, 19, 24, 26, 30 शुभ हैं।	यह मास धन योग की चिंतादायक है, अधिक सजगता से व्यय करना चाहिए। अपने मित्रों के कार्यों में सहयोग के लिए प्रयास करने से अनुकूलता आ सकती है। अपने पुराने रुके हुए कायों में यदि सावधानी नहीं बरती गई तो असफलता मिल सकती है। व्यापारी वर्ग को अधिक व्यय में सावधानी रखना चाहिए। कृषक वर्ग को अधिक दौड़-धूप के बाद लाभ में कमी। नौकरी वर्ग को कार्य करने में तत्परता बरतनी चाहिए। विद्यार्थी वर्ग भ्रमण में सावधानी रखें। दि. 4 , 5, 6, 10, 12, 18, 29 शुभ हैं।	मास के प्रारंभ में अत्यधिक जिम्मेदारियाँ आएंगी। दौड़-धूप अधिक करना पड़ेगी। पुराने मित्रों से अच्छे संबंध बनेंगे। आर्थिक लाभ के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। उत्तरार्द्ध में अपने निजी मामलों में अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी जिनसे सहयोग की अपेक्षा होगी, मिलेगा। मन में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी। व्यापारी वर्ग को इच्छित कार्यों में धनलाभ के अवसर मिलेंगे। कृषक वर्ग को व्यस्तता और दौड़-धूप के कारण धनलाभ के योग बनेंगे। नौकरी वर्ग के लिए समय सामान्य है। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग को विद्या प्राप्ति में कतिपय कारणों से अड़चनें संभव हैं। मास की 3, 5, 7, 9, 13, अशुभ हैं शेष अनुकूल हैं।
अगस्त–2018	मास का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है, अनावश्यक चिंताएं न पालें। अपने भरोसेमंद मित्रों से संबंध नहीं बिगड़ें इसका ध्यान रखें। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक तनाव रहेगा, उग्रता एवं आवेश रहित रहें। अपने सहयोगियों का अपूर्व सहयोग मिलेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा। व्यापारी वर्ग को श्रम के अनुकूल लाभ में कमी रहेगी। कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता तथा यात्रा अधिक। नौकरी वर्ग वालों को अपने कार्य का यश मिलेगा। व्यर्थ की चिताएं दूर होंगी। विद्यार्थी वर्ग को वरिष्ठजनों के संपर्क से लाभ। मास की 1, 5, 11, 17, 23 तारीखें शुभ रहेंगी।	मास का पूर्वार्द्ध यशवर्द्धक रहेगा। अपने कार्य की सराहना होगी। मन में प्रसन्नता रहेगी। पारिवारिक दृष्टि से कुछ चिंताएं ऐसी रहेंगी जिसमें आर्थिक खर्च की योजनाएं बनेंगी तथा ऐसी योजनाओं के लिए समय नहीं देने से अधूरी रहेंगी। मास का उत्तरार्द्ध पारिवारिक क्लेश, पत्नी के स्वास्थ्य की चिताएँ व्यापारी वर्ग को शीघ्र निर्णय लेने से आर्थिक क्षति हो सकती है, कृषक वर्ग को नए कार्य की रूपरेखा में सफलता। नौकरी वर्ग कार्य की अधिकता। विद्यार्थी वर्ग को समय प्रतिकूल रहेगा। मास की 4, 13, 22, 26 तारीखें उत्तम रहेंगी।	इस मास में आपको पुराने रुके कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यवसाय तथा आर्थिक पक्ष प्रबल रहेगा। नए कार्य की योजना बनेगी तथा उसके क्रियान्वयन के योग भी बनेंगे। अपने कार्यों की सही दिशा मिलकर, धन लाभ के अवसर मिलेंगे। व्यापारी वर्ग के लिए समय उत्तम है, लाभकारी योग बनेंगे। कृषक वर्ग को चिंताएं तथा व्ययकारक समय रहेगा। नौकरी करने वालों को दौड़-धूप अधिक रहेगा। विद्यार्थीवर्ग के सफलताएं उत्तम। मास की 1, 4, 5, 7, 11, 19, 23, 29 शुभ है।
सितंबर–2018	मास का पूर्वार्द्ध उत्तम है। अपनी यश कीर्ति का अवसर मिलेगा। किए गए कार्यों की सराहना होगी। इच्छित कार्यों में हालांकि व्यवधान आएगा, किंतु सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में राजकीय पद अथवा कार्य में सामान्य परिवर्तन संभव है। रोजगार से संतोष मिलेगा। व्यापारी वर्ग को अनुकूल अवसर मिलेंगे। लाभ प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित कार्यों में लाभ के योग। भूमि क्रय करने की संभावनाएं बढ़ेंगी। नौकरी वर्ग वाले सजगता से कार्य करें आक्षेप नहीं लगे इसका ध्यान रखें। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च संभव है। मास की 2, 4, 8, 17, 26 उत्तम रहेंगी।	शुभ समाचारों से प्रसन्नता। स्थाई संपत्ति लाभ। योजनाएँ पूर्ण होने के अवसर। मित्रों से वैचारिक विवाद। उत्तरार्द्ध सामान्य, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पारिवारिक सुख की वृद्धि। संतान सुख उत्तम। प्रगति की संभावना बनेगी। व्यापारी वर्ग को अपने किए गए कार्यों का यश और द्रव्य मिलेगा। कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता तथा आर्थिक लाभ में रुकावटें। नौकरी वर्ग को भ्रमण अधिक। किसी त्रुटि के कारण कार्यों में चिंताएं व्याप्त रहेंगी। विद्यार्थी वर्ग का उचित सहयोग। मास में 2, 4, 6, 8, 12, 18, 24 तारीखें उत्तम रहेंगी।	अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को अपने आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश में कमी रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

त्रैमासिक राशि भविष्यफल (जुलाई से सितंबर 2018)

● पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
● पं. विनोद जोशी
● पं. अरविंद पाण्डेय

	कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)	सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)	कन्या (टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
जुलाई–2018	मास का पूर्वार्द्ध संघर्षपूर्ण है आर्थिक रुकावटें आएंगी। कुछ रुके हुए कार्य कठिनाई से हल होंगे। मानसिक तनाव अवश्य रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी संतान की ओर से चिंता रहेगी। व्यर्थ भ्रमण संभव। व्यापारी वर्ग को मास अनुकूल रहेगा। अपने व्यवसाय में वृद्धि के योग बनेंगे। कृषक वर्ग को अपनी मेहनत का समुचित लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने शिक्षण कार्य के लिए ही ध्यान देना होगा। व्यर्थ के कार्यों में भ्रमण संभव है। तारीख 1, 6, 11, 14, 19, 22 अशुभ हैं।	सुखद समय की शुरुआत। यश एवं लाभ के समुचित अवसर। मित्रों की अभिवृद्धि तथा मास के उत्तरार्द्ध में अधिक भ्रमण एवं व्यस्तता। आर्थिक लाभ एवं राजकृपा। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में सफलता तथा धनलाभ कृषक वर्ग को अपनी मेहनत का समुचित लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग को किसी ऐसे कार्य के योग बनेंगे जिससे अधिकार वृद्धि और अपने कार्य दायित्व को सफलतापूर्वक वरिष्ठ को दिखाने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को समुचित उत्तम लाभ। मास की 1, 3, 5, 7, 11, 17, 19, 23 तारीखें उत्तम है।	मास के प्रथम पक्ष में रोजगार के सुखद अवसर मिलेंगे। अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। अपने नजदीकी मित्रों से सतर्क रहें। व्यर्थ के आरोप लगेंगे। मन में किसी बात को लेकर असंतोष रहेगा। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक क्लेश अथवा पत्नी से वैचारिक विषमता रह सकती है, शांत रहें। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में व्यवधान के साथ ही सफलता के अवसर, कृषक वर्ग को कठिनाईयाँ अधिक, नौकरी वर्ग को अपनी बुद्धिमत्ता एवं वाक्चातुर्य से लाभ, विद्यार्थी वर्ग को अप्रसन्नता दिनाँक 4, 6, 9, 13, 17 अशुभ हैं।
अगस्त–2018	इस मास में अपने कार्यों की सफलता के लिए नए अवसर मिलेंगे। अपने मन और बुद्धि से कार्यों में सफलता के शुभ अवसर मिलेंगे। समाज में मान-सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। मांगलिक कार्यों के अवसर मिलेंगे। व्यापारी वर्ग को व्यापार में इच्छित लाभ तथा अपने किए गए कार्यों से यश मिलेगा। कृषक वर्ग को सहयोग और धन लाभप्रद रहेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की ओर से संतोष मिलेगा। विद्यार्थीवर्ग को उत्तम लाभ के अवसर मिलेंगे। मास की दि. 2, 3, 4, 7, 9, 12, 21, 24 शुभ रहेंगी।	मास का पूर्वार्द्ध सामान्य। अवरोध दूर करेगा। विभिन्न प्रकार के कार्यों में व्यवस्तता रहेगी। सामाजिक कार्य में भी व्यस्त रहेंगे किन्तु खर्च बढ़ेगा। मास के उत्तरार्द्ध में विरोधियों का शमन होगा। अपने साहस के कारण कार्य की सफलता में आसानी रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए व्यर्थ व्यय एवं भ्रमणकारक है। कृषकों को लिए कार्यों में व्यस्तता ज्यादा रहेगी। नौकरी वर्ग को भ्रमण में सावधानी रखनी चाहिए जिम्मेदारी के कार्यों में रुकावटें नहीं आए ध्यान रखें। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता रहेगी। मास की 5, 14, 20, 23 अशुभ हैं।	मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। गरिष्ठ पदार्थ अथवा अखाद्य पदार्थ का सेवन न करें। नए व्यापार अथवा कार्यों के योग बनेंगे। सहयोग से किए जाने वाले कार्यों में गति मिलेगी। उत्तरार्द्ध में शुभफलदायी यात्रा होगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग के अपने व्यापार में सजगता रखनी होगी पार्टनरशिप के व्यापार में आय-व्यय का ध्यान रखना जरूरी है। कृषक वर्ग को अधिक यत्न से लाभ, विद्यार्थी वर्ग भ्रमण की अधिकता से सावधानी रखें नौकरी वर्ग को संतोष एवं सहयोग मिलेगा। मास की 1, 5, 14, 19 तथा 23 कमजोर हैं।
सितंबर–2018	मास का आरंभ व्यस्ततापूर्ण तथा अधिक जिम्मेदारियों पूर्ण हैं। संतान से सुख। द्रव्यलाभ तथा भावी योजनाएँ क्रियान्वयन का उचित अवसर। दाम्पत्य जीवन में कठिनाईयाँ रहेंगी। संतान के कार्यों में चिंताए रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में अधिक ध्यान देना चाहिए। भ्रमण एवं व्यय की अधिकता रहेगी। कृषक वर्ग को लाभ में कमी रह सकती है। नौकरी वर्ग को अपने शारीरिक क्षमता से अधिक कार्य करना पड़ेगा, स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को समय सामान्य है। मास की 3, 8, 17, 26 तारीखें अधिक व्यस्तता तथा कमजोर रहेंगी।	मास में व्यस्तता अधिक रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखनी चाहिए। अपने धन पक्ष को व्यय करने में सावधानी रखें आय की अपेक्षाकृत व्यय की अधिकता रहेगी। अपने विश्वसनीय लोगों रिश्तेदारों से मनमुटाव संभव है। व्यापारी वर्ग को अपने व्यापार में अधिक सजगता आवश्यक है। कृषक वर्ग को परेशानी अधिक रहेगी। नौकरी वर्ग को अधिक चिंताएं तथा दौड़धूप अधिक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को चिंताएं तथा आर्थिक कष्ट संभव है। दि. 2, 4, 8, 12, 18, 22, 26 शुभ हैं।	मास के पूर्वार्द्ध में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि संभव है। पारिवारिक कार्यों के लिए यात्रा होगी जिसमें संतोष मिलेगा। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्तरार्द्ध में राजकीय सफलता शत्रुशमन एवं इच्छित यात्रा होगी। उदर विकार संभव है। स्वास्थ्य एवं मन में संतोष रहे इस हेतु सूर्योपासना करना लाभप्रद रहेगी। व्यापारी वर्ग को यत्न से लाभ तथा साझेदारी से संतोष रहेगा। व्यर्थ के कार्यों में कृषक वर्ग व्यस्त रहेगा। नौकरी वालों को सावधानी एवं सजगता जरूरी है, विद्यार्थी वर्ग अनावश्यक कार्यों में ध्यान नहीं देते हुए अध्ययन में मन लगाएं। मास की 3, 6, 9, 12, 18 शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्यफल (जुलाई से सितंबर 2018)

● पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
● पं. विनोद जोशी
● पं. अरविंद पाण्डेय

	तुला (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)	वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)	धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ)
जुलाई–2018	मास के पूर्वार्द्ध में अपने कार्यों में रुकावटें रहेंगी। दौड़-धूप अधिक करनी पड़ेगी। पुराने मित्रों से संबंध नहीं बिगड़े इस बात का ध्यान रखें। पत्नी के स्वास्थ्य एवं माता के स्वास्थ्य में सजगता रखें। मास का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा, रुकावटें दूर होंगी। जिन मित्रों अथवा साझेदारी से सहयोग अपेक्षित है, मिलेगा। व्यापारी वर्ग को उत्तम। कृषक वर्ग को दौड़-धूप अधिक आर्थिक कठिनाईयाँ, नौकरी वर्ग को उपयुक्त तााि अनुकूल समय। विद्यार्थी वर्ग को मित्रों से सावधानी रखनी चाहिए दिनाँक 1, 3, 17, 21, 23 अशुभ है।	मास के पूर्वार्द्ध में चिंता एवं मानसिक भय रहेगा। किसी नजदीकी व्यक्ति से विवाद के कारण मन में दुःख रहेगा। अपनी प्रतिष्ठा यथावत रहेगी। उत्तरार्द्ध में किसी सहयोगी के माध्यम से अनुकूलता आएगी। राजकीय कार्यों में सफलता एवं अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। व्यापारी वर्ग को अनुकूल समय, कृषक वर्ग को अधिक श्रम के अनुपात में समय पर लाभ, नौकरी करने वालों को अस्थिरता तथा वरिष्ठ की ओर से अप्रसन्नता विद्यार्थी वर्ग को अनावश्यक समय व्यतीत होगा। मास की 5, 14, 20, 23 तारीखें अशुभ हैं।	मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। अनावश्यक चिंताए नहीं पालें। अपने पारिवारिक सदस्यों से भावनाओं में आकर संबंध न बिगाड़ें, इसमें सावधानी बरती जाए। अपने नियमित कार्य तथा आय वृद्धि के अवसर बनेंगे। व्यापारी वर्ग को साझेदारी में सावधानी रखनी चाहिए। कृषक वर्ग समय का ध्यान देकर कार्य करें। नौकरी वर्ग वालों को अधिकारियों की अप्रसन्नता विद्यार्थी वर्ग को कठिन यत्न करने पर सफलता। दिनाँक 2, 4, 8, 13, 17, 26 अशुभ हैं।
अगस्त–2018	मास का पूर्वार्द्ध पारिवारिक चिंतादायक है। अपनी कही गई बातों का गलत प्रभाव होगा। शांत रहना अधिक श्रेयस्कर है। राज्य अथवा कर्मपक्ष से संतोष रहेगा। पुराने व्यवधान दूर होंगे। उत्तरार्द्ध में आर्थिक लाभ होगा। साझेदारी के कार्य में संतोष मिलेगा किसी प्रिय व्यक्ति से भेंट होगी। व्यापारी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयाँ अधिक रहेंगी। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर लाभ एवं सुविधाएं मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 12, 18, 21 तारीखों शुभ हैं।	मास उत्तम रहेगा। अपने प्रयास सफलतादायक रहेंगे। व्यर्थ की चिंताओं में कमी आएगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अनावश्यक यात्राओं को टालें। मास के उत्तरार्द्ध में शत्रुओं की कमी, विरोध में कमी आती हुई प्रतीत होगी। व्यर्थ खर्च की अधिकता रहेगी। व्यापारी वर्ग को उत्तरोत्तर सुधार, कृषक वर्ग को आर्थिक परेशानियाँ, नौकरी वर्ग को अधिक व्यवस्तता तथा जिम्मेदारी पूर्ण, विद्यार्थी वर्ग को सावधानी अधिक रखना चाहिए। मास की 3, 7, 11, 16, 19, 24, 29 दि. कमजोर है शेष अनुकूल।	मास के पूर्वार्द्ध में आशातीत सफलताएं मिलेंगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से बाधाएं दूर होंगी। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में मानसिक चिंताएं कम होंगी। नए कार्य की योजना क्रियान्वित होंगी तथा इससे आवश्यक सहयोग भी मिलेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रयास से धनलाभ, व्यर्थ के तनाव। व्यय की अधिकता रहेगी, कृषक वर्ग को कार्य में रुकावटें, नौकरी वर्ग वालों को पिछली रुकावटें दूर होकर मन की प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता। मास की तारीख 1, 3, 9, 11, 21, 27 प्रतिकूल हैं।
सितंबर–2018	मास के प्रथम दो सप्ताह अनुकूल परिस्थितियों वाले हैं। व्यर्थ के तनाव दूर होंगे। स्वास्थ्य हेतु सतर्क रहें, उदर एवं सिर रोग रहेंगे। मास के उत्तरार्द्ध में असंतोष अपने मित्रों में अविश्वास एवं नुकसान संभव है। अधिक दौड़धूप होगी। कुछ कार्यों में आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को साझेदारी के कार्य में कोई नई योजना बनाने के अवसर मिलेंगे। कृषक वर्ग को अपने श्रम का उचित लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग वालों को कार्य की सराहना एवं प्रगति के योग बनेंगे। विद्यार्थी वर्ग को स्थाईत्व और संतोष। मास की दि. 3,4,6,8,10,14,22,28 नेष्ट।	मास का पूर्वार्द्ध शुभफलदायक है। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि स्वास्थ्य लाभ तथा अपने उत्साह में वृद्धि होगी। इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी। मास के उत्तरार्द्ध में शुभकार्यों में व्यस्तता राजकीय सफलता, पदलाभ एवं शुभ समाचार से मन में प्रसन्नता रहेगी। अधिक व्यस्तता से स्वास्थ्य में खराबी रहेगी। व्यापारी वर्ग को अधिक यत्न से लाभ। व्यर्थ दौड़-धूप अधिक। कृषक वर्ग के उत्पादन का लाभ उत्तम, नौकरी वालों को अधिक व्यवस्तता तथा चिंताएं। विद्यार्थी वर्ग को अपने लिए अनुकूलताएँ। मास में 2, 8, 16, 17, 24 अशुभ हैं।	मास का पूर्वार्द्ध अधिक दौड़-धूप तथा मेहनत से पूर्ण रहेंगे। किन्तु उसी अनुपात में लाभ भी मिलेगा। वांछित सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में अधिक व्यस्तता रहेगी। समय पर लाभ प्राप्ति तथा कार्यों में रुचि जाग्रत होगी। व्यर्थ की समस्याएं कम होंगी। यात्रा में सतर्कता बरतें। व्यापारी वर्ग को व्यापार में नए अवसर मिलेंगे कृषक वर्ग को अधिक व्यस्तता और कार्य बोझ रहेगा। नौकरी करने वालों को कार्य में सावधानी बरतनी चाहिए। विद्यार्थियों को मित्रों की परामर्श के स्थान पर स्वविवेक से काम लेना चाहिए। मास में दिनाँक 1, 3, 4, 8, 11, 19, 21 नेष्ट हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्यफल (जुलाई से सितंबर 2018)

● पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
● पं. विनोद जोशी
● पं. अरविंद पाण्डेय

	मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)	कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)	मीन (दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)
जुलाई–2018	आपके विरोधी पक्ष कार्यों की सफलता में व्यवधान पैदाकर सकते हैं। अपने आत्मबल से कार्य करें। अपनी दूरदृष्टि पूर्ण कार्य करने की क्षमता से सफलता प्राप्त होगी। किसी के भरोसे में रहकर कार्य करने में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वर्ग सावधानी से कार्य करें। व्यापारी वर्ग को अधिक उधारी में व्यापार महँगा पड़ेगा। नौकरी वर्ग को अस्थिरता, परिवर्तन के कारण मानसिक तनाव रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। कृषक वर्ग सजगता से कार्य करने पर लाभ ले सकेंगे। 5, 7, 8, 17, 19, 24, 26 एवं 27 तारीखों में सावधानी बरतें।	अपनी सफलताओं तथा आर्थिक लाभ को दृष्टिगत रखते हुए विरोधी बढ़ेंगे। अनावश्यक कार्यों में अपना समय व्यय नहीं करें। राजपक्ष से तनाव और विवाद रह सकता है। परिवार के सदस्यों से वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आर्थिक पक्ष में सुधार मास के अंत तक आ सकेगा। संयुक्त परिवार के कार्यदायित्व बढ़ेंगे। नौकरी वर्ग को अधिक यत्न करना होगा। दौड़धूप अधिक होगा। व्यापारी वर्ग को व्यवसाय में आवश्यक आर्थिक लाभ में कमी। कृषक वर्ग को अपनी कृषि उत्पादन से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग मित्रों में व्यर्थभ्रमण हो सकता है, इस पर ध्यान रखें। 7, 9, 11, 13, 17, 23, 26 एवं 27 अरिष्ट हैं।	अपने कार्यदायित्वों में व्यस्तता रहेगी। कड़ी मेहनत से सफलता के नजदीक रहेंगे। अपने कार्यदायित्वों को किसी अन्य को सौंपने से आर्थिक कष्ट संभव है। व्यर्थ के दोषारोपण भी हो सकते हैं। अपने प्रिय व्यक्तियों के स्वभाव से मन में क्षोभ अर्थात् दुःख हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पत्नी के सुझावों को ध्यान रखें सफलतादायक रहेगा। नौकरी वर्ग वालों को राहत रहेगी। भ्रमण योग भी हैं। व्यापारी वर्ग के लिए लाभप्रद समय है, कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलने में संदेह रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूलता रहेगी। लेकिन दिनाँक 5, 12, 13, 15, 22, 23, 25 एवं 31 अशुभ हैं।
अगस्त–2018	यह मास अपनी आर्थिक चिंताओं के कारण परेशानियों से आरंभ होगा। चिंताएं अपने स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, सर्दी, पेटदर्द तथा गैस के विकार रह सकते हैं। मित्रों के व्यवहार से मन में दुःख महसूस होगा। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी वर्ग वालों को अधिक मेहनत से सफलता व्यापारी वर्ग को, अपने व्यवसाय में साझेदारी है तो सावधानी बरतनी चाहिए, व्यर्थ विवाद न हो ध्यान रखें। कृषक वर्ग को समय पर कार्य नहीं करने पर नुकसान संभव है। विद्यार्थी वर्ग को मित्रों में व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च से सावधानी रखनी चाहिए। तारीख 4, 9, 10, 11, 17, 18, 20, 23, 28, 30 कमजोर हैं।	अपने कर्म पक्ष की चिंताएं बढ़ेंगी, यदि विलंब किया तो आर्थिक कष्ट होना संभव है। समय पर कार्यों को नियंत्रण करने की व्यवस्था करें। प्रतिद्वंदी का षड्यंत्र के शिकार हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों में भी ध्यान दें, संतान की प्रगति में बाधाएं नहीं आएं यह ध्यान रखें। नौकरी वर्गवालों के लिए यह माह अधिक ध्यान देकर कार्य करने का है, किसी त्रुटि का अपने केरियर पर असर हो सकता है। व्यापारी वर्ग को अपने प्रतिद्वंदी के कारण मुनाफे में कमी रह सकती है। कृषक वर्ग को अपने उत्पादकों को संग्रह करने में सावधानी रखनी चाहिए, विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगिताओं में सफलता मिल सकती है। तारीख 6, 9, 14, 19, 22 एवं 30 अशुभ हैं।	अधिक व्यस्तताओं तथा भाग-दौड़ से कार्य करने का महीना रहेगा। यह इसलिए भी कि कुछ पुराने अटके हुए कार्यों में अपनी मनचाही सफलता का समय आरंभ हुआ। लेकिन अधिक शीघ्रता के कारण कोई नई गलती नहीं कर बैठे जिससे कि अपने स्वास्थ्य और पारिवारिक आर्थिक स्थिति पर विपरीत असर हो। नौकरी वर्ग अपने कार्यों में मापदण्डों का ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग नए कार्यों के आरंभ के पूर्व पुर्नविचार करें। कृषक वर्ग के लिए अनुकूलता रहेगी, व्यवस्तता भी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए। तारीख 4, 5, 7, 11, 12, 14, 21, 22 एवं 29 में सतर्कता बरतें।
सितंबर–2018	मास के आरंभ में संतान की प्रगति के लिए ध्यान देना होगा। माह में आय एवं व्यय बराबर रहेंगे इस प्रकार माह मिले जुले फलवाला रहेगा। आत्मबल बढ़ेगा। अपनी कार्य क्षमता बढ़ेगी। पारिवारिक सुख मिलेगा। अपने रोजगार में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ के अवसर बढ़ेंगे। नौकरी वर्ग वाले को सजगता से कार्य करने पर सराहना होने से संतोष मिलेगा। व्यापारी वर्ग को उत्साहवृद्धि के साथ आर्थिक लाभ बढ़ेगा। नए कार्य की शुरुवात होगी। कृषक वर्ग को उत्पादन से लाभ तथा विद्यार्थी वर्ग को संतोष रहेगा। दिनाँक 4, 8, 13, 22, 27 एवं 29 को सतर्कता बरतें।	माह में पारिवारिक चिंताएं रहेंगी। संतान पक्ष की चिंताएं रहेंगी। धार्मिक कार्यों में आस्थाएं बढ़ेंगी। भ्रमण की अधिकता रहेगी। कार्यों में वांछित सफलता से मन में हर्ष रहेगा। दांप्त्य जीवन उत्तम रहेगा। अपना सामाजिक यश बढ़ेगा। नौकरी वर्ग वालों को अपने कार्य से संतोष मिलेगा। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य का यश एवं फल मिलेगा। आर्थिक लाभ के अवसर बढ़ेंगे। कृषक वर्ग को अपने कृषि कार्य से वांछित लाभ प्राप्ति होगी। विद्यार्थी वर्ग को समय के सदुपयोग करते हुए इच्छित सफलता से मन में संतोष रहेगा। दिनाँक 6, 7, 9, 13, 17, 19 एवं 23 अशुभ दिवस हैं।	यह माह आपके लिए सफलताएं तथा कार्य करने की नई सोच लेकर आया है। पिछली चिंताएं छोड़कर नई योजना को क्रियान्वित करने के लिए प्रयास आरंभ कर दें। यदि स्वास्थ्य में पहले कोई समस्या रही तो अब स्वस्थ्य होने का समय है। पारिवारिक सुख के लिए भी माह शुभ है। सुखदायक यात्रा भी माह शुभ है। सुखदायक यात्रा भी होगी। नौकरी वर्ग के लिए समय अनुकूल हैं। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में थोड़ी कठिनाई होगी लेकिन लाभ के योग हैं। कृषकों को समय अच्छा लगेगा। विद्यार्थी वर्ग को भ्रमण तथा आर्थिक चिंताएं रहेंगी। तारीख 2, 9, 10, 11, 16, 19, 21, 27 एवं 29 कमजोर हैं।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
(जुलाई 2018 से सितंबर 2018)
जुलाई 2018

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

जुलाई 2018 के व्रत पर्व

1 जुलाई, रविवार	संकष्टी चतुर्थी व्रत
6 जुलाई, शुक्रवार	कालाष्टमी
9 जुलाई, सोमवार	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णवों), संत देवरहवा बाबा की पुण्यतिथि
10 जुलाई, मंगलवार	भौम प्रदोष व्रत
11 जुलाई, बुधवार	मास शिवरात्री व्रत
12 जुलाई, गुरुवार	श्राद्ध की अमावस्या
13 जुलाई, शुक्रवार	आषाढ़ शुक्लपक्ष आरंभ
14 जुलाई, शनिवार	बलराम, सुभद्रा, जगदीश रथोत्सव
16 जुलाई, सोमवार	वैनायकी चतुर्थी व्रत, सूर्य की कर्क संक्रान्ति, सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
18 जुलाई, बुधवार	स्कन्द षष्ठी, कन्दर्भ षष्ठी
19 जुलाई, गुरुवार	रवि सप्तमी
20 जुलाई, शुक्रवार	दुर्गाष्टमी, परशुराम अष्टमी
21 जुलाई, शनिवार	कन्दर्प नवमी, भड्डली नवमी
22 जुलाई, रविवार	आशादशमी
23 जुलाई, सोमवार	हरिशयनी एकादशी व्रत
24 जुलाई, मंगलवार	वामनपूजा, वामनद्वादशी
25 जुलाई, बुधवार	प्रदोष व्रत, शिवशयन चतुर्दशी व्रत
26 जुलाई, गुरुवार	चौमासी चौदस (जैन)
27 जुलाई, शुक्रवार	व्यास पूर्णिमा/गुरु पूर्णिमा व्रत/खग्रास चन्द्रग्रहण
28 जुलाई, शनिवार	श्रावण मास आरंभ
31 जुलाई, मंगलवार	संकष्टी चतुर्थी व्रत, कज्जली तृतीया

शुभ मुहूर्त जुलाई 2018

1 जुलाई, रविवार	अक्षरारंभ, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण (सवेरे 9:15 से 12:05)
2 जुलाई, सोमवार	वधू प्रवेश, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, मुण्डन, (सवेरे 9 से 10 एवं सायं 6:30 से 8)
3 जुलाई, मंगलवार	खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11:30 से 13:30)
5 जुलाई, गुरुवार	वधू प्रवेश, प्रसूतिका स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, बीज बोना, खेत जोतना, देव प्रतिष्ठा, कूपारंभ, जलाशय निर्माण (दिन में 12:41 से 13:30 सांय 6:30 से 18:30)
6 जुलाई, शुक्रवार	वधू प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना बीज बोना, खेत जोतना (सूर्योदय से सवेरे 10:30)
7 जुलाई, शनिवार	गृहप्रवेश (दिन में 13:30 से 16:30)
8 जुलाई, रविवार	प्रसूति का स्नान, अक्षारंभ, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 9:15 से 12:10)
10 जुलाई, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11:15 से 13:15)
11 जुलाई, बुधवार	जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन, गृहप्रवेश, कूपारंभ, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (सूर्योदय से सवेरे 9:15 एवं 10:30 से 12:05)
13 जुलाई, शुक्रवार	उद्यान लगाना (सवेरे 10:30 से 11:30)
14 जुलाई, शनिवार	जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा (सवेरे 7:30 से 9:15 एवं दिन में 13:30 से 16:30)
15 जुलाई, रविवार	अक्षरारंभ, विद्याध्ययन, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना (सवेरे 9:15 से दिन में 12:15)
17 जुलाई, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11:30 से 13:30)
18 जुलाई, बुधवार	जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन, गृहप्रवेश, कूपारंभ, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण (सूर्योदय से सवेरे 9:15 एवं सायं 15:30 से 18:30)
19 जुलाई, गुरुवार	वधू प्रवेश, प्रसूतिका स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, कूपारंभ, जलाशय निर्माण, गृहप्रवेश (सूर्योदय से सवेरे 7:30 तक एवं दिन में 12 से 12:05)
20 जुलाई, शुक्रवार	वधू प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10:35)
22 जुलाई, रविवार	प्रसूतिका स्नान (सवेरे 9 से दिन में 11:30)
23 जुलाई, सोमवार	जातकर्म, नामकरण, कर्णछेदन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9 से दिन में 10:15)
25 जुलाई, बुधवार	खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 9:15 के बीच आरंभ)
26 जुलाई, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान (सूर्योदय से सवेरे 8:15 के बीच)
27 जुलाई, शुक्रवार	अन्नप्राशन, कूपारंभ, जलाशय निर्माण, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 12:33 से दिन में 13:35)
29 जुलाई, रविवार	अक्षरारंभ, विद्याध्ययन (सवेरे 9 से 11:50)
30 जुलाई, सोमवार	जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौलकर्म, मुण्डन, गृहारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10:20 के बीच)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त (जुलाई 2018 से सितंबर 2018)

अगस्त 2018

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

अगस्त 2018 के व्रत पर्व

2 अगस्त, गुरुवार	नागपंचमी (मरुस्थल, बंगाल)
4 अगस्त, शनिवार	केर पूजा, शीतलाष्टमी
5 अगस्त, रविवार	कालाष्टमी
6 अगस्त, सोमवार	श्रावण सोमवार व्रत
7 अगस्त, मंगलवार	कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त)
8 अगस्त, बुधवार	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव)
9 अगस्त, गुरुवार	प्रदोष व्रत
11 अगस्त, शनिवार	स्नानदान श्राद्ध अमावस्या/हरियाली अमावस्या
12 अगस्त, रविवार	श्रावण शुक्लपक्ष आरंभ
13 अगस्त, सोमवार	हरियाली तीज, मधुश्रवा तृतीया
14 अगस्त, मंगलवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत/वरद चतुर्थी
15 अगस्त, बुधवार	नाग पंचमी पर्व
16 अगस्त, गुरुवार	कल्कि जयन्ती
17 अगस्त, शुक्रवार	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
18 अगस्त, शनिवार	दुर्गाष्टमी, वरद् मां लक्ष्मी व्रत
19 अगस्त, रविवार	श्री हरि जयन्ती
20 अगस्त, सोमवार	श्रावण सोमवार व्रत
22 अगस्त, बुधवार	पुत्रदा एकादशी व्रत/पवित्रा एकादशी
23 अगस्त, गुरुवार	प्रदोष व्रत
24 अगस्त, शुक्रवार	ओनम डे (केरल)
25 अगस्त, शनिवार	हयग्रीव जयन्ती
26 अगस्त, रविवार	स्नानदान व्रतादि की पूर्णिमा, रक्षाबन्धन पर्व
27 अगस्त, सोमवार	भाद्रपद कृष्णपक्ष आरंभ
28 अगस्त, मंगलवार	कज्जली तृतीया
30 अगस्त, गुरुवार	संकष्टी गणेश चतुर्थी
31 अगस्त, शुक्रवार	चंद्र षष्ठी

शुभ मुहूर्त अगस्त 2018

1 अगस्त, बुधवार	नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, गृहारंभ (सूर्योदय से सवेरे 9:30 के बीच)
2 अगस्त, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, बीज बोना (दिन में 12:00 से 13:35 के बीच)
3 अगस्त, शुक्रवार	नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10:35 के बीच)
6 अगस्त, सोमवार	अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, गृहारंभ (सवेरे 9:15 से 10:30)
7 अगस्त, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11:30 से 13:30)
8 अगस्त, बुधवार	नामकरण, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10:30 से 12:15 के बीच)
9 अगस्त, गुरुवार	अन्नप्राशन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12:05 से 13:35)
13 अगस्त, सोमवार	नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, गृहारंभ (सूर्योदय से सवेरे 10:35 के बीच)
14 अगस्त, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान (दिन में 11 से 13:15 के बीच)
15 अगस्त, बुधवार	नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, गृहारंभ (सूर्योदय से सवेरे 9:15 से दिन में 15:30 से 18:30)
16 अगस्त, गुरुवार	नामकरण (दिन में 12 से 13:30)
17 अगस्त, शुक्रवार	अन्नप्राशन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10:30 के बीच)
21 अगस्त, मंगलवार	खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11:30 से 12:30 के बीच आरंभ)
23 अगस्त, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, बीज बोना, गृहारंभ, नवीन व्यापार (दिन में 12:15 से 13:30 सायं 16:35 से 18:30 के बीच आरंभ)
24 अगस्त, शुक्रवार	नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, कूपारंभ, जलाशय निर्माण, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10:30 के बीच)
25 अगस्त, शनिवार	गृहारंभ (भूमिपूजन) (सवेरे 7:35 से 9:15 एवं दिन में 13:30 से 15:16 के बीच)
27 अगस्त, सोमवार	नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, गृहारंभ (भूमिपूजन) (सवेरे 9:15 से दिन में 10:35)
28 अगस्त, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान (दिन में 11:30 से 13:30 तक)
29 अगस्त, बुधवार	नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, कूपारंभ, जलाशय खनन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 9:12 के बीच आरंभ)
30 अगस्त, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान (दिन में 12:15 से 13:30 तक)
31 अगस्त, शुक्रवार	अन्नप्राशन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10:30 के बीच आरंभ)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त (जुलाई 2018 से सितंबर 2018)

सितंबर 2018

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

सितंबर 2018 के व्रत पर्व

1	सितंबर, शनिवार	हलषष्ठी (हर छठ) ललही छठ
2	सितंबर, रविवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)
3	सितंबर, सोमवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)
4	सितंबर, मंगलवार	गोकुल नवमी
5	सितंबर, बुधवार	शिक्षक दिवस
6	सितंबर, गुरुवार	अजा एकादशी व्रत, पर्युषण पर्व, चतुर्थी पक्ष (जैन)
7	सितंबर, शुक्रवार	प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व (पंचमी पक्ष) जैन
8	सितंबर, शनिवार	मास शिवरात्री
9	सितंबर, रविवार	स्नानदान, श्राद्ध की अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या
10	सितंबर, सोमवार	भाद्रपद शुक्ल पक्ष आरंभ
11	सितंबर, मंगलवार	सामवेदी उपाकर्म
12	सितंबर, बुधवार	वाराह जयन्ती, हरितालिका तीज
13	सितंबर, गुरुवार	वैनायक गणेश चतुर्थी व्रत
14	सितंबर, शुक्रवार	ऋषि पंचमी व्रत
15	सितंबर, शनिवार	सूर्यषष्ठी, लोलार्कषष्ठी
16	सितंबर, रविवार	मुक्ताभरण सप्तमी
17	सितंबर, सोमवार	श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीदधिचि जयन्ती
18	सितंबर, मंगलवार	अदुखनवमी, नन्दानवमी
19	सितंबर, बुधवार	दशावतार व्रत
20	सितंबर, गुरुवार	पद्मा एकादशी व्रत, (स्मार्त एवं वैष्णव), डोल ग्यारस, जल झूलनी एकादशी
21	सितंबर, शुक्रवार	वामन जयन्ती, भुवनेश्वरी जयन्ती
22	सितंबर, शनिवार	शनि प्रदोष व्रत
23	सितंबर, रविवार	अनन्त चतुर्दशी व्रत
24	सितंबर, सोमवार	महालयारंभ, मातामह श्राद्ध
25	सितंबर, मंगलवार	स्नानदान की पूर्णिमा, प्रतिपदा श्राद्ध
26	सितंबर, बुधवार	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारंभ, द्वितीया श्राद्ध
27	सितंबर, गुरुवार	तृतीया तिथि श्राद्ध
28	सितंबर, शुक्रवार	संकष्ठी चतुर्थी व्रत, चतुर्थी तिथि श्राद्ध
29	सितंबर, शनिवार	पंचमी तिथि श्राद्ध
30	सितंबर, रविवार	षष्ठी तिथि श्राद्ध

शुभ मुहूर्त सितंबर 2018

3	सितंबर, सोमवार	खेत जोतना, बीज बोना, (सवेरे 9 से 10:15)
4	सितंबर, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान (दिन में 11:30 से 13:30)
6	सितंबर, गुरुवार	जलाशय खनन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12 बजे से 13:30 तक)
7	सितंबर, शुक्रवार	अन्नप्राशन, जलाशय खनन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10:30 के बीच)
10	सितंबर, सोमवार	नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9:15 से 10:15 के बीच)
11	सितंबर, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10:30 से 11:30 तक)
12	सितंबर, बुधवार	जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 9:15 एवं दिन में 15:10 से 18:10)
13	सितंबर, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12:05 से 13:35 तक)
14	सितंबर, शुक्रवार	खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10:30)
17	सितंबर, सोमवार	खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9:15 से 10:15)
19	सितंबर, बुधवार	जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जलाशय खनन, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 9:15 तक एवं दिन में 15:30 से 18:30 तक)
20	सितंबर, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान, जातकर्म, नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से दिन में 11:15 तक)
21	सितंबर, शुक्रवार	जातकर्म, नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10:30)
25	सितंबर, मंगलवार	प्रसूतिका स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 10:30 से से 11:30 तक)
26	सितंबर, बुधवार	जातकर्म, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12:15 से 13:35)
27	सितंबर, गुरुवार	प्रसूतिका स्नान (दिन में 12:15 से 13:35)
30	सितंबर, रविवार	प्रसूतिका स्नान (सवेरे 9:15 से 11:30)

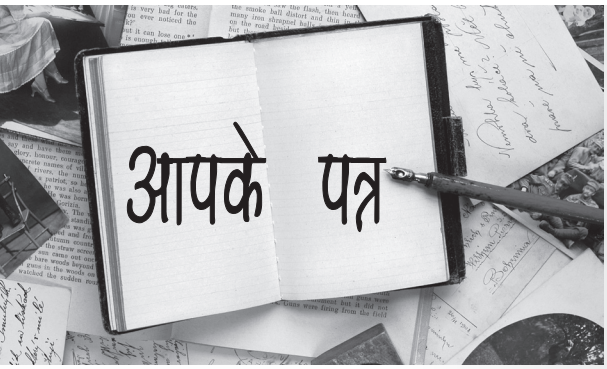

प्रतिक्रियाएं

◈ ◈ ◈

श्रद्धेय पाण्डेय जी,

जीवन वैभव पत्रिका आरंभ होने के बाद से अभी तक मुझे मेरे घर के पते प्राप्त होती रही है इसके कलेवर में निरंतर परिवर्तन से मन को बहुत प्रसन्नता होती है। एक दृढ़ संकल्पवाला, व्यक्तित्व, मानवीय मूल्यों को साकार करने का उद्देश्य, सुसंस्कारवान और नैतिकता की शिक्षा प्रदान करने वाला साहित्य का संकलन, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नए ओर उत्तम आलेख जो कि आहार के संतुलन रखने से ही अच्छे स्वास्थ्य की व्यवस्था करते हैं, ज्योतिष के सरल भाषा में तथा उत्तम भावपूर्ण आलेख का संपादन करने वाला व्यक्तित्व का नाम ही इस पत्रिका का संपादक डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय है। यह व्यक्तित्व शिशु काल से ही मेरे परिचय में रहा है जिसके पिता पं. रामचन्द्र जी पाण्डेय जो कि इस 'जीवन वैभव' के संस्थापक संपादक रहे हैं, परिवार के संस्कार ही एक संस्कारवान व्यक्तित्व को जन्म देते हैं, सुसंस्कारित होने के कारण ही गोरधनपुरा ग्राम से भोपाल में जाकर अपनी ज्ञान गरिमा को विकसित करके अपनी सुसंस्कारित सुमन की सौरभ समाज को प्रदान करने का महती कार्य किया जा रहा है। इस सत्कार्य के लिए मेरी ओर से पूरे 'जीवन वैभव' परिवार को बधाई और संपादक के रूप से इस उत्तम साहित्य का संपादन शतायु होकर करते रहें, यही मेरी अतःकरण की आत्मा ईश्वर से कामना करती है।

कन्हैयालाल शर्मा
पेंशनर शिक्षक, मु.पो. बसई, जिला- मंदसौर (म.प्र.)

आदरणीय संपादक महोदय,

जीवन वैभव पत्रिका देखने को मिली। यह पत्रिका ज्ञानवर्द्धक है। समय के अनुसार सभी आवश्यक अपने जीवन में काम आने वाली पाठ्यसामग्री समाहित की गई है वास्तव में इसको पढ़ने से जीवन में वैभव संपन्नता अपने मनस्थिति में प्राप्त की जा सकती है। सामग्री का चयन उत्तम तरीके से किया गया है।

एस.के. शर्मा, 48, भवानी नगर, इंद्रपुरी, बीएचईएल, भोपाल

◈ ◈ ◈

श्रीमान् पाण्डेय जी,

प्रणाम। जीवन वैभव पत्रिका ज्ञानवर्द्धक एवं वास्तव में पूरे परिवार के लिए उपयोगी पठनसामग्री की एक अनूठी पत्रिका है इसके नियमित पाठन से व्यक्ति के जीवन में कार्य करने की ललक और धनात्मक सोच जाग्रत होती है, पाठकों को पत्रिका समय पर मिले इसका ध्यान रखना जरूरी है।

चांदमल जैन, जावरा, जिला-रतलाम

◈ ◈ ◈

श्रद्धेय श्री हेमचंद्र पाण्डेय जी,

जीवन वैभव पत्रिका का मैं नियमित आजीवन सदस्य हूँ। जीवन वैभव के प्रत्येक अंक में कुछ नवीनता रहती है, पाठ्य-सामग्री का चयन भी उत्तम है जिससे पूरे परिवार में पठनीय है। जीवन वैभव के सभी अंक संग्रहणीय हैं एवं बारंबार पढ़कर मनन करने योग्य उत्कृष्ट ज्ञान का भण्डार हैं इस पत्रिका के संपादन के लिए आपको बहुत-बहुत साधुवाद।

महेन्द्र सक्सेना, डी.के. डॉयमण्ड, कोलार रोड, भोपाल

◈ ◈ ◈

!! सभी पाठकों को जीवन वैभव के बारे में प्रतिक्रिया प्रदाय करने का आभार, अभिनन्दन एवं धन्यवाद!!

श्री कन्हैयालाल जी शर्मा बसई, जिला मंदसौर द्वारा प्रेषित प्रतिक्रिया में संपादक की हैसियत से मेरा उल्लेख करते हुए जीवन वैभव को ऊँचाइयों तक जाने का उल्लेख किया है, इसके लिए आपका सादर आभार, आपके द्वारा मेरे जीवन में आने वाले प्रत्येक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तन की जानकारी का उल्लेख वाट्सएप्प के आधार पर पत्र में दिया गया है। श्रीमद्भगवद गीता में सात्विक कर्म का उल्लेख किया गय है उसी को अपने जीवन में अनुसरण करने का मुझे इस पत्रिका के संस्थापक संपादक का मार्गदर्शन मिलता रहा है स्वार्थरहित ज्ञानयज्ञ करना भी सात्विक कार्य की श्रेणी में आता है जिसका सभी पाठकबंधुओं का इस प्रकाशन के लिए प्रतिक्रियाओं के द्वारा केवल मुझे ही नहीं पूरे संपादक मण्डल के मनोबल को बढ़ाता है तथा इसी मनोबल के द्वारा जीवनवैभव अपने 32वें वर्ष में ज्ञानयज्ञ में लोकप्रिय हुई है। यह आप जैसे पाठक और जीवन वैभव के परिवारवत् जुड़े सदस्यों का हृदय से सहयोग है।

जीवन वैभव परिवार के सभी नियमित सदस्यों, पाठकों का सादर अभिवादन।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय (संपादक)

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक, अरेरा कालोनी, शाखा भोपाल के जीवन वैभव खाता क्रमांक 50159870448 में जमा करते हुए बैंक की जमा पर्ची (स्लिप) सदस्यता आवेदन पत्र के साथ प्रेषित कर दें। यदि इलाहाबाद बैंक के अतिरिक्त अन्य बैंक से शुल्क जमा कराये जाने की स्थिति में एन.ई.एफ.टी. (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) माध्यम से निम्नानुसार शुल्क जमा कराएं –

खाता क्रमांक	:	50159870448
खाते का नाम	:	जीवन वैभव
आय.एफ.एस.सी. कोड	:	ALLA 0210197

यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका प्राप्त करना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क पृथक से सदस्यता की राशि के साथ जोड़कर प्रेषित कर दें। अन्यथा साधारण डाक से पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्कः 9425008662; **ईमेलः** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी रायः-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पताः

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्कः 9425008662

ईमेलः hcp2002@gmail.com

नोटः उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

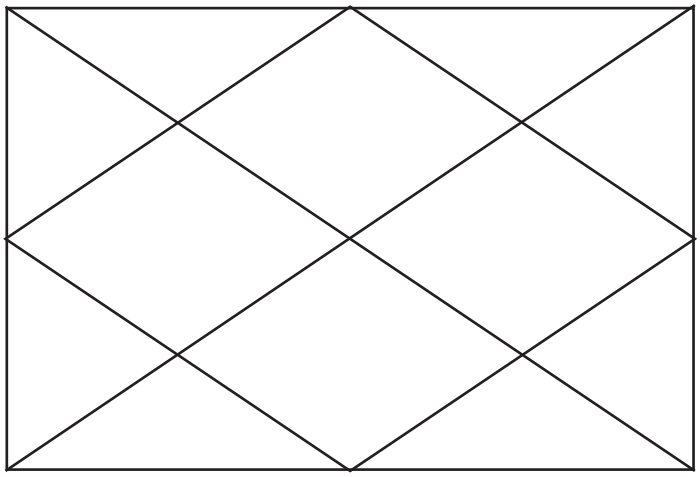

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

नोटः जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है इस अंक से हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द पाण्डेय

निःशुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...
पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-।, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com